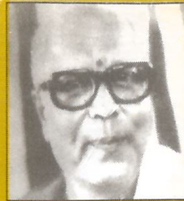
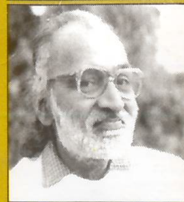
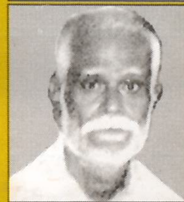
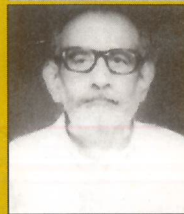
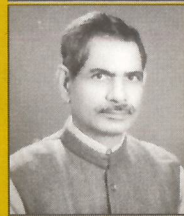
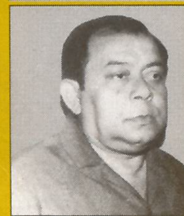




संवाद

(6)

सम्पादक

अशोक

लोकवेद प्रकाशन-3

प्रकाशक
लोकवेद
शान्तिनिकेतन, शिवपुरी
पटना-800023

प्रथम संस्करण-2007
प्रति - तीन सय

मुद्रक
सरस्वती प्रेस
गोरखनाथ कम्पाउण्ड, बोरिंग केनाल रोड, पटना

मूल्य - एक सय टाका

SAMVĀDA
Edited by Ashok Rs. 100/-

बेगरता संवादक

भाषा आ साहित्य संवाद आ सम्बोधन थिक। ई बात बहुतो गोटे कहैत छथि। संवाद ओ सम्बोधन लेल दोसर व्यक्तिक प्रयोजन होइत अछि। अपनेसँ गप करब एकालाप होयत। वार्त्तालाप नहि। एकालापसँ वार्त्तालापक प्रयोजन सिद्ध नहि भ' सकैत अछि। वार्त्तालाप लेल दोसर, तेसर व्यक्ति चाहबे करी। एकसँ बेसी लोकक प्रयोजन अहाँके समाजक बीच ल' जाइत अछि। जँ अहाँ बूझैत छी जे अहाँके समाजक कोनो प्रयोजन नहि अछि त' अहाँ निठ्ठाह भ्रम मे जीबै छी। अहाँके भाषा आ साहित्य सामाजिक बनबैत अछि। एहीठाम भाषा आ साहित्य स्वत: सामाजिक भ' जाइत अछि। समाजसँ बाहर ओकर कोनो अस्तित्व नहि, प्रयोजन नहि।

संवाद सन्देश सेहो होइत अछि। एहि लेल मैथिली मे समाद शब्द अछि। समाद लेल दोसर व्यक्ति चाही। जकरा समाद कहल जा सकय। ई समाद वस्तुत: तेसर व्यक्ति लेल अछि। दोसर व्यक्ति खाली समादक माध्यम हेता। समाद हुनकर उपयोग लेल नहि छनि। तेँ समादसँ हमरा लोकनिकेँ साहित्यिक संवादक अभीष्ट प्राप्ति नहि भ' सकैत अछि। संवादमे जे अर्थव्याप्ति अछि, व्यापकता अछि, से समादसँ पूरा नहि होइत अछि। सर्वप्रथम त' एक-दोसर सँ गपसप लेल, वार्त्तालाप लेल, सम्पर्क, सान्निध्य लेल संवाद जरूरी अछि। फेर, एक-दू-तीन होइत बहुत गोटेक संग संवाद कायम करब आवश्यक। समाजसँ, लोकसँ समदियाक माध्यमे गप करबसँ नीक अछि सोझे गप करब, प्रत्यक्ष संवाद करब। एस. एम. एस. क एहि युग मे त' संवादक प्रयोजन आर बढ़ि गेल अछि। संवाद सुविधाजनक भ' गेल अछि। तकनीकी सुविधोक उपयोग आब क' सकैत छी। मुदा समादे दही पहिनहुँ नहि जमैत छल। आब आरो कठिन। तहिना वार्त्ता लैयो लेलासँ संवादक खगता बनले रहैत अछि। तेँ गपसप, वार्त्तालाप, संवाद जरूरी।

मैथिलीक विभिन्न मान्य कथाकार, आलोचक संग भेल एहि संवाद के सन्धान पत्रिकामे प्रकाशित कयल गेल छल। साकेतानन्दक उपन्यास सर्वस्वांत पर मोहन भारद्वाजक संग संवाद घर-बाहरमे निकलल रहय। प्रभास कुमार चौधरीक संग संवाद नहि भ' सकल। ओ बिना संवादे के शरीर छोड़ि देलनि। ताहि दुख के सार्वजनिक करब जरूरी मानि ओहि प्रश्ने सभकेँ सधान-3 मे प्रकाशित कयल गेल। प्रभासजीक शरीर ने छूटि गेलनि हुनकर रचना त' हमरा सभ लग अछि। ओहि

रचना पर आधारित संवाद लेल केवल प्रभासेजी पर कियैक आश्रित रहल जाय? हुनकर रचनामे निहित वस्तुतथ्यक आधार पर एक-दोसरासँ अथवा बहुतो गोटासँ त' संवाद कयले जा सकैत अछि। तैं परिशिष्ट मे प्रभासजीकेँ पठाओल गेल प्रश्न, जिज्ञासा सभकेँ पुनः एहि पोथीमे प्रकाशित कयल जा रहल अछि। सन्धान, घर-बाहरमे मुदा एहि संवाद सभकेँ वार्त्ता, अन्तरंगवार्त्ता आदि शीर्षकसँ प्रकाशित कयल गेल छल। आइ हमरा लगैत अछि जे एकरा सभकेँ समेटि क' संवाद कहल जाय। वस्तुतः संवादक खगता बुझलाक बादे एहि पोथीक प्रकाशन हमरा जरूरी बुझायल अछि। ओना कहैत त' छला भाइ मोहन भारद्वाज बहुत दिनसँ जे एकरा सभकेँ पोथीक रुपमे प्रकाशित क रु मुदा हम कान-बात नहि दैत रही। जखन कान-बात देलहुँ आ पोथीक रूपमे सम्पादित-प्रकाशित करबाक निश्चय कयल त' सभ सँ पहिने जत' जत' वार्त्ता आदि पत्रिकामे लिखल छल तकरा पोथीमे संवाद शीर्षक देलहुँ आ अन्ततः पोथियो भ' गेल संवाद। तकरबाद आन कोनो परिवर्तन जरूरी नहि बुझायल। खाली अपन सम्पादकीय टिप्पणीक किछु शब्द बदलल आ टिप्पणी ओ प्रश्न सभक वर्त्तनी बदलबाक मोन भ' गेल। से क' देलियैक। आन सभ किछु यथावत्। पोथीक विभिन्न संवाद लिखित संवाद थिक। तारानन्द वियोगीकेँ छोड़ि आन कियो पूरक प्रश्न नहि केलनि। मुदा सभ लिखित। प्रश्न आ उत्तर लिखित। मायानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजक संग भेल संवाद कहल-लिखल। बिना आशुलिपिक मैथिलीमे डिक्टेशन।

कहल जाइत अछि जे मैथिलीमे जे लेखक छथि सैह पाठको। भले ही ई बात सम्पूर्णतः सत्य नहि हो मुदा जँ लेखकसँ अतिरिक्त पाठककेँ ताकब त' से दृष्टिगोचर नहि हेता। पाठकक उपस्थिति कखनो अनुभवो करब त' से मौखिक टिप्पणी अथवा पत्रिकामे छपल चिट्ठी-पत्री धरि सीमित भेटत। ई पाठक मुदा लेखक-सम्पादकसँ फराको छथि। एहिमे मैथिलीक गतिविधि मे आन तरहेँ संलग्न पाठक सेहो छथि। हिनको मुदा, साहित्यक पाठक रूपमे कोनो संवाद करबाक बेगरता नहि बुझयलनि अछि। लेखकोवर्गक जे लोक छथि से कोनो रचना पढ़ि क' मोने-मोन ओकरा राख' चाहैत छथि। रचनासँ बेसी रचनाकार पर मौखिक टिप्पणीमे बेसी मोन लगैत छनि। रचनाक वस्तुतथ्य पर आधारित विचार-विमर्शकेँ गति देबाक जरूरत नहि बुझैत छथि। रचनाक अभिप्रायकेँ समकालीन दृष्टि ओ सन्दर्भक अनुकूल विवेचनक चेतना जेना अनुभवे नहि करैत छथि। ई सभटा मात्र एहि दुआरे कह' पड़ि रहल अछि जे संवाद लेल कोनो उपक्रम करैत बहुत कमे साहित्यकर्मी भेटैत छथि। लगैत अछि जेना पाठकीय दायित्वकेँ हमरालोकनि पाठक रहियोक' बिसरि रहल छी। इहो कहि सकैत छी जे हम सभ पाठके जेना नहि रहि गेल छी।

हमरालोकनिक दायित्वहीनता मैथिली साहित्यक परिदृश्यमे एक नकारात्मक ओ उत्साहहीन वातावरण बना देलक अछि। हमरासभ पहिने छपाइ-सफाइ के दोष दैत सुनल जाइत छलहुँ। मुदा आब नीकोसँ छपल पोथी अपनाके पढ़ा नहि पबैत अछि। जँ पढ़ा लेलक त' चर्च-बर्च नहि करैत छी।

संक्षेपमे, हमरा लगैत अछि जे हम सभ लेखक चुनि ली। हुनकर सभ रचना पढ़ि जाइ। जँ ओ विभिन्न विधाक रचनाकार छथि आ हुनक कोनो एके विधासँ सम्बन्धित संवाद चाहैत छी त' ओहि विधाक सभ रचना अवश्य पढ़ि लेबाक चाही। मुदा ओहि लेखककेँ समग्रतामे पढ़ि लेलाक बादे ई निर्णय करी कि हुनका संग हुनक सभ विधा पर संवाद करब कि कोनो एके विधा पर। ई सभ एतेक विकछा क' लिखबाक प्रयोजन जे हमरा सभ एके लेखककेँ पहिने सम्पूर्णता मे देखी-पढ़ी। तखन हुनका संग संवाद लेल मोन बनाबी। संवादक प्रश्न सभ तैयार करी। फेर मौखिक (टेपंकित) वा लिखित संवाद शुरू करी। तत्काल हम संवाद-गपसप, वार्त्तालाप लेल कह' चाहब। आउ, हमरालोकनि अपन साहित्यकेँ जानी-बूझी। एहि लेल साहित्यकारलोकनिक संग संवाद करी। मैथिली साहित्यक परिदृश्यमे व्याप्त नकारात्मक, उत्साहहीन वातावरणकेँ तोड़ब आइ सभसँ बेसी जरूरी काज थिक। परिदृश्यमे सार्थक, सकारात्मक ओ उत्साहक वातावरणक निर्माण करब लेखक-पाठकक दायित्व थिक। से बिना संवादे सम्भव नहि। तैं संवादक प्रयोजन एखन गम्भीरतासँ अनुभव कयल जा रहल अछि। ओही प्रयोजनक पूर्ति लेल साकांक्ष होइत डेग उसाहबाक विनम्र प्रयास थिक ई-संवाद। किछु लेखकलोकनिक संग संवाद। एहि क्रममे ई मोन रखबाक थिक जे ई मात्र एक शुरूआत थिक। एहन बहुतो आर कथाकार, आलोचक छथि जिनका संग संवाद जरूरी मानियो क' से सम्भव नहि भ' सकल अछि। एहि पोथीक प्रकाशनमे विलम्बक एक कारण ईहो रहल जे किछु जरूरी कथाकार, आलोचकसँ संवादक पश्चाते हम ई पोथी प्रकाशित कर' चाहैत रही। मुदा अन्ततः एहि तर्कसँ सहमत भेलहुँ जे जतबे भ' सकल अछि एखनधरि, ताहि सँ शुरू त' कयल जाय।

मुदा मैथिली साहित्यक ई संवाद कथे-साहित्य धरि सीमित अछि। वस्तुतः कही त' कथे पर केन्द्रित। ओना कथा आ कथालोचन दूनू संवादक विन्दु बनल अछि। एही संग उपन्यास सर्वस्वांत पर आधारित संवादकेँ एहि पोथीमे सम्मिलित क' नहि केवल कथ्य अपितु शिल्पकेँ विस्तार देबाक आकांक्षा सेहो अकानल जा सकैत अछि। अहू रूपमे ई मात्र आरम्भ। आनो बहुत उपन्यास अछि जे एहि शैली मे समीक्षाक लेल उपयुक्त भ' सकैत अछि।

एहि पोथीक सम्पादनक क्रम मे फेर सँ सभ संवादकेँ पढ़' पड़ल अछि। पढ़बाक क्रममे पहिल अनिभूति त' ई भेल जे वस्तुतः ई संवाद जानल-मानल साहित्यकारलोकनिक संग भेल अछि। से बहुत गम्भीरता आ आपकताक संग। दिमाग आ हृदयक अद्भुत

सम्मिलन एहि मे दृष्टिगोचर होइत अछि। बहुतोठाम जिज्ञासाक जेहेन सटीक ओ फड़िछायल उत्तर भेटल अछि से बहुते खुशी दैत अछि। दोसर अनुभूति ई भेल जे ग्रहणशीलता संवादक लेल जरूरी तत्व थिक। वस्तुत: एअरटाइट दिमाग सँ कोनो संवाद सम्भव नहि भ' सकैत अछि। तेसर, जाहि प्रकारेँ साहित्यकारलोकनि खुलिक' गप्प केलनि अछि से हुनकर रचना आ व्यक्तिकेँ चिन्हबाक-बुझबाक अवसर दैत अछि। रचनाकेँ बुझबाक लेल रचनाकारकेँ चीन्हब त' आवश्यक होइते अछि। चारिम, एहि सम्पूर्ण संवाद मे प्रश्न सभक द्वारा कतहु वितंडा ठाढ़ करबाक, विवाद उत्पन्न करबाक, आक्षेप करबाक कोशिश नहिये जकाँ भेटत। कतहु-कतहु जँ कने टीज करबाक कने चौल करबाक प्रसंग भेटैत अछि त' से संवादमे रोचकता आनि देलक अछि। पाँचम, संवादक माध्यमसँ रचनाकारक सोच-विचार-संवेदना आ व्यक्तित्व सेहो समक्ष अबैत अछि।

कथा-साहित्य पर आधारित एहि संवादमे बहुतो प्रासंगिक विन्दु पर चर्चा भेल अछि। कोनो एक विन्दु पर एके गोटा सँ वाद-विवाद भेटैत अछि। मुदा कोनो एक विन्दु पर कैक गोटासँ चर्चा सेहो कयल गेल अछि। ई चर्चा भले ही कोनो अंतिम निष्कर्ष पर नहि पहुँचल हो विमर्शकेँ आगू बढ़बैत अछि अवश्य। सम्पूर्ण संवाद मे ई अकानल जा सकैत अछि जे कथाक सामाजिक सरोकारकेँ संवाद मे महत्वपूर्ण स्थान देल गेल अछि। वस्तुत: मैथिली कथा समाजसँ सामान्यत: जुड़ल रहल अछि। समाजक जरूरतकेँ सभ दिन, सभ युगमे ध्यान मे राखल गेल अछि। एहि संवाद मे सामाजिक समस्या, समाजक विकास, परम्परा ओ प्रगतिशीलता, आधुनिकता, क्षेत्रीय समस्या, संस्कृति, इतिहास आदिक संग कथाक इतिहास, विकास, प्रवृत्ति, भाषा आ भारतीय कथाक बीच मैथिली कथाक फराक परिचिति कायम करबाक बिन्दु सभ पर चर्चा भेल अछि। रचना-प्रक्रिया पर भेल गप्प सेहो ध्यान देबा योग्य अछि।

एहि पोथी मे सातटा संवाद अछि आ एकटा संवादक खाँहिस। प्रभास कुमार चौधरीक संग संवाद नहि भ' सकल। प्रभासजी उत्तर नहि पठा सकला। मुदा प्रभासजी की उत्तर द' सकैत छला ताहि मादे हुनकर रचनासँ उत्तर पयबाक प्रयत्न त' कयले जा सकैत अछि। तैं एहि दिशामे आगू बढ़बाक लेल पाठकलोकनिकेँ प्रश्न सभ सुनझा रहल छी। ओना सातटा जे संवाद अछि सेहो कोनो अंतिम संवाद नहि थिक। मुदा जतेक दूर बढ़ल अछि ओकर आधार पर संवादकेँ आगू आर बढ़बाक गुंजाइश त' दृष्टिमे अबिते छैक।

अन्तमे फेर, ई संवाद एक आरम्भ थिक। एकरा आरम्भे मानिक' चलबाको चाही।

14.11.07 — अशोक

पटना

अनुक्रम

मायानन्द मिश्रसँ रमण कुमार सिंहक संवाद

मैथिलीमे नारी पर साहित्य नहि लिखल गेल

[साहित्यमे विशेषतः कथा साहित्यमे अपन माटि-पानिक अभिव्यक्ति होमक चाही। कथाकारकें संस्कृति के आभ्यान्तरिकता ओ वाह्यरूप दुनू मे उचित संतुलन बना क' चल' पड़त। आ जखने ई संतुलन रहत तखने ओ भारतक मैथिली कथा कहा सकत।'

मैथिलीक ख्यातनामा कथाकार मायानन्द मिश्र साहित्य, मंच, आन्दोलन सभसँ व्यापक रूपें जुड़ल रहला अछि। उपन्यास, कथा, कविता, गीत आदि अनेक विधामे लेखन कयनिहार माया बाबूक प्रिय विषय मिथिला आ मिथिलाक प्राचीन इतिहास ओ संस्कृति सेहो अछि। एहन व्यापक अध्येता, रचनाकारसँ युवा आ सम्भावनासँ भरल कवि-समीक्षक रमण कुमार सिंह अनेक महत्त्वपूर्ण आ मननयोग्य उत्तर एहि संवादमे प्राप्त केलनि अछि।]

मैथिली कथा साहित्यक वर्त्तमान स्थिति पर अपनेक विचार? अपन पीढ़ीक कथा आ तेकर बादक पीढ़ीक कथा पर अपनेक केहन विचार अछि?

आजुक युग मीडिया ओ प्रकाशनक युग थिक। आधुनिक साहित्य एहि सँ प्रभावितो अछि तथा एहिसँ लेखनकें प्रेरणो-प्रोत्साहन भेटैत अछि। मैथिलीमे प्रकाशनक घोर संकट अछि। पुस्तक प्रकाशन तँ अंधकारमय अछिये 'भारती मंडन' कें छोड़ि समस्त मैथिली जगतक केन्द्रीय स्तर पर बहुप्रचारित ओ लोकप्रिय पत्रिका सेहो नहि अछि। 'आरंभ' अछि मुदा ओ प्राय: अनियतकालीन अछि। शेष पत्रक जा प्रचार-प्रसार होब' लागैत अछि ता ओ बन्दे भ' जाइत अछि। (दिल्लीसँ प्रकाशित 'अंतिका' भरिसक तावत

जगजिआर नहि भेल छल-सम्पादक) एहन स्थितिमे लेखनमे गतिरोध आबि जाइत अछि। आ तें समकालीन मैथिली कथा साहित्यक विकास संतोषजनक नहि बुझना जाइछ। विगतमे 'वैदेही', 'मिथिला दर्शन' ओ बादमे 'मिथिला मिहिर' कथा-विकासक दिशामे बहुत योगदान कयने अछि। एहन नियमित ओ बहुप्रचारित पत्र-पत्रिकाक अभावसँ लेखन हतप्रभ ओ उदास अछि। तखन एहन अंधकारक स्थितिमे 'सगर राति दीप जरय' मे एकटा प्रकाश किरण देखबामे अबैत अछि। नवीन कथाकार सभक कथा जगतमे प्रवेश भ' रहल अछि जे शुभलक्षण थिक किन्तु नवीन कथाकारलोकनिमे (किछुमे) उचित श्रमक किछु अभाव देखबामे अबैत अछि। प्रतिभा, अध्ययन ओ अभ्यासक उचित संतुलनसँ नीक लेखन भ' सकैछ। समकालीन नवीन कथाकारलोकनि अन्य-अन्य भाषाक कथा साहित्य प्रायः कम पढ़ि रहलाह अछि, जाहिसँ दृष्टिक विकास नहि होइत अछि। पछिला युगमे ललित ओ राजकमल बहुत पढ़ैत छलाह, विशेषतः अंगरेजीक कथा साहित्य। किछु किछु हमहूँ पढ़ैत छलहुँ। एकर प्रभाव हिनकालोकनिक कथा-शिल्पमे अवश्य भेटत। दोसर हमरालोकनि (ललित, राजकमल ओ मायानन्द मिश्र) एक्के कथा पर अनेक समयधरि सोची, गप्प करी परस्पर आ तखन दुइ-दुइ तीन-तीन बेर एक्के कथाकेँ लिखी आ तखने प्रकाशनमे जाय। लगैत अछि समकालीन नवीन कथाकारमे प्रतिभाक आधिक्य अछि तें अधिक श्रमक प्रयोजन नहि पड़ैत अछि! जे हो, समकालीन मैथिली कथा परिमाण ओ परिणाम दुनूमे प्रर्याप्त संतोषजनक नहि अछि। तथापि जतबा साधन ओ सुविधा तथा स्थिति अछि ताहिमे निराशाक तेहन प्रयोजन नहि अछि। किछु नवीन कथाकार अतिसशक्त रूपमे आबि रहल छथि जे भविष्यक प्रति उत्साहिते करैत छथि। अस्तु।

मैथिलीक किछु कथाकारक कहब छनि जे मैथिली कथाकेँ मिथिलेक माटि-पानिक गप्प कहबाक चाही। अपने एहि विचारसँ कतेक सहमत छी? एहि माटि-पानिकेँ अहाँ कोन रूपमे रेखांकित करैत छी?

अहाँक एहि प्रश्नक सम्बन्ध कथाक 'कथ्य'सँ अछि जे मूलतः साहित्यक आत्मा थिक। आ ई प्रश्न बीच-बीचमे अनेक बेर उठाओल गेल अछि। एहि प्रसंग हमर किछु स्पष्ट धारणा ओ मान्यता अछि। देखू

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। जँ ई सत्य तँ साहित्यमे समाजक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति व्यापक रूपें होइत अछि। स्वयं सांस्कृतिक आभ्यन्तरिकता, जकर सम्बन्ध मानवीय मूल्य स्थायी भाव ओ संवेदनासँ अछि जाहि कारणे ओ सार्वदेशीय ओ सार्वकालिक अछि-ताहि मे कोनो परिवर्त्तन नहि होइत अछि। किन्तु (सांस्कृतिक) बाह्य रूपमे देशानुरूप ओ कालानुरूप परिवर्त्तन अबैत चल जाइत अछि। एहि कारणे साहित्यमे शाश्वत मूल्यबोध ओ युगीनताक नवीनता दूनू रहैत अछि। आ एहि कारणें विभिन्न देशीय (क्षेत्रीय) ओ भिन्न कालक साहित्यमे विभिन्नता रहैत अछि जे ओकर विशेषतो थिक, अनिवार्यतो थिक, स्वाभाविकतो थिक ओ विवशतो थिक।

विभिन्न महादेश जकाँ भारत राष्ट्रक एकटा संस्कृति अछि जे समग्र राष्ट्रीय स्तर पर एक अछि किन्तु से अछि आभ्यन्तरिकताक स्तर पर। अन्यथा बाहयरूपमे एकहि राष्ट्रमे अनेक विभिन्नता ओ विशिष्टता अछि। साहित्यमे एहि दुनू स्वरूपक अभिव्यक्ति होइ अछि। आ तें समग्र भारतीय साहित्य (आन्तरिक स्तर पर) एक होइतहुँ अपन-अपन विभिन्नता ओ विशिष्टताक संग उपस्थित अछि जाहिसँ ओ विभिन्न क्षेत्रीय स्तर पर चीन्हल जाइत अछि। यैह क्षेत्रीयता साहित्यकेँ प्रामाणिक सेहो बनबैछ आ स्वाभाविक रूपसँ विश्वसनीय सेहो बनबैत अछि।

एखन वैश्विक एकता ओ ग्लोबल विलेजक नारा जोर-सोरसँ देल जा रहल अछि जे 'बसुधैव कुटुम्बकम्' ओ विश्व शान्ति लेल अति आवश्यक। किन्तु ई नारा ताहि लेल नहि अछि। तकर प्रमाण थिक विभिन्न विकसित देश के युद्ध-सामग्रीक अखंडित रूपमे विपुल निर्माण ओ व्यापक व्यापार। ई थिक समकालीन विश्वक विरोधाभास। वस्तुतः ई दुनू नारा थिक नव सम्राज्यवादीक आर्थिक शोषण लेल प्रचारित आकर्षक भ्रमात्मक लोभनीय तर्कजाल। अस्तु। अहाँक मूल प्रश्न पर अबैत छी। जँ एहि बात के मानि ली जे साहित्यमे 'भोगल' यथार्थक अभिव्यक्ति आवश्यक जे ओकरा विश्वसनीयता, स्वाभाविकता, प्रामाणिकता ओ यथार्थता दैत अछि तँ ओहि मे क्षेत्रीयताक अभिव्यक्ति होमक चाही। कथाकारकेँ संस्कृति के आभ्यन्तरिकता ओ वाहयरूप दुनूमे उचित संतुलन बना क' चल' पड़त। आ जखने ई संतुलन

रहत तखने ओ भारतक मैथिली कथा कहा सकत। सांस्कृतिक निजत्वसँ भारतीय कथामे कोना भिन्नता अबैत अछि तकर एकटा उदाहरण देखल जा सकैछ। राजिन्दर सिंह बेदीक कथा 'गुलाम' ओ उषा प्रियम्बदाक 'वापसी' तथा मैथिली कथा 'चन्द्रबिन्दु' क कथावस्तु एक अछि। समकालीन भारतीय जीवनक कथा। किन्तु सांस्कृतिक भिन्नतासँ कथ्य ओ कथन-भंगिमा कोना बदलि जाइछ से देखल जाय। 'गुलामक' वृद्ध सिख घरमे बेकार नहि बैसि सकैछ तैं अवकाश प्राप्त होइतहुँ पुन: काजक खोज मे घरसँ चलि जाइछ। 'वापसी'क वृद्धकेँ घरमे क्यो सहन नहि क' पबैछ तैं घरसँ चलि जाइछ। आ चंद्रविन्दुमे वृद्धकेँ दूनू बेटा अपना लगमे राख' चाहैछ। किन्तु वृद्ध स्वयं एडजस्ट नहि क' पबैछ तें चलि जाइछ। ई तीनू कथा एक्के भारतीय कथा होइतहुँ क्षेत्रीय सांस्कृतिक भिन्नताक कारणे भिन्न भिन्न क्षेत्रीय कथा थिक। एहेन अनेक उदाहरण देल, देखाओल जा सकैछ।

मैथिली कवितामे विविध आन्दोलन भेल (खाहे अधिकांश असफले रहल) मुदा मैथिली कथा साहित्यमे तेहन कोनो विविध तरहक आंदोलन नहि भेल। कियै? जे आंदोलन (सगर राति दीप जरय) चलि रहल अछि तेकर सार्थकता आ प्रासंगिकता?

देखू, गतिशीलताक कारणे, जकर अनेक कारण अछि, समाज ओ बाह्य संस्कृति रूपमे त्वरित परिवर्त्तन अबैत अछि। ई स्थिति मध्यकालमे नहि अपितु 19म शताब्दीक पश्चात प्राय: विश्व भरिमे भेल। किन्तु विशेष भेल वैज्ञानिक ओ आर्थिक विकासक कारणे इग्लैण्डक समाजमे। आ तैँ अंगरेजीक रोमांटिक काव्यक पश्चात अनेक काव्यान्दोलनक जन्म भेल। कहल त' ईहो जाइत अछि जे 20म शताब्दीमे प्राय: दस-बीस वर्ष पर ओहिठाम काव्यक स्वरमे परिवर्त्तन अबैत रहल अछि आ नवीन काव्यान्दोलनक जन्म होइत रहल अछि। हिंदीमे किछु एहि प्रभावक कारणे ओ किछु निज प्रयोजने छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविताक रूपमे ठाढ़ भेल। काशी, इलाहाबाद, दिल्ली ओ कलकत्तामे कतिपय कारणे अधिक गतिशीलता रहल। तैँ विभिन्न वैचारिकता ओ पाश्चात्य प्रभावक कारणे अनेक काव्यान्दोलन ठाढ़ भेल। मिथिलांचलमे गतिशीलता सेहो कम रहल तथा प्रभाव ग्रहणक प्रवृत्ति सेहो कमे रहल, जे शुभलक्षणे थिक। मैथिलीक विशेषत: आधुनिक

काव्य जगतमे प्रभाव ग्रहणक कारणे विभिन्न काव्यान्दोलन नहि ठाढ़ भेल। एहि ठाम 1930ईक पश्चात मुख्य रूपे दूइये गोट काव्यान्दोलन रहल। एकटा संस्कारवादी काव्य रूप के आ दोसर 1958क स्वरगंधा तथा 1960 ई अभिव्यंजना-मिथिला मिहिरक कारणे 'नवीन काव्य' रूप केर, जकरा अनेक नाम देल गेल आ जाहिमे समकालीन सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्ति भेल अछि, जकर कथन भंगिमा सर्वथा अपरम्परागत ओ भिन्न अछि।

जहाँ धरि कथा साहित्यमे विभिन्न आन्दोलनक प्रश्न अछि से विश्वो कथा साहित्यमे कम्मे भेल। सामान्यत: विश्व भरिक विशेषत: भारतीय कथा साहित्यमे दूइये टा कथा धारा रहल। रोमांटिक कथा धारा- जाहिमे घटनाक विशेषता रहैत छल, दोसर यथार्थवादी कथा-धारा जाहिमे मनोविश्लेषणक प्रमुखता अछि। मैथिली कथा साहित्यमे अतियथार्थवादक प्रवेश नहिये जकाँ भेल। असलमे कथा साहित्यमे अनेक आन्दोलनक प्रयोजनो नहि अछि। जँ नाम ओ नारा देल जाइछ तँ ओ घोर प्रभाव ग्रहणक लोभाकर्षण थिक।

स्मरणीय अछि जे 'सगर राति दीय जरय' कोनो कथा आंदोलन नहि अपितु लेखन विकासक प्रयास थिक, आ से विकास-प्रयास निरंतर चलैत रहक चाही।

कथामे विचारक दबावकेँ अपने कोन रूप मे लैत छी?

कोनो कथा हो वा कोनो रचना ओहिमे वैचारिकता तँ रहितेटा अछि अन्यथा ओ रचना असफले टा नहि अपितु उद्देश्यहीन सेहो भ' जायत। वैचारिकते कोनो रचनाक कथ्यक निर्माण करैत अछि आ यैह कथ्य रचनोक मेरुदण्ड बनैत अछि।

की आजुक कथामे जिनगीक कोमलता आ की सौन्दर्यक लेल कोनो जगह बाँचल अछि?

जीवन आशा-निराशा, सुख-दुख आ उत्थान-पतनक समग्रताक नाम थिक। ओ एकांगी नहि थिक। आ साहित्यमे समग्र जीवनक अभिव्यक्ति होइत अछि, आ तेँ जँ साहित्यमे जीवनक संघर्ष ओ कठोरताक अभिव्यक्ति होइत अछि तँ ओकर कोमलताक अभिव्यक्ति सेहो स्वत: भइये जाइत अछि। साहित्यक तँ अभिप्रेते थिक 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्'।

एकटा शिकाइत सुनबामे अबैत अछि जे जाहि अनुपातमे जनसंख्या बढ़ल ताहि अनुपातमे पाठक नहि। अपितु पाठकक अनुपातमे निरंतर कमिये भेल जा रहल अछि, कियै? की एहि लेल स्वयं रचनाकार आ की हुनक रचना उत्तरदायी नहि अछि?

जनसंख्या विकासक संग ने शिक्षाक विकास भेल अछि आ ने आर्थिक विकास भेल अछि। गरीबी रेखा निरंतर ऊपर ऊठिक' उच्च मध्यवर्ग दिस आबि रहल अछि। समाजक सम्पत्ति असीमित जन समाजमे वितरित नहि भ' के एकटा सीमित वर्गमे जमा भ' रहल अछि। एहि वर्गकेँ साहित्यक प्रयोजन नहि अछि, ड्राईंगरूममे सजावटोक लेल नहि। शेष समाज भौतिक-मौलिक आवश्यकताक पूर्तियेमे अपस्यांत अछि। शिक्षाक अभाव अछिये। एहि अभावक प्रभाव विशेषत: प्रकाशन-वितरण प्रणाली पर पड़ि रहल अछि। दोसर दिस, लोकक जीवन संघर्षक कारणे व्यस्तता बढ़ि गेल अछि आ ताहि पर इलेक्ट्रानिक मीडियाक बचल खुचल समय पर भयानक आक्रमण। कुल मिलाक' 'पठनीयता घटिक' शून्य स्थिति पर आबि गेल अछि जकर प्रभाव प्रकाशन वितरण आ अंततोगत्वा लेखन पर पड़ि रहल अछि। ई स्थिति प्राय: समस्त भारतीय भाषा साहित्यक अछि। मैथिलीक किछु विशेष अछि। मैथिलीक प्रकाशन संकट मैथिली लेखनकेँ अतिशत प्रभावित क' रहल अछि। वस्तुत: मैथिली लेखन विवश ओ असहाय भ' रहल अछि निरन्तर।

आइ मैथिलीमे एहन कोनो रचना कियै नहि भ' पाबि रहल अछि जेकर अखिल भारतीय स्तर पर चर्चा हुअय? जँ लिखाय रहल अछि तँ चर्चा कियैक नहि होइत अछि? आन भारतीय भाषाक तुलनामे मैथिली कथाक मादे अपनेक विचार?

देखू, जीवनक वैविध्य साहित्यमे वैविध्य अनैत अछि। जीवनक संघर्ष साहित्यकेँ प्रखर बनबैत अछि। एहि वैविध्य ओ संघर्ष लेल दक्षिण भारतीय जीवनकेँ बम्बई (मुम्बई), मद्रास, बंगलोर सन तथा बंगालकेँ कलकत्ता एवं हिन्दी भाषी क्षेत्रकेँ दिल्ली, इलाहाबाद आदि सन नगर भेटल अछि। एहि सब क्षेत्रक साहित्यकार संघर्षशील रहलाह तथा दृष्टि वैविध्यपूर्ण रहल

जकर प्रत्यक्ष प्रभाव एहि सब क्षेत्रक कथा साहित्य पर देखबामे अबैत अछि। एहि सब दृष्टिमे मैथिली कथाकारक समक्ष संकट अधिक अछि। एहि कारणें मैथिलीमे ग्रामीण परिवेशक कथाक अधिकता अछि। अवश्य किछु श्रेष्ठो कथा लीखल गेल अछि जकरा कोनो भारतीय भाषाक कथाक समक्ष ठाढ़ कयल जा सकैछ।

एम्हर विश्वमे जे किछु वैचारिक बदलाव भेल अछि जेना उत्तर आधुनिकता, सरंचनावाद, विखंडनवाद... आदि-आदिक कत्ते प्रभाव मैथिली कथा पर अछि? जँ नहि अछि तँ कियैक?

उत्तर आधुनिकता शब्द काल अवधारणाक नहि, अपितु आर्थिक रूपें नव साम्राज्यवादक स्थापन लेल विकासशील राष्ट्रक शोषण लेल देल गेल नारा थिक जे इतिहास ओ अतीतकेँ नकारबा लेल कहैत अछि। भारत विशेषत: मिथिलांचलमे से संभव नहि अछि। ओना एहि षड्यंत्रक एकटा अन्य रूप उपभोक्ता संस्कृतिक रूपमे भारतीय समाजमे प्रवेश क' रहल अछि। वस्तुत: उपभोक्ता संस्कृति संपन्न समाजक विकृति थिक। मिथिला सन विपन्न समाजमे एकर प्रवेश व्यापक रूपें नहि बुझाइछ। जँ से भेल तँ अवश्ये ओहन साहित्य लिखाओत।

अहाँक लेखनक शुरूआतमे हरिमोहनबाबूसँ प्रभावित "भाँगक लोटा" संग्रह प्रकाशित भेल छल। मैथिली पाठकक एकटा पैघ समूह अखनो हरिमोहन बाबूक कथा शिल्पक विकासक जरूरति बुझैत छथि। तखन अहाँ अपन संग्रह 'भाँगक लोटा' केँ खारिज करैत छी, से कियैक?

प्रो. हरिमोहन बाबूक 'प्रणम्य देवता'क प्रचंड प्रभाव प्रतापें 49-50 ई. मे किछु हास्य कथा लिखने छलहुँ जे 51 ई. क 'भाँगक लोटा' मे संकलित अछि। जाहिमे मौलिक प्रतिभाक अभाव निश्चये अछि। किन्तु कालांतरमे सन् 80 ई. क आसपास किछु शुद्ध राजनीतिक जीवन पर शुद्ध व्यंग्य कथा लिखल जाहिमे प्रमुख अछि-एकटा चिनमा खेलियै रौ भैया, भैरव, अभिनन्दन, भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी, जिंजीर, हर्रे लागय ने फिटकरी तथा आधार आदि। जकर कोनो संकलन अद्यावधि प्रकाशित नहि भ' सकल।

पहिने हास्य व्यंग्यक कथा मैथिलीमे बहुते लिखाइत छल। एहि प्रसंग मे हरिमोहन बाबू सदति मोन पड़ि जाइत छथि। अहूँ खूबे हास्य-व्यंग्यक कथा लिखने छी। आइ-काल्हि हास्य-व्यंग्यक कथा कहूँ तँ नहिये लिखाइत अछि, कियै? की आइ जिनगी एत्तेक सोझ, सरल आ सुन्दर भ' गेल अछि कि ओकरा पर हँसल आ व्यंग्य नहि कयल जा सकैछ? अथवा ई आजुक मैथिली कथाकारक सीमा अछि? की कहय चाहब अहाँ?

हास्य-व्यंग्य लेखन अपेक्षाकृत कठिन शिल्प विधान थिक। ई दृष्टि विशेष पर निर्भर अछि आ तैं आधुनिक विभिन्न भारतीय भाषामे हास्य-व्यंग्य लेखन सीमितो अछि, सानुपातिको अछि। अपितु मैथिलीमे किछु अधिके लिखल गेल। गद्यमे हरिमोहन बाबूसँ रूपकान्त ठाकुर धरि आ पद्यमे कवीश्वर चन्द-सीताराम झासँ श्री अमरजी-श्री भीमनाथ झा धरि ई विकास परम्परा सहजहि देखल जा सकैछ। निश्चित रूपसँ मैथिलीमे व्यंग्य लेखनक अभाव नहि अछि।

अहाँ अपन कथा गुरू शरतचन्द्रकेँ मानैत छियनि। शरतचन्द्रीय भावुकताक शिकार अहूँक कथा सभ भेल अछि। मुदा आजुक जिनगीमे शरतचन्द्रीय भावुकताक प्रासंगिकता क्षीण भ' रहल अछि। तखन अहाँ अपन कथाक कत्तेक प्रासंगिकता बुझैत छी?

कोनो पूर्ववर्त्ती कथाकारक प्रशंसक होयब अथवा कथागुरु मानब तथा प्रभाव ग्रहण सर्वथा भिन्न बात थिक। हमर कथा साहित्य पर शरत प्रभावक विश्लेषण समीक्षक केर कार्य थिक, हमर नहि। किन्तु शरतचन्द्रमे मात्र भावुकता ताकब निश्चय दृष्टि दोष थिक। डॉ. धर्मवीर भारती ओहिना शरत बाबू ओ के. एम. मुंशीकेँ विश्व पंक्तिक लेखक नहि मानैत छथि। स्मरणीय अछि जे दूइ भिन्न युगीन साहित्यकारमे किछु शिल्पगत साम्य संभव अछि किन्तु वैचारिकतामे समानता असंभव अछि। एकटा गप्प आरो अछि, जीवन समग्रताक नाम थिक। ओ एकांगी नहि होइत अछि। आ साहित्यमे जीवनक अभिव्यक्ति होइत अछि। आ एहि दृष्टियें जखन हमर कथा कालरेत, हँसीक बजट, गाड़ीक पहिया, टूटैत कीलक जाँत, आगि मोम आ पाथर, रंग उड़ल मुरूत तथा धंधा आदि पढ़ब, गंभीरतासँ पढ़ब तँ सभटा स्पष्ट भ' जायत। अखन हम अपनहिसँ अपन कथाक प्रसंग विशेष की कहू?

अहाँक कथा सभ पढ़ैत काल बुझाइत अछि जे ई कथा सभ खाइत-पीबैत सुखी लोकक कथा थिक। भूखल-दुखल, नांगट-उघाड़ आ दलित पीड़ित लोकक कथा नहि। एहि मादे की कहय चाहब अहाँ?

एहि प्रश्नक उत्तर, आशा करैत छी उपरोक्त कथा सभकेँ पुनः पढ़ला पर अवश्ये भेटि जायत।

'टूटैत कीलक जांत' कथा पढ़ैत काल हमरा कथाक अंतमे नायिका आ ओकर छोट बहिनक बीच स्त्री-समलैंगिकताक अस्पष्ट संकेत बुझना गेल। की जहिया अहाँ ई कथा लिखने रही, मोनमे स्त्री-समलैंगिकताक विचार छल?

'टूटैत कीलक जांत' के विषय पारिवारिक विपन्नता विशेषतः एहि विपन्नताक कारणे दाम्पत्य जीवनक विवशता-चित्रण थिक। लेखन कालमे स्त्री समलैंगिकताक अभिव्यक्ति अभिप्रेत नहि रहल होयत। अभिप्रेत छल सहोदरक स्नेहातुरताक अभिव्यक्ति। तखन समीक्षकक दृष्टिक विलक्षणताक प्रसंग लेखक की कहि सकैछ!

अहाँक कथामे स्त्री-चरित्रक रूप वर्णन अनेक ठाम भेल अछि। आ सभ ठाम प्रायः स्त्री रूपसँ सुन्नरिये अछि। चेहरा-मोहरासँ कुरूप नहि, सामान्यो नहि। तकर कोनो विशेष कारण?

कोनो कथामे कथानकक प्रयोजने रूप-वर्णन होइत अछि। प्रायः हमरा ओहन कथाक लेखनक अवसर नहि भेटल जाहिमे नारीमनक सौन्दर्य नहि देखिकेँ मात्र दैहिक कुरूपताक वर्णन प्रयोजन हो। तथापि एतबा निश्चित जे सौन्दर्य दृष्टि-रूप केर विषय थिक।

अहाँक व्यक्तित्त्वमे जे सौम्यता अछि से कथा सभमे अभिव्यक्त भेल अछि। अहाँ मंचीय जीवनसँ सेहो जुड़ल रहलहुँ। मंचीय जीवनक लयबद्धता तँ अहाँक भाषामे अछि, मुदा अहाँक कथामे सांगीतिकता आ सांस्कृतिकता क अभाव अछि-से कियैक?

हमर व्यक्तित्त्व सौम्य अछि, से हमरा ज्ञात नहि छल, धन्यवाद। किन्तु विनय ओ शील रहय, तकर चेष्टा तँ रहितहि अछि। जँ अहाँक कथन सत्य जे हमर कथाक भाषामे लयबद्धता रहैत अछि तखन तँ संगीतात्मकता सेहो

अवश्ये रहक चाही। कारण स्वयं संगीतक जन्म लयसँ ओ तालसँ होइत अछि। अहाँ समीक्षक छी। कोनो कृतिमे किछु ताकि लेबामे समर्थ छी, स्वाधीन छी।

मैथिली आलोचनाक केहन रूख रहल अछि कथा साहित्यक मादे? की अहाँ एकटा कथाकारक हैसियतसँ मैथिली आलोचनासँ संतुष्ट छी?

रचनात्मक साहित्यक अनुगामी थिक आलोचना साहित्य। दुनूक विकास परस्पर सम्बद्ध अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे आधुनिक मैथिली आलोचनाक विकास किछु विलम्बसँ अवश्य भेल किन्तु सम्प्रति अनुपात असंतोषजनक नहि अछि। विशेषत: सन् 1960 ई. क पश्चात। सब साहित्यमे काव्य पर आलोचना अपेक्षाकृत अधिक होइत अछि। मुदा कथा साहित्य पर जतबा आलोचना भेल अछि संतोषप्रद अछि। मिथिला-मिहिरक पश्चात नियमित पत्रे-पत्रिका कहाँ रहल जे आलोचनाक विकास होयत?

कथा मे अन्तर्वस्तु (कथ्य) महत्त्वपूर्ण होइत छैक अथवा शिल्प? दुनू मे सँ ककरा बेसी महत्त्वपूर्ण मानैत छी अहाँ?

कहबाक प्रयोजन नहि जे कोनो कथामे कथ्य आ कथन-भंगिमा वा शिल्प दुनू समान रूपसँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि जहिना शरीर ओ आत्माक स्थिति अछि। एहि दुनूमे 'दृष्टिक' प्रयोजन अछि जे दुनूकेँ सूक्ष्मता दैत अछि जाहिसँ कोनो कला श्रेष्ठ बनैत अछि। आ श्रेष्ठ कलाकृति निश्चित रूपसँ प्रतिभा, अध्ययन, ओ अभ्यास पर आश्रित अछि।

जखन बाबरी मस्जिद ढाहल गेल छल तँ हिन्दी आ किछु, आनो भाषाक रचनाकार एकर प्रतिवादमे सड़क पर उतरल छलाह। महाश्वेता देवी साहित्य आ सड़क दुनू मोर्चा पर आदिवासी लोकक लेल संघर्ष करैत रहलीह अछि। मैथिली रचनाकारमे प्राय: एहन प्रवृत्ति नहिये भेटाइत अछि। खाहे कोनो तरहक राजनैतिक, सामाजिक वा आर्थिक मुद्दा हुअय मैथिली रचनाकार प्राय: घरे मे घुसकल रहलाह अछि। कियैक एक्कोटा महाश्वेता देवी मैथिली साहित्यमे आइ धरि नहि अभरल अछि?

देखू, भारतीय समाज आदिकालसँ सह अस्तित्व ओ सहिष्णुताक समाज थिक। ई उत्पाती जाति कहियो नहि रहल। हाल-हालधरि भारतीय मिश्रित समाजमे सौहार्द रहल अछि जकरा तोड़वाक प्रयास राजनीतिक लोक

कयलक जे सकारण छल। किछु इतिहासकार एहिमे बसाते देलनि। स्थिति भयावह भेल। किन्तु एहि प्रसंगकेँ शान्त करबासँ अधिक भड़काओल गेल अछि। बाबरी मस्जिदक यैह स्थिति अछि। एहि स्थितिक परिणाम जाहि क्षेत्रमे जेहन भेल ताहि क्षेत्रमे तेहन साहित्यक रचना भेल। किन्तु एतवा निश्चित जे एहन साहित्य ने गम्भीर भेल आने कालजयी। एहन साहित्य 'नारा'. पर लीखल गेल सामान्य साहित्य थिक। मैथिलीमे नारा पर साहित्य नहि लीखल गेल एकर अर्थ ई नहि जे सामाजिक सौहार्दक प्रयास नहि हो। आ से भेल अछि। विद्यापति स्वयं तेहन राजाक प्रशंसा कयने छथि। विद्यापतिये कालसँ मिथिलाक राष्ट्रीय भावना देखल जा सकैछ। आधुनिक कालमे मिथिलाक चम्पारणेसँ महात्मा गाँधी अपन अभियान प्रारंभ कयने छलाह। मिथिलांचल सभ दिन राष्ट्रीय भावनासँ ओतप्रोत रहल। कहियो मुडी नहि छिपलक। आ ताहि प्रसंगक गंभीर साहित्य सेहो प्राप्त अछि।

महाश्वेता देवी बंगलामे गम्भीर ओ श्रेष्ठ साहित्यक रचना कयने छथि। ओ आदिवासी जीवनक अभाव ओ दैन्य निकटसँ देखने छथि आ तैं एहि प्रसंगक साहित्योक रचना कयलनि अछि। मुदा जखन मात्र एहि प्रसंगक साहित्य लेखनटा सँ संतोष नहि भेलनि तँ सड़क पर सेहो उतरलीह जे हुनक वैचारिक प्रतिबद्धता प्रति हार्दिक आस्थाक द्योतक थिक। वस्तुत: प्रत्येक लेखकमे अपन वैचारिकताक प्रति प्रतिबद्धताक आग्रह रहैत अछि जकरा ओ अपन लेखनमे व्यक्त करैत चलैत अछि। मैथिलीक लेखककेँ आदिवासी जीवनकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भने नहि भेटल हो किन्तु मिथिला जीवनमे जे अभाव ओ संघर्ष अछि तकरा तँ ओ व्यक्त करिते रहलाह अछि। जकर परम्परा कवीश्वर चन्देसँ प्रारंभ भ' जाइत अछि। मैथिलीक अधिकांश लेखक अपन अपन आजीविकासँ जुड़ल रहि लेखन कयलनि तै ओ सड़क पर नहि उतरि सकलाह आ जे स्वाधीन छलाह ओ तँ सड़क पर उतरले छलाह, यथा-यात्री जी। तैं मैथिली लेखकक प्रति एहि प्रकारक दोषारोपण निराधार थिक।

नव पीढ़ीक रचनाकार लेल अपने किछु कहय चाहब?

समकालीन नवीन मैथिली कथाकारकेँ अधिक अध्ययन अधिक अभ्यास ओ अधिक श्रमक प्रयोजन अछि। प्रतिभाक अभाव मे तँ एहि क्षेत्र मे टिकबे कठिन अछि तथापि ओकरो विकास कयल जा सकैछ।

अंतिम प्रश्न, मैथिली महासंघक माध्यमे अपने मैथिलीक विकास लेल आन्दोलन कयल मुदा ओ आन्दोलन कोन-कोन कारणें सफल नहि भ' सकल?

देखू, मैथिली महासंघक स्थापना हम 1983 ई. मे कयने छलहुँ जखन हमर मंच जीवनक उत्तर मध्यान्हकाल छल। 1958 ई. सँ मैथिली जगतक प्राय: समस्त विद्यापति-पर्व समारोही मंच पर जाय लागल छलहुँ जत' मंच संचालन ओ कविता पाठक संगहि मैथिली-आंदोलन ओ मैथिली जगतक गतिविधि पर भाषणक अवसर भेटैत छल जकर मूल बिन्दु छल संविधान मे मैथिलीक स्थान ओ साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रवेश तथा लोक सेवा आयोगमे मैथिलीक स्वीकृति। दरभंगामे सेठ गोविन्द दासक सुझावक अनुकूल संविधानसँ पूर्व साहित्य अकादमीमे मैथिली प्रवेश पर जोर देबाक रणनीति बनल। एहि प्रसंग 1963 ई. मे पं. जवाहर लाल नेहरूक समक्ष मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी लागल जाहिमे नवीन काव्य पाठक निमंत्रण डॉ. जयकान्त मिश्रक दिससँ भेटल। पं. नेहरू प्रसन्न भेलाह, अकादमी मे मैथिलीक प्रवेश भेल। आब भाषणक बिन्दु भेल संविधान, लोक सेवा आयोग, शिक्षा, जन-जागरण ओ जन-संगठन आदि। एहि प्रसंग विभिन्न बिन्दु पर विभिन्न समयमे पोस्टकार्ड अभियान सेहो चलाओल गेल अथवा डॉ. जयकान्त मिश्रक चलाओल विभिन्न योजनामे सक्रिय रहलहुँ। एहि जन-संगठन ओ संयुक्त प्रयासक लेल मैथिली महासंघक स्थापना कयल जकर प्रयास एहिसँ पूर्वो बाबू साहेब चौधरी कलकत्तामे तथा श्री भोगेन्द्र बाबू दिल्लीमे कयने छलाह जे स्थगित भ' गेल छल। कतिपय कारणे पटनोक मैथिली महासंघक वैह नियति भेल। 1978-80 ई. सँ प्राचीन इतिहास-अध्ययन ओ लेखन दिस उन्मुख भ' गेल छलहुँ। तथापि समयाभाव रहितहुँ मैथिली आन्दोलनमे 1951 ई. सँ सक्रिय रहबाक कारणे मोन नहि मानय। आ तैं 1988 ई. मे साहित्य अकादमीक पुरस्कारक किछु पाइ लगाक' किछु बुलेटिन बहार करैत कटिहारसँ जयनगर धरिक यात्रा कयल ओ सन् 89 ई. मे लगभग चारि हजार मैथिली भाषी छात्रकेँ जमा कयल जे अतिप्रभावशाली ढंगसँ पटनामे प्रदर्शन कयलक तथा एक सवा घंटा धरि मैथिली आन्दोलनक इतिहासमे पहिल बेर हंगामादार ढंगे डांक बंगला

चौककेँ जाम कयलक। जकर तात्कालिक परिणाम ई भेल जे मैट्रिकसँ मैथिलीक निष्कासनक जे सरकारी दुष्चक्र चलि रहल छल से रूकि गेल तथा 'प्लस टू' मे जे मैथिली शिक्षकक नियुक्ति नहि भ' रहल छल से भ' गेल। एहि आन्दोलनमे ओहोलोकनि सक्रिय रूपें संलग्न रहल छलाह, विशेषत: पटना मे।

एहि प्रकारें आदरणीय किरणजी, सुमनजी, डॉ. जयकान्त मिश्र, श्री अमरजी, किसुनजी, बाबू साहेब चौधरी ओ श्री भोगेन्द्र बाबू आदि लोकनिक द्वारा समय-समय पर चलाओल गेल मैथिली आन्दोलनक क्रम मे यत्किंचित प्रयास क' अवश्ये हमरहु किछु संतोष भेल। मुदा पूर्ण संतोष ओहि दिन होयत जाहि दिन मिथिलांचलक समस्त मैथिलभाषी मैथिलीकेँ अपन मातृभाषा मानि बंगलादेशे जकाँ एकजुटता देखबैत संविधानमे प्रवेशक लेल कठिन संघर्ष करत ओ तकर फल प्राप्ति करत तथा बिहारमे मैथिलीक छीनल गेल अधिकारक वापसी होयत एवं लोक अपन संस्कृति केँ अपन अस्तित्वक मूल मानबा पर गर्वक अनुभव करत। अस्तु।

बहुत-बहुत धन्यवाद ओ आशीष जे अहाँ अयलहुँ आ किछु गप्प क' क' प्रसन्नता भेल। अहाँक लेखनक प्रति अनेक शुभकामना अछि।

(सन्धान-4, जुलाई, 2000)

卐

आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि

[समकालीन मैथिली कथा लेखनमे राजमोहन झा एक आधुनिक कथाकार छथि। मैथिली कथा साहित्यमे राजमोहन झाक अपन खास रंग, स्वर आ भंगिमा छनि। गंभीरता हुनक कथाकार व्यक्तित्वक प्रमुख तत्व। व्यक्ति स्वतंत्रतामे आस्था रखनिहार राजमोहन झाकें मनोलोकक गुम्फन कयनिहार कथाकार मानल जाइत अछि। बदलैत लोकक आ बदलैत समयक कथा कहनिहारमे राजमोहन झा बेजोड़ छथि। परिवर्त्तन हुनकर कथा रचनाक मुख्य स्वर लगैत अछि। परिवर्त्तनक चलैत पहिया, बदलैत दृश्यकें राजमोहन झा मनुक्खक मोनक भीतर पैसिक' देखि लैत छथि। ओकर फोटो घीचि लैत छथि। तें बदलैत लोक अपनाकें 'एक्सपोज' हेबासँ बचेबाक चेष्टा कइयो कय राजमोहन झाक कैमराक रेंजमे आबिये जाइत अछि। मोनमे प्रवेशक एहन सामर्थ्य विरले रचनाकारके प्राप्त होइत छैक।

हेबनिमे हुनक पाँचम कथा संग्रह आयल अछि 'अनुलग्न'। अनुलग्न के पढ़ैत आ राजमोहन झाक कथा यात्राक संग जीवन यात्राके गुनैत हुनका सँ संवाद करबाक आकांक्षा होयब स्वाभाविक। सन्धानक प्रकाशन आ सम्पादन सेहो तत्काल ई अवसर प्रदान क' देलक। सन्धानक पहिल अंक मे कथाकार राजमोहन झा के आर अधिक चिन्हबाक-बुझबाक अवसर पाठक के भेटतनि से विश्वास अछि।]

भाइ साहेब, अहाँ मैथिलीक श्रेष्ठ कथाकार छी। लोकप्रिय सेहो। जेना मोन अछि अहाँक पहिल कथा जे हमर पाठक मोन के आकर्षित कने रहय से छल-एकटा तेसर। बाद मे ओहि नामसँ संग्रह सेहो आयल। हम अहाँक सभ संग्रह देखने छी। लगभग सभ कथो पढ़ि गेल छी। अहाँक परवर्ती जीवनके नजदीकसँ देखबाक सुअवसर सेहो सौभाग्यसँ प्राप्त अछि। अहाँक कथाकार आ अहाँक व्यक्ति दूनूके मिला क' देखैत छी त' हमर पाठक, अनुज कथाकार मोन ममत्व, रहस्य आ कचोटसँ भरि जाइये। एकटा टीस दैत अछि। संगहि अहाँके आर बुझबाक, अहाँके आर पढ़बाक पियास सेहो बढ़बैये। जेना कहलहुँ सम्पूर्णतामे रहस्यमय सन लगैये सभटा। भाइसाहेब, कियैक एतेक रहस्यमय लगैत छी अहाँ?

हे यौ अशोकजी! आइसँ किछु वर्ष पूर्व केदारक एकटा पत्र भेटल छल। ओहिमे ओ पटनामे बिताओल अपन छात्र जीवनक काल-खंडक स्मरण करैत लिखने छलाह जे ओहि समय रानीघाट स्थित हमर डेरा पर ओ आबथि तँ सदैव हुनका एकटा रहस्यमयताक अनुभूति होइनि, जकरा ओ बूझि नहि पाबथि। अहाँक ई प्रश्न हमरा से बात मन पाड़ि देलक अछि। अशोक जी, किएक एतेक रहस्यमय लगैत छी हम अहाँके वा आन ककरो, से तँ अहीं अथवा ओ आन केओ कहि सकैत छथि। हम कोना कहू?

मुदा हमरा सोचबाक चाही जे हम किए रहस्यमय लगैत छिऐ ककरो? एहन कोनो बात, सत्य पूछी तँ अपनामे हम नहि पबैत छी जे हमरा एहि विशिष्टतासँ मंडित करय। हमर जीवन तँ हम बुझैत छी, बहुत-किछु खुजल किताब सन रहल अछि। ममत्व आ कंचोट जकर जिक्र अहाँक प्रश्नमे आयल अछि, से जत' सँ हमरा प्रायः सभसँ बेसी भेटबाक चाहैत छल, से सभसँ कम भेटल। तें अहाँ सभसँ ई भेटैत अछि तँ बहुत नीक लगैत अछि, बहुत-बहुत नीक लगैत अछि। रहस्यमय प्रायः एहि कारणें हम ककरो लगैत होयबैक जे अपन व्यक्तिगत दुःख वा पीड़ा के ककरो आगाँ व्यक्त करबाक कोनो प्रयोजन वा सार्थकता हम नहि बुझैत अयलहुँ अछि। अपन दुख आ पीड़ाकें अहाँके अपने सहबाक अछि। एहि लेल ककरो दोषो देनाइ व्यर्थ थिक। अहाँके जे भेटल अछि, से तकरे योग्य अहाँ छीहे प्रायः। ई बात अहाँमे सन्तोष उत्पन्न करैत अछि, आ अहाँके आगाँ बढ़बाक लेल सम्बल

प्रदान करैत अछि। नहि तँ लोक तँ तखनहि टुटि जाइत। अहाँ सभक ई ममत्व, कचोट आ रहस्यमयताक भावे हमरा जियाक' रखने अछि, अशोक जी। ई जँ नहि रहैत, तँ हम सोचि नहि सकैत छी जे हम कोना रहितहुँ। एकटा सामान्य सुखी पारिवारिक जीवन बितयबाक अवसर भेल रहैत, तँ ई रहस्यमयताक कोनो बात नहि अछि। हम रहस्यमय नहि लागी अशोक जी अहाँके, अथवा आन किनको से बात अहाँ सभसँ हमरा दूर क' देत। आ से हम नहि चाहैत छी।

अहाँक पहिल कथा संग्रह 'एक आदि एक अन्त' जे 1965 मे छपल छल, मे संग्रहीत पहिल कथा 'ज्वार भाटा' मे जीवनक प्रति ममत्वपूर्ण आकर्षणक चित्रण अछि त' चारिम कथा संग्रह 'आइ काल्हि परसू' जे 1993 मे आएल मे घरक प्रति (घर कथा मे) ममत्व अंकित कयल गेलय। जीवन आ घरक बाद ममत्वक परिधिमे आर ककरा-कथी के राख' चाहब अहाँ?

घरक प्रति ममत्व पूरा नहि बहरायल अछि। हम एक बेर सोचने रही जे 'घर' शीर्षकसँ दसटा कथा लिखी-घरक भिन्न-भिन्न आयाम आ अर्थकेँ केन्द्र बनबैत। से जँ कहियो भेल, तँ 'घर' शीर्षकसँ एकटा पोथिए निकालब। कथाक शीर्षक रहतैक 'घर-1', 'घर-2'।

आ जीवनक प्रति ममत्वक तँ कोनो अन्त नहि छैक। जीवने तँ अपना मे सभ किछुकें समेटने अछि। जीवन नहि रहौक, तँ सभ किछु निस्सार नहि भ' जाइत छैक?

जीवन आ घरक बाद हमरा सम्बन्ध महत्वपूर्ण लगैत अछि। ओना ई तीनू एक दोसरासँ घनिष्ठ रूपें गुम्फित अछि। सम्बन्धकें-सम्बन्धक प्रति ममत्व वा ओकर महत्वकें केन्द्रमे राखि लिख' चाहब। मुदा कतेक की भ' सकैत अछि, कोना कहू? हम जँ जीवकान्तजी रहितहुँ, तँ सोचलाहा सभटा प्रायः लिखल भ' जाइत। जीवनक प्रति ममत्वोक एकटा ई पैघ कारण अछि। रिटायरमेंटक बाद ई चिन्ता बेसी रह' लागल अछि, अशोक जी, जे कतबा की और हम लिखि सकब।

की जीवनक प्रति आकर्षण अथवा आसक्तिक क्षरण अनुभव करैत छी? अथवा की एखनो आइयो अहाँक कथाकार पुनः 'ज्वारभाटा' लिख' चाहत?

नहि अशोक जी, एकदम नहि करैत छी। बल्कि जेना कहलहुँ जीवनक प्रति आसक्ति बेसिये अनुभव कर' लागल छी। आकर्षण आ आसक्तिक क्षरण तँ लेखक लेल आत्मघाती डेग होयतैक। समाजोक लेल ई बड़ पैघ क्षति। लेखक संन्यासी भ' क' ने अपन उपकार करैत अछि ने समाजक, तकर दृष्टान्त अपनो साहित्यमे अछिए।

प्रश्नक अन्तिम अंशक उत्तर देबाक काज?

अपन लोकक प्रति जे ममत्व, स्नेह, अनुराग रहै छै। ओकरा लेल किछु करबाक सेहन्ता रहै छै। अर्थ ओकरा कोना चोरीचोंत करैये से कथा खूब कहलियै अहाँ। बदलैत समयक आ बदलैत मनुक्खक कथा कहैत, राग-अनुराग के गायब होइत देखैत कहुखन के अहाँसन मनोलोकक गुम्फन कयनिहार सेहो लगैये अवाक् रहि जाइये। 'अप्पन लोक' सँ 'खोज' धरिक सन्दर्भ हम ल' रहल छी। किए? कियेक होइ छैना एना? की परिवर्त्तनक गति के अहूँसन कथाकार नहि पकड़ि पाबि रहल अछि?

पकड़ि पाबि रहल अछि कि नहि पकड़ि पाबि रहल अछि से तँ अहीं कहब, अशोक जी। तखन ई बात जरूर छैक जे परिवर्त्तन जेना जाहि तरहें भेलैक अछि आ भ' रहलैक अछि, से लोककेँ अवाक् कर'वला छैक। कथाकारो कें। सत्य पूछी तँ कथाकार अवाक् भ' क' आ लोक के अवाक् क' क' परिवर्त्तनक एहि क्षिप्र गतिए दिस इंगित करैत छैक। परिवर्त्तन आ परिवर्त्तित स्थितिकेँ राखि के हम बुझैत छी, कथाकारक काज पूरा भ' जाइत छैक। परिवर्त्तनक तहमे जा ओकर कारण सभकेँ ताकब हमरा लगैत अछि, कथाकार लेल जरूरी नहि छैक। ई काज समाजशास्त्रीक छैक। ओना अवाक् भ' कथाकार पाठककेँ कारण पर सोचबाक लेल अग्रसर तँ कैए दैत छैक। बहुत ठाम विश्लेषित क' क' कारणो देखा दैत छैक। लेकिन हमरा लगैत अछि, से सभठाम जरूरी नहि होइत छैक। 'अप्पन लोक' आ 'खोज' क संग अपन सूचीमे अहाँ 'चलह' (अनुलग्न) केँ सेहो जोड़ि सकैत छलहुँ, अशोक जी।

ई समयक परिवर्त्तनक गति आ मोनक गतिमे कोन अहाँके अपना बेसी भीजल बुझाइये? ककरा पकड़बामे बेसी सुविधा होइये अपन कथा रचबाकाल?

बदलैत समय आ बदलैत मन सत्य पूछी तँ एके वस्तुक दूटा पहलू अछि। दुनूमे अन्योनाश्रय सम्बन्ध छैक। समयक संग मन बदलैत छैक आ मने समयो मे परिवर्त्तन अनैत छैक। दुनूक गति फराक-फराक नहि भ' एके संग चलैत छैक। तखन ई छैक जे मन जकाँ चंचल कोनो वस्तु नहि। तैं एकर गतिकें पकड़नाइ, एकरा संग चलनाइ कठिन काज होइत छैक। समयक परिवर्त्तनक गति एकटा स्थिरता लेने होइत छैक। तैं एकरा ठहरि क' पकड़ल जा सकैत अछि, बिलमि क' एकरामे पैसल जा सकैत अछि।

भ' सकैत अछि, अशोक जी, जे हमर पहिलुक बात आ एहिमे अहाँके विरोधाभास बुझाय। मुदा दुनू बात अपना-अपना जगह सही छैक। प्रभावक दृष्टिसँ हम कहलहुँ जे समयक परिवर्त्तन आ मनक परिवर्त्तन एके संग चलैत छैक। मुदा दुनूक प्रक्रियामे अन्तर छैक। मनक गति जँ द्रुत लयमे चलैत छैक, तँ समयक गति विलम्बित लयमे।

स्वभावतः समयक परिवर्त्तनक गतिकें पकड़ब बेसी सुविधाजनक होयतैक, कारण जे एत' अहाँके पलखति भेटैत अछि। मनक गतिक संग जुमनाइ कने बेसी कठिनाह जरूर होइत छैक। ओना भीजब दुनूमे हमरा लेल आवश्यक होइत अछि। मनक गतिक संग चलनाइ एकटा बेसी दुष्कर काज जरूर बुझाइत अछि। मुदा हमरा कोनो हड़बड़ी नहि रहैत अछि। तैं मन एहूमे लगैत अछि। सुविधाक बात पूछब तँ समयक परिवर्त्तनक गति अवश्य पहिने आओत।

बदलैत मोन आ बदलैत समय दूनूक चित्रण अहाँक कथामे नीक जकाँ भेल अछि। मोटामोटी 'परिवर्त्तन' अहाँक मुख्य स्वर लगैये हमरा। एहि अर्थमे अहाँ आधुनिक कथाकार छी। बदलैत लोकक संग अहाँ कतेक बदलल छी? कतेक आधुनिक बनि सकलहुँ?

हे यौ, अशोक जी, जाहि प्रश्नक उत्तर अहाँके देबाक चाही, से अहाँ हमरासँ पूछि रहल छी। हम कतेक आधुनिक छी से तँ अहाँ ने कहब? ओना हम बुझैत छी जे दकियानूस अथवा पारम्परिक होयबासँ हम सदा परहेज करैत रहलहुँ अछि। अनुभवक संग हमर कतोक धारणा आ विचारमे परिवर्त्तन आयल अछि। तें बदलैत परिवेशक संग हम अवश्य बदलल छी। मुदा एकर ई अर्थ नहि जे अवमूल्यनक एहि युगमे हम अपन शाश्वत मूल्यक मौलिक वस्तुकें बिसरि गेल होइ अथवा ओकरा तिलाञ्जलि द' देने

होइ। किछु अर्थमे हम पुरना परम्पराक एखनो पोषक छी। परम्परामे सभ किछु त्याज्ये नहि होइत छैक। परम्परामे जे वस्तु रूढ़ि भ' जाइत छैक, तकरा छोड़बाक चाही, परन्तु जे वस्तु शाश्वत मूल्यक होइत अछि, तकरा तँ जोगाक' रखबाक चाहबे करी। यैह तँ अहाँक सांस्कृतिक पहिचान बनैत अछि।

तें बदलैत लोकक संग हम कतेक बदललहुँ अछि से कहब कठिन बुझाइत अछि। किछु अर्थमे हम जरूर अपनाकें बदललहुँ अछि। अनुभवक संग लोक अपनाकें बदलैते अछि। मुदा जहाँ तक सिद्धान्त वा नैतिकताक प्रश्न अछि, हम अपनाकें बदलि सकबामे असमर्थ भेल छी। समर्थ होयब चाहितो नहि छी। आब जे छै से छै। और की?

एतेक कहलाक बादो हम कतेक आधुनिक छी, से प्रायः अहाँके नहि कहि सकलहुँ। कहियो नहि सकैत छी।

परम्परामे जे रूढ़ि छैक, ताहिमे हम विश्वास नहि रखैत छी, आ परम्परामे जे शाश्वत मूल्य छै, ताहिमे आस्था रखैत छी। आब अहीं बुझू जे हम कतेक आधुनिक छी, कतेक नहि।

अपन अनेक कथामे खास क' कय 'आइ कालिहक परसू' मे संग्रहीत कथा सभमे अपराधी, अनैतिक बनैत मनुक्खक खिस्सा अहाँ कहलहुँ अछि। लगभग सभ पात्र-पढ़ल-लिखल सभ्य समाजक अछि। 'बुधियारी' कथामे त' तथाकथित वामपंथी बुद्धिजीवीक अनैतिकता, अपराधीपन विन्यस्तसँ उघार भेलय। की अनैतिकता आ अपराधीपन आधुनिकताक प्रमुख तत्व मानैत छी अहाँ? आधुनिक माने अनैतिक त' ने अछि?

नइँ अशोक जी, से नइँ अछि। आधुनिक माने अनैतिक नइँ। अपराध आ अनैतिकता– ई तँ एकटा युगधर्मजकाँ कहि सकैत छिऐ अहाँ। ई कोनो सकारात्मक वस्तु नहि छिऐ। आधुनिकता एकटा सकारात्मक वस्तु छिऐ ई एकटा मूल्य छिऐ? अपराध आ अनैतिकताकें अधिकसँ अधिक अहाँ लक्षण मानि सकैत छी-युगक लक्षण। आधुनिकताक लक्षण नहि। एहि सभ वाह्य आ तात्कालिक प्रभावसँ आधुनिकताक अवधारणा कोनो तरहें प्रभावित नहि होइत अछि, हमरा जनैत। आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि, जकरा ई सभ विकृति बदरंग नहि क' सकैत छै। आधुनिकता

एकटा स्वच्छ वस्तु थिक, जाहिमे एहि अपराध, हिंसा आ अनैतिकताक दाग नहि लगबाक चाही। से जँ होइ, तँ आधुनिक भेनाइ तँ एकटा गारि भ' जयतैक। कतहु अहूँ हमरा आधुनिक मानलहुँ अछि। से एहि अर्थ मे तँ नहि?

अपन कथा 'केंचुआ' (झूठ-साँच) मे अहाँ कहैत छी 'मनुखक सामाजिक विकास जाहि गति सँ भ' रहल छैक, ताहि लेल मिनट-मिनट पर केंचुआ बदल' पड़तैक। खोज (आइ-कल्हि परसू) मे अहाँ कहलियै 'ठीक छै परिवर्त्तन होइ छै, समयक अनुसार सभकिछु बदलै छै। मुदा तकर ई अर्थ थोड़बे होइ छै जे लोक एकदमसँ अपन व्यक्तित्व उतारि फेकय? एक दिस अहाँ व्यक्तित्व के उतारि कय नहि फेकबाक लेल कहैत छी, दोसर दिस सामाजिक विकासक संग मिनट-मिनट पर केंचुआ बदलबाक अनिवार्यता सेहो मानैत छी। की केंचुआ आ व्यक्तित्व एक्के थिक? जँ दूनू एक्के तँ अहाँ अपन दूनू कथनमे कोना संगति बैसायब? यदि दूनू एक नहि त' की केंचुआ बदललासँ व्यक्तित्व नष्ट नहि हेतैक? अथवा ओहि पर कोनो प्रभाव नहि पड़तैक?

'केंचुआ' मे जे बात कहल गेल छैक, अशोक जी, तकरा स्थापनाक रूपमे नहि लेल जयबाक चाही। ओकरा व्यंगात्मक ध्वनिक रूपमे ग्रहण करब बेसी ठीक होयत, हमरा हिसाबें। केंचुआ व्यक्तित्व नहि अछि। ओ तँ व्यक्तित्वक उपर खोल अछि, मुखौटा अछि। आ' ई जत' अछि, तत' व्यक्तित्वे सैह भ' जाइत अछि। माने, अहाँक असली व्यक्तित्व तिरोहित भ' जाइत अछि आ मुखौटा वा खोल वला' व्यक्तित्व आगाँ आबि जाइत अछि आ वैह व्यक्ति समाजक सोंझां स्वीकृत भ' जाइत अछि। केंचुआ बदललासँ असली व्यक्तित्व त' नष्ट होइतहि अछि ओहि पर आवरण पड़ितहि अछि, जाहिसँ लोक भ्रमित होइत अछि।

एहीसँ एकटा प्रश्न हमर मोन मे आर उपजैये। की मनुक्खके बेर-बेर केंचुआ बदलबासँ छुटकारा दियबाक लेल मनुक्खक सामाजिक विकासक गति के अहाँ रोक' चाहब अथवा बदल' चाहब? यदि रोक'-बदल' चाहब त' कोना?

अशोक जी, ई प्रश्न बड़ कठिन अछि। रोक'-बदल' क अनिवार्यता सामने ठाढ़ अछि। मुदा कोना रोकल-बदलल जाय, से तकर बाट नहि सुझैत

अछि। अनका बदललासँ प्रायः किछु होयबो नहि करतैक। लोक कें स्वयं बदल' पड़तैक। लोक के बदलबामे, ओकरे परिष्कार करबामे साहित्यक भूमिका सदासँ रहलैक अछि। मुदा साहित्यक पाठकक संख्या जे दिनानुदिन घटि रहल छैक, से चिन्ताक विषय अछि। एकरा एकटा विचित्र विडम्बना कहबैक जे विगत किछु वर्षमे जेना-जेना साक्षरता बढ़लैक अछि, तेना-तेना साहित्यक पाठक कम होइत गेलैए। तहिना जेना स्कूल-कालेजक संख्या बढ़ने शिक्षाक स्तर खसैत गेलैए।

व्यक्तित्वक प्रश्न पर मोन पड़ल सन्धानक एही अंक मे प्रसिद्ध समाजशास्त्री डॉ. हेतुकर झा अपन निबन्धमे कहलनि अछि जे मिथिलामे विद्या आ व्यक्तित्व संस्कृतिक दूटा मूल्य सभ दिनसँ जीवित रहल अछि। एहि सन्दर्भमे ओ अयाची आ व्याधक उदाहरणो देने छथि। की मनुक्खक सामाजिक विकासक एहि गतिमे मैथिल व्यक्तित्व नष्ट भ' रहल अछि अथवा मैथिल अपन व्यक्तित्व उतारि क' फेकि रहला अछि? एहिसँ की अहाँ कोनो खतरा अनुभव करैत छी?

सांस्कृतिक विघटन ओना तँ सभतरि भेलैक अछि, लोक वैश्विक बेसी होब' लागल अछि, जीवनमे संघर्ष बढ़ि गेलैक अछि आ तें अपन आंचलिक संस्कृतिकेँ बचाक' रखबा दिस लोक ध्यान नहि द' रहल अछि। मुदा हमरा लगैत अछि, आन सांस्कृतिक इकाइ सभ अपनामे जतेक घनगर आ ठोस अछि, ततेक हम मैथिल सभ नहि छी। बंगाली वा पंजाबी देशक कोनो कोनमे रहय, अपन सांस्कृतिक पहिचान बनौने रहैत अछि। हमर मैथिल भाइ सभ की करैत छथि तँ दिल्ली पंजाब जा क' सभसँ पहिने अपन मैथिलत्व उतारिकेँ फेकैत छथि। हम देखने छी जे बहुत प्रवासी मैथिलकेँ अपनाकेँ मैथिल कहबामे लाज होइ छनि। जातीय व्यक्तित्व नष्ट भेने खतरा तँ छैहे। रूढ़िसँ विच्छिन्न होयब एकटा बात होइ छै, परम्परासँ विच्छिन्न होयब दोसर बात होइ छै। रूढ़ि हमरा आगाँ बढ़बासँ रोकैत अछि। मृत अतीतकेँ रूढ़ि कहबै। मुदा अतीतक एकटा जीवन्त तत्व सेहो होइत छैक जे सदा संग चलैत रहैत छैक। यैह परम्परा कहबैत छैक। एकरा छोड़ने व्यक्तित्व नहि बाँचि सकैत छै।

यदि अहाँ कोनो खतरा अनुभव करैत छी त' अपन कथामे कोना आ कत' एहि खतरा के रेखांकित, उल्लिखित कने छी? यदि नहि कने छी त' की भविष्यमे करबाक निआर अछि?

आब कत' कोन कथामे ई खतरा आयल अछि, आयल अछि कि नइँ, नइँ मन पड़ैत अछि। बहुधा अपनो कथा हमरा मन नइँ रहैत अछि। नेयारिक' तँ नइँ सोचने छी, सहज-स्वाभाविक रूपसँ कोनो कथामे आबि सकैत अछि।

भाइ साहेब, एकटा बात पूछै छी। अपना मे कतबा 'मैथिल व्यक्तित्व' अहाँ सुरक्षित-संरक्षित मानैत छी?

बेसी नहि। हमरा जेना लगैत अछि। ठेठ मैथिलत्वक प्रायः हमरामे अभाव अछि। आब से जेना जे होय। व्यक्तित्व बहुत रास बाह्य आ आन्तरिक घटक सभक प्रभावसँ बनैत छैक। तखन परिवेश आ संस्कारक कारणें मैथिलत्वसँ बहुत दूरो नहि गेल जा सकैत अछि। ओना हम संतुष्ट छी।

जीवनदर्शन आ व्यक्तित्वक प्रसंग चलि रहल अछि त' स्व. हरिमोहन बाबूक स्मरण होयब स्वाभाविक। ठेंठ मैथिल व्यक्तित्व छलनि हुनकर। की अहाँ हुनकर जेठ बालक होयबाक कारणें हुनकर जीवन दर्शन ओ व्यक्तित्व सँ प्रभावित भेलहुँ। यदि हँ त' कोना? यदि नहि त' कियैक?

प्रभावित नहि भेलहुँ, से कोना कहि सकैत छी? कोनो व्यक्तित्वक प्रभाव दू प्रकारसँ होइत छैक। एक तँ व्यक्तित्वसँ प्रभावित भ' ओकर किछु बात अहाँ सोझे ग्रहण क' लैत छी। आ किछु बात अहाँमे उन्टा प्रतिक्रिया उत्पन्न करैत अछि। तखन अहाँ विपरीत धर्म ग्रहण क' लैत छी। हम एहि दुनू तरहें प्रभावित भेल छी।

जीवनदर्शन, अशोकजी, एहन वस्तु नहि होइत छैक जे सोझे-सोझ ककरोसँ ल' लेल जाय। ई तँ अपना भीतर विकसित कर' पड़ै छै। प्रभाव किछु अंशमे अवस्से अछि। मुदा अलगावो अछि। से प्रायः स्पष्टे अछि। पीढ़ीक अन्तर सेहो एकटा कारण अछि।

हरिमोहन बाबू पाखण्ड ओ अंधविश्वासक विरोध हँसैत-हँसबैत व्यंग करैत कयलनि। नीक बातक स्वागत सेहो कयलनि। हुनकर साहित्य ऐतिहासिक अनिवार्यताक अनुरूप अछि। की अहाँ अपनो सम्बन्धमे ई बात कहि सकैत छी?

हँ, अशोक जी। कोनो युगक साहित्य अपन समय आ इतिहासक अनुरूपे होइत अछि। जँ से नहि होइत अछि, तँ ओ सार्थक साहित्य नहि अछि। ओहि समयक समस्या सभ भिन्न छलैक, एखनुका समस्या सभ किछु और छैक। दूनू समयक साहित्य अपन-अपन ऐतिहासिक अनिवार्यताक अनुरूप अछि।

मैथिली साहित्यमे अहाँक घरक योगदान अपूर्व आ स्तुत्य अछि। पितामह, पिता, अहाँ स्वयं, अहाँक अनुज प्रो. मनमोहन झा, अहाँक बहिनोइ स्व. शैलेन्द्रमोहन झा मोटा-मोटी सभक प्रसिद्धि गद्ये ल' कय अछि। अहाँक बाबा स्व. जनसीदनजी, अहाँक बाबू स्व. हरिमोहन झा दुनू उपन्यास लिखलनि। की अहाँ कोनो उपन्यास लिखबाक अनिवार्यता अनुभव नहि कलहुँ? यदि नहि कलहुँ त' किये?

अनिवार्यता तँ नहि अनुभव कयलहुँ, इच्छा जरूर अछि जे उपन्यास लिखी। नाटको लिखबाक इच्छा अछि। ताहि समयमे केन्द्रीय विधा उपन्यासे रहैक। आब तकर स्थान कहानी ल' लेलक अछि। उपन्यास लिखबाक अनिवार्यता तँ भ' सकैत अछि जे नहि अनुभव कयने होइ। आ सत्य पूछी, अशोक जी, तँ उपन्यास लिखब हमरा कठिनो बुझाइत अछि। उपन्यास-लेखन एकटा नैरन्तर्य खोजैत छैक, एकटा दीर्घ-कालिक प्रक्रियाक माँग करैत छैक। से हमरासँ नइँ होइत अछि। तें कहानी लिखब बेसी सुविधा जनक हमरा लेल होइए।

हरिमोहन बाबू चाहैत छलाह जे बुच्चीदाइ (कन्यादान उपन्यासक मुख्य चरित्र) चुप्प नहि रहथि। हुनकर सदिच्छाक लगभग 60 वर्षक बाद की अहाँ अनुभव करैत छी जे बुच्चीदाइ आइयो चुप्पे छथि, अथवा खुजलीह अछि, बाजि रहलीहे? की हुनकर खुजनाइ आ बजनाइ आइ अहाँके पसिन्न पड़ि रहल अछि?

नइँ अशोक जी, बुच्चीदाइ आब चुप कहाँ छथि? खुजलीहे, बाजि रहलीहे। हमरा लगैत अछि, बेसिए बाजि रहलीहे। खुजनाइ आ बजनाइ नीक बात, मुदा आवश्यकतासँ अधिक खुजनाइ आ बजनाइ नीक बात नहि। से मुदा की करबै, जेना प्रेमचन्दक एकटा कथामे छनि-नारी जे अछि से सदा अन्तिम छोर पर रहत, एहि दिस अथवा ओहि दिस, बीचक मार्ग ओकरा लेल नहि। बुच्चीदाइयो तँ तेहने छथि चुप्प छलीहे तँ चुप्प छलीहे, पढ़ि-लिखि अप-टू-डेट भ' गेलीह तँ लालकाकीकेँ कहै छथिन-तो तँ देहाती जकाँ बजै छै। अंग्रेजीमे एहन बातकेँ नौनसेन्स कहै छै।

तँ ई अतिवाद नारीक स्वभावमे छैक। सन्तुलन एत' बहुत विरले भेटत। ई बात हम अपना ऊपर दकियानूस कहल जयबाक खतरा उठा क' कहि रहल छी।

मिथिलाक राजनीतिमे स्व. ललित नारायण मिश्र आ साहित्यमे स्व. हरिमोहन झाक नाम आम लोक श्रद्धासँ लैत अछि। बहुत लोकप्रिय रहलाह वा छथिहे दुनू गोटे। एहिक्रममे अहाँके अपना मादे आ विजय कुमार मिश्रक मादे की लगैये?

हे यौ, ई दुनूगोटे अपना-अपना क्षेत्रमे बहुत विराट व्यक्तित्व छलाह। हिनका दुनू गोटेक आगाँ हम दूनू गोटे कतहु ठाढ़ नहि होइत छी। अधिककाल, अशोक जी, अहाँ देखबै जे महापुरुषक उत्तराधिकारीलोकनि हुनक कीर्त्तिकें आगाँ बढ़यबाक स्थान पर ओकरा नष्टे करैत छथिन। डॉ. सर गंगानाथ झा-डॉ. अमरनाथ झा सन उदाहरण कम्मे भेटैत अछि।

एकटा कथाकारक रूपमे अपन लोकप्रियताक कोनो स्मरणीय क्षण अहाँके मोन पड़ैए? कने सुनबियौ ने!

नइँ अशोक जी, एहन कोनो बात तँ नहि मन पड़ैत अछि। हमरा एहू मे सन्देह अछि जे हम एतेक लोकप्रिय छी। ओ तँ अहाँ सभक स्नेह अछि जे ई मान देने छी हमरा। अपन कथाकारक लोकप्रियताक किञ्चित आभास भेल अछि, जखन कोनो सुदूर स्थानसँ कोनो अनजान पाठकक प्रशंसाक पत्र भेटल अछि। मुदा से हिन्दी मे-हिन्दी पत्रिकामे कथा छपला पर। मैथिलीमे तँ अधिकांशतः लेखकके लोकनिक पत्र भेटल अछि, जाहिमे औपचारिकताक अंश प्रायः बेसी रहल अछि।

भाइ साहेब, कने बीचमे अहाँ संग चौल करबाक इच्छा होइये। अपन कथा चक्रव्यूह (एकटा तेसर) मे अहाँ कहैत छी, 'अफसर रैंकक लोक घर मे बेसी दब्बू होयबे करतैक।' ई बात अहाँ कोना कहैत छी? अहाँ अफसरो रहल छी आ लेखको छी। कने फड़िछबियौक ने?

हम, अशोक जी, अफसर रहल छी, मुदा ओहि सामान्यतः पारम्परिक अर्थमे नहि जाहिमे लोक 'अफसरी' करैत अछि। अहूँ ओहि अर्थमे अफसर नहि रहलहुँ अछि। तैं 'चक्रव्यूह' क उक्ति हमरा-अहाँ पर लागू नहि होइत अछि।

एहि उक्तिकेँ एना फड़िछा सकैत छी जे ऑफिसमे अफसरी झाड़' वला व्यक्ति किए अफसरी झाड़ैत अछि? एहि द्वारे जे घरमे पत्नी ओकरा झाड़ैत छैक। ओतुक्का हीनताकेँ ओ आफिसमे आबि अपन मातहत पर अफसरी झाड़ि 'कम्पनसेट' करैत अछि। 'रणे शूरा गृहे भीता' वला बात होइ छै। तैं कहलिऐ जे अफसर रैंकक लोक घरमे दब्बू होयबे करत।

मुदा जेना कहलहुँ, अशोकजी, अहाँके आ हमरा एहिसँ कोनो खतरा नहि अछि।

एकटा आर अहींक कहल बात। अन्तराल (झूठ-साँच) कथामे एकठाम आयल अछि 'प्रेमक बात मैथिलीमे कहनाइ कोनादन बुझाइत रहय। जेना मैथिलीमे नोकर के डँटबाक होइत छैक तँ लोक हिन्दीमे डँटैत अछि।' की एहि कथनमे अहाँ अपनो-एखनो विश्वास करैत छी? यदि विश्वास करैत छी त' किये?

हँ, करैत छी। देखियौ, हिन्दीमे जाहि सहजता आ स्वाभाविकताक संग नायक नायिकाकेँ कहि सकैत छै- 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, से मैथिली मे 'हम अहाँसँ प्रेम करैत छी' कहि क' देखियो ने कने उटपटांग जकाँ नहि लगैत अछि? तें मैथिलो नायक नायिकाकेँ प्रेमक अभिव्यक्ति लेल हिन्दिए वा अंग्रेजीक आश्रय लेब' पड़ैत छै। 'आइ लव यू' कतेक सरलता सँ अंग्रेजीमे कहल जा सकैत छै? 'आइ वान्ट टु मेक लव विथ यू' के मैथिलीमे कहनाइ तँ और मोशकिल छै। 'आओ, प्यार करें' केँ मैथिली मे की कहबै? अपन भाषा आ समाजक प्रकृति कोनो-कोनो बातक अभिव्यक्ति लेल बेसी अनुकूल होइत छैक आ कोनो कोनो अभिव्यक्ति लेल अनुपयुक्त। साहित्यमे विदेशी शब्दक प्रयोगसँ नाक-भौंह सिकोड़िनिहार लोक ई बात नहि बुझैत अछि।

भाइ साहेब, एक कथाकार आ संगहि व्यक्तिक रूपमे सेहो, मिथिलामे प्रेम करब अहाँ कें असुविधाजनक लगैए? ई मैथिली साहित्यक सीमा थिक अथवा मिथिला समाजक संकीर्णतावादी जातिगत विडम्बना? अहाँ त' मैथिलीक आधुनिक कथाकार छी। की मिथिला समाजमे आधुनिकताक अभाव मैथिली साहित्यकें एहि मामिलामे टांग घिचैत छैक?

मिथिलामे प्रेम करब असुविधाजनक नहि लगैत अछि। मैथिल लोकनि प्रेम करितहि छथि। जीवकान्तजी कतहु कहने छथि जे मिथिलामे लोक प्रेम नहि करैत अछि, छिनरपनी करैत अछि। हुनकर बात एक अर्थ मे ठीक भ' सकैत अछि। मुदा उदात्त प्रेमक रूप अपना समाजमे नहि होइत हो आ कि अपन साहित्यमे ओकर चित्रण नहि भेल हो से बात नहि छैक। 'प्रतिमा' आ 'मधुश्रावणी' उपन्यासकें दृष्टान्तक रूपमे राखल जा सकैत अछि। असलमे ई ने मैथिली साहित्यक सीमा अछि आ ने मिथिला समाजक संकीर्णतावादी जातिगत विडम्बना। किछु-किछु अपन जातिगत संस्कार कहि सकैत छी। मुदा असल बात छैक भाषाक प्रकृति। अंग्रेजीमे 'बास्टर्ड' शब्द बड़ सामान्य रूपें व्यवहृत होइत छैक। मुदा हिन्दी अथवा मैथिलीमे 'हरामी' वा 'दोगला' कहियौक तँ, कतेक भारी शब्द भ' जाइत छैक? अर्थ वैह छैक, मुदा शब्दक वजनमे कतेक अन्तर भ' जाइत छैक? येह कारण जे अंग्रेजी मे सम्भोगक वर्णन बड़ सामान्य रूपें कयल जाइत अछि, मैथिलीमे से करियौक, तँ अश्लील भ' जायत।

आधुनिकताक अभाव हमरा सभक एहि मामिलामे टाड. घिचैत अछि, से नहि कहि सकैत छिऐ ओना। प्रेम तँ एकटा चिरंतन शाश्वत भाव छैक, जाहिसँ चाहियो क' हम सभ फराक नहि रहि सकैत छी।

अहाँक कथा 'बिचला समय' (एकटा तेसर) मे साम्प्रदायिक तनाव, दंगाक पृष्ठभूमिमे समाज आ मनुक्खक पराभव, एक-दोसरक प्रति शंका, दुरावक वर्णन अछि। कथानायक एहि सभसँ छटपटाइत अछि। ओ मानैत अछि जे सभ किछु फेर पहिने जकाँ भ' जयतैक। मुदा ई बिचला समय बेकार, निरर्थक, घिनाओन अछि। अहींक शब्दमे 'ओकर बस चलैक तँ बिचला ई दिन कॉपीक पन्ना जकाँ नोचि

फराक क' दैक। नेनामे ओकर हिस्सक रहैक कॉपी पर लिखैत काल कोनो पन्ना जँ कनेको कटखुट भ' जाइक तँ ओ चर्र सँ ओहि पन्नेके फाड़िक' कापीसँ बाहर क' देअय। की अहाँक ओ कथानायक आइयो अहाँक 'आइ काल्हि परसू' क भयाओन, तनावग्रस्त, दंगाग्रस्त वातावरणसँ भरल समय के 'बिचले समय' मानत? कटखुट भेल पन्ना जकाँ ओकरा चर्रसँ फाड़ि क' बाहर क' देत? की लगैये अहाँके?

'बिचला समय' क समय आ 'आइ काल्हि परसू' क समयमे किछु अन्तर छैक। दंगाक अवधिक एकटा सीमा होइ छैक, जाहिमे ओ बन्हायल सिकुड़ल रहैत अछि। ओकरा अधिक आसानीसँ नोचि क' फाड़ल जा सकैत अछि। 'आइ काल्हि परसू' क भयाओन आ तनावग्रस्त समय एकटा दौर छैक, प्रवृत्ति छैक, जे बहुत दूर धरि पसरल छैक, दंगाक समय जकाँ सीमित नहि छैक। तँ ओकरा ओना चर्रसँ फाड़ल नहि जा सकैए। एकरा भीतर गहींर धरि जाय पड़त।

समाजमे व्याप्त एहि तरहक वातावरण के बदलबाक मादे अहाँक कथाकार मोन अथवा लेखकीय दायित्व कतबा आ कोना स्पन्दित होइये? की मात्र सदिच्छा अथवा शुभकामना धरि दायित्वबोध सीमित रहबाक चाही? की नीक दिन फेर घुरबे करतेक से आस्था राखि मोनसँ एहि समय के फराक क' लेबाक चाही? अथवा लोक के एहि वातावरण के बदलबाक लेल प्रेरित प्रोत्साहित करबाक चाही? रस्ता सुझेबाक चेष्टा करक चाही? बदलावक नेतृत्व करक चाही? एहि मादे लेखकीय दायित्वक सीमा कते धरि अहाँ मानैत छी? आ कियेक?

साहित्यकार तँ अपन सहित्येक माध्यमसँ वातावरणकें बदलबाक प्रयासक' सकैत अछि, से करबाक चाही। नेतृत्व करबाक उत्साह जँ ओ राखत, तँ प्राय: अपन साहित्यिक धर्मसँ च्युत भ' जायत। अहुना साहित्यक माध्यमसँ जे बदलाव अबै छै से एना सोचि विचारि क' नहि। सदिच्छा आ शुभकामने साहित्यमे ओ शक्ति आनि सकैत छै, जे बदलावक कारण बनैक। रास्ता सुझैबाक वा प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक नेआर ल 'क' प्रभावकारी साहित्य नहि रचल जा सकैत अछि। ओकर हाल वैह होयतैक जे झंडा आ डंडाक संग आब' बला साहित्यक भेलैक।

भाइ साहेब, अहाँक पाँचटा कथासंग्रह आबि चुकल अछि। एक आदि एक अन्त, झूठ-साँच, एकटा तेसर, आइ काल्हि परसू आ एकदम टटका मे अनुलग्न। एहिमे कुल उन्नासी कथा संग्रहीत अछि। किछु आर प्रकाशित-अप्रकाशित अछि। आइ, एहि घड़ीमे हम अहाँसँ पूछ' चाहब, अहाँक कथा कोन रूपें समाजसँ जुटल अछि? मिथिला समाज जँ अहाँक कथामे अपनाके देख' चाहय, ताक' चाहय त' की अहाँ कोनो सहायता कर' चाहबैक। अथवा एहि काज लेल आलोचक, समीक्षक के भार देबनि?

कथा हमर कोन तरहें समाजसँ जुटल अछि, से हम की कहू? समाजे कहत। हम ठीके कोनो सहायता नहि कर' चाहबै। सीमक्षको कें हम नहि भार देबैन्ह। मिथिला-समाज कतहु-कतहु हमर कथामे अपनाकेँ देखलक अछि, से पाठकक पत्रसँ हमरा बूझल भेल अछि।

अन्तमे, अपन पाँचम कथा संग्रह 'अनुलग्न' क संग कथाक प्रतिवेदन प्रस्तुत करैत निष्कर्षमे की कह' चाहब अहाँ? की अहाँके निष्कर्ष लेल छठम संग्रह निकालबाक आवश्यकता अनुभव होइत अछि? यदि होइत अछि त' कियैक? यदि नहि होइत अछि, भाइ साहेब त' से किये?

'अनुलग्न' क संग हम अपन कथाक कोनो प्रतिवेदन नहि प्रस्तुत कयने छी। अहुना निष्कर्षमे हम नहि किछु कह' चाहब। छठम संग्रह तँ निकालबे करब, मुदा निष्कर्ष लेल नहि। निष्कर्ष तँ अहीं सभ कहब।

(सन्धान-1, जनवरी 1997)

卐

धूमकेतुसँ अशोकक संवाद

मिथिलाक सामाजिक विकासक क्रम 'छिन्नमस्ता' भ' चुकल अछि

['हम मानैत छी जे लेखकक व्यक्तित्व कोनो तरहें झूस नञि बनि जाइत छैक, आ ने लेखक कोनो विशिष्ट प्राणी बनि जाइत अछि। रचनामे अन्ततः लेखन दर्शने प्रष्फुटित होइत अछि। एकरा एना क' कही, जे जीवन जीबैत-भोगैत त' सभ अछि। रचनाकार जीवन रचितो अछि। यैह रचबाक प्रक्रिया हमरा जनैत हुनक विशेषाधिकार सेहो छनि। रचनामे निर्वैयक्तिकताके दर्शनक स्तर पर त' बूझल जा सकैत अछि। मुदा ततबे धरि जाहिसँ मूर्ति लसि धरय।'

लस्सा सन सटि जाइबला शब्द-शिल्पी कथाकार धूमकेतुक चिन्तक-व्यक्तित्व एहि संवादमे जेना उभरिक' आयल अछि, से सभ किछु के खारिज कर'बला अथवा गौरवे-आन्हर मानसिकताकें समुचित दृष्टि द' सकैत अछि।]

भाइ, मैथिलीक अहाँ लोकप्रिय आ प्रतिष्ठित कथाकार छी। पहिने 'अगुरवान' त' हेबनि मे 'छठिपरमेसरी' कथा अहाँक ख्यातिके अकास ठेका देलक अछि। अगुरवानसँ छठिपरमेसरी धरिक कथा यात्रामे केहेन अनुभव करैत छी अहाँ?

'अगुरवान' सँ 'छठिपरमेसरी'– बात छुटैए। एकटा कथा आएल छल 'दीदी'। प्रायः उन्नैस सए बावन के चतुर गृहस्थकेँ ध्यान आबि गेल छलनि जे दीदी के दायभागसँ वंचित शुरूहे मे क' लेब उचित हेतनि। 'अगुरवान' दोसर कड़ी मानल जा सकैत अछि आ 'छठिपरमेसरी' एक दृष्टिएँ तेसर कड़ी। ई हम मात्र कथा संरचनाक दृष्टिएँ टा नहिं, एकटा सीसियोलॉजिकल दृष्टिएँ सेहो कहि रहल छी।

भाइ, अहाँ मानैत छी जे स्वभोगित खिस्सा सभसँ प्रामाणिक थिक। अपन कथा-यात्रामे एहि प्रामाणिकताक निर्वाह कतेक धरि क' सकलहुँ अहाँ? संगहि स्थिति, भाव अथवा चरित्रकेँ तटस्थ भावें भोगबाक लेल कहेन जरब उठाब' पड़ल अहाँकँ?

दू-तीन टा घटना मोन पड़ैत अछि। पंडिताइनक हत्या भ' गेलनि त' घंटासँ ऊपरे अनेर आँखिसँ नोर थम्हबे नञि करए। एकटा बच्चा पाबनिक नबेद खा लेलकै तत्जन्य जे ओकरा प्रताड़ना देल गेलैक, से आदरणीय पं. गोविन्द झाकेँ कूही भ' क' कनैत देखने रहियनि। एकटा कथाक नायिकाक अकस्मात् 'वाक्' हरण भ' जाइत छैक त' घंटो हमर वाक् हरण भ' गेल छल। एकटा 'भोज' मे बौआ सभकेँ रसगुल्ला खाइक लेल लिलसा अंठौने, देखने रहियै त' बहुतो दिन तक रसगुल्ला खाएले नञि हुअए।

ओना हमर ई मान्यता थिक जे वास्तविकताक अनुभूत ज्ञान रचनात्मक कल्पनाक आधारशिला थिक। जे रचै छी तकरा त' चेतनाक स्तर पर भोगैक बूता चाही। प्रामाणिकता जँ स्वत: प्रमाणित नञि थिक त' रचना कहै मे कने संकोच होयत।

'जरब' की? वैह त' रचनाक लोकोत्तर उपलब्धि थिक। ओना जँ बूझी, प्रत्येक रचना रचबाक ताल्लुक रखैत अछि, आ से रचनाकारक नितांत वैयक्तिक मानल जेबाक चाही।

भोगकेँ अहाँ कदाचित सर्वोपरि मानैत रहल छी। की आइ अहाँ अनुभव करैत छी जे भरि जीवन तलवारक धार पर चलल छी? कोनो अफसोचो अछि अहाँके?

भाइ, हमरा हेमिंग्वेक पात्र स्मरण अबैत अछि। जे भरि-भरि दिन बंसी पथने दूर-दूर समुद्रमे झिलहोड़ि लैत रहै छल, आ जँ माछ फँसै त' तेहेन भयावह जे जान परक गाहकि। मुदा मछबाहि जँ मलाह करय नञि तँ करय की?

अफसोचक प्रश्न कत' छै? भोग त' हेमिंग्वेक नियति थिकनि, समुद्र 'शान्त रह' वा उद्वेलित।

भाइ, लेखक व्यक्तियो रहय आ रचनामे निर्वैयक्तिकताक निर्वाह क' सकय ताहि लेल की सभ आवश्यक मानैत छी अहाँ? भोगक लालसा आ तटस्थ भावक बीच कोना संतुलन बनाक' राखल जा सकैत अछि?

हम मानैत छी जे लेखकक व्यक्तित्व कोनो तरहें झूस नञि बनि जाइत छैक, आ ने लेखक कोनो विशिष्ट प्राणी बनि जाइत अछि। रचना मे अन्तत: लेखन दर्शने प्रष्फुटित होइत अछि। एकरा एनाक' कही जे जीवन जीबैत-भोगैत त' सभ अछि, रचनाकार जीवन रचितो छथि। यैह रचबाक प्रक्रिया हमरा जनैत हुनक विशेषाधिकार सेहो छनि। रचनामे निर्वैयक्तिकताके दर्शनक स्तर पर त' बूझल जा सकैत अछि, मुदा ततबेधरि जाहिसँ मूर्ति लसि धरय।

नञि, नञि, 'लालसा'क अनुराग त' बिच्चेमे सभके छहोछित क' देत। तखनि त' 'तटस्थता' वा 'संतुलन' इत्यादिक प्रश्ने नहि रहि जाइत छैक।

भाइ, की अहाँ मानब जे अहाँक रचना-प्रक्रिया अहाँसँ बेसी कथा नहि लिखेबाक लेल उत्तरदायी अछि? प्रक्रिया परिणाम पर भारी पड़ि गेल अछि? अथवा एकर मूलमे आलस्य अथवा सुस्ती अछि?

ध्यान नञि गेल छल। कतेक बेर एहनो भेल अछि जे मोन-मोन भेल जे एकटा खिस्सा लिखलौं, मुदा लिखल गेल नहियें। अहुना रचना हमरा लेल प्रसव वेदनासँ कम नञि होइत अछि। आइ राइट ओनली व्हेन आइ मस्ट तैं बात अंठबैत रहैत छियैक। एतबा मानब जे जीवन जँ कोनो दोसर तरहें बीतल रहितए त' थोड़ेक आर कथा लिखने रहितहुँ। ओना आलस्य हमर स्थायी भाव रहल अछि। तैयो, 'जो मिला गया उसी को मुकद्दर समझ लिया'।

ओना लिखल कम नहि अछि। एखनहु दू टा कथा संग्रह नीक कलेबर बला तैयार अछि। तकर अलावे उगरा-पुगरा मिलाक' एकटा आर नीक संग्रह तैयार भ' सकैत अछि। अनापो-सनापो कम नहि लिखल अछि।

भाइ, अहाँक एकटा कथा अछि 'कुलटा'। हमरा जनैत एहि जोड़क कथा मैथिलीमे बहुत कम अछि। फुलिया सन पेशेबर वेश्यासँ अहाँ एहन त्यागक कल्पना कोना केलहुँ। की अहाँ मानैत छी जे विपन्न लोकक नैतिकता दोसर होइत छैक? महान आ सर्वस्व त्याग एहन लोक द्वारा भ' सकैत अछि?

जाहि कथाक चर्चा क' रहल छी से आचार्य रमानाथ झाक ध्यान आकर्षित केने छलनि, आ आचार्य काञ्चीनाथ झा त' 'सगर समान पुत्रक' आशिवचन देने छलाह। ध्यान पर दी भाइ, शरतचन्द्रक पात्रके 'नैतिकता'क जामा पहिराक' विचार कर' लगबैक त' बहुत मुश्किल हेतैक। विचारणीय

ई थिक जे केन्द्र मे की भाव परिपाक होइत अछि। अधिकांशत: ई देखबा मे आओत जे नैतिक मानदण्ड पर जे महान नञि निकलि पबैत अछि, सएह श्रेयश रचि जाइत अछि। तैं अहाँ जतेक ताछन्न दृष्टिएँ देखिक' फुलियासँ जे कल्पनो नञि करा सकलियै हमर रचनाकारकेँ से स्वीकार नञि छल।

नञि विपन्नताक प्रश्न नञि छै। फुलिया संपूर्णत: भरल पूरलि व्यक्तित्वक नाम थिक। प्राय: कारण ई, जे महान थिक, ओकरा संगे टुच्चापनिक कल्पना नञि हो।

भाइ, अहाँक कथा 'अगुरवान' के प्रसिद्ध समालोचक मोहन भारद्वाज मैथिलीक किछु अल्प परिमाणमे आयल सामाजिक चेतनाक कथामे सँ एक मानैत छथि। मुदा नब लोक सभ कहैत छथि जे ई चेतना स्त्रीक विरूद्ध अछि। एहि कथामे पतित पुरुष अछि तखन स्त्रीए के कियक दण्ड भेटलैक? जँ पुरुष आ स्त्रीक दृष्टिसँ नहियों देखी त' की ओहि स्त्रीके ओहि पुरुषक पतितपनाक कारण मानैत छी अहाँ?

पहिल बात त' हमरा ई स्पष्ट नहि कएल गेल अछि जे भारद्वाजजी कोन अर्थे आयल चेतनाक मीमांसा प्रस्तुत केने छथि। दोसर बात ई जे मात्र दण्डित हेबाक सवाल रहितै त' समाजशास्त्रक दृष्टिएँ बात पर विचार कएल जेतैक। अहाँक सम्पूर्ण दृष्टि समाजशास्त्रीय लागि रहल अछि। पण्डिताइन सधवा छथि, कोनो तरहें दण्डनीय नञि छथि। मुदा तथापि घटना घटित होइत छैक आ पण्डिताइन स्वयं नेहोरा करै छथिन जे हमरा काटि दे।

हमर दृष्टिमे मात्र एकटा मनोवैज्ञानिक प्रश्न टा छल। पुरुष दण्डित कएल जा सकैए तत्तेकटा गज्झा रहितैक त' गोटेक दर्जन पण्डिताइनक कथा प्रत्येक वर्ष लिखल जा सकैत छल।

अहाँ बहुत प्रश्न नञि पूछी त' माएक हत्या अइ लेल केलक जे माएके विछान पर संगे सुतैक सुविधा नञि छलैक। हम फेर कहब जे 'पतितपनाक' मीमांसा कत्तेको दृष्टिएँ संभव थिक।

भाइ, कहल गेल अछि जे हरेक युगक प्रचलित विचारधारा ओहि युगक प्रभावी वर्गक होइत अछि। मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे स्वतंत्रताक बाद प्रभावी वर्गमे परिवर्त्तन आयल अछि। ई परिवर्त्तन केहन अछि? की एहि प्रभावी वर्गक विकास भौतिक उत्पादनमे परिवर्त्तनसँ जुड़ल

अछि? मिथिलाक इतिहासमे कने पाछू जा क' एहि बात के अहाँसँ हम सून' चाहब। यदि परिवर्त्तन नहि आयल अछि त' किये? कोना?

हमर दृष्टि ई थिक जे कोनो विचारधारा सम्पूर्णत: युगक प्रभावी प्रतिनिधि नञि होइत अछि। संघर्षक क्रममे विचारधारा प्रभावी बनैत रहैत आ स्खलित होइत रहैत अछि। अंग्रेजी राजक उपरांत 'प्रभावी वर्ग' द्वारा अपन वर्गीय हित साधनक हेतु यथाविध कार्यकलाप होइत रहल। नाजिम हिंकमत जकरा फुदना, झुनझुना लिखलथिन अछि, स्वाभाविक छल जे मौलिक परिवर्त्तनक कोनो परिकल्पनाक प्रश्ने नञि छल। जे तथाकथित 'परिवर्त्तन' आयल ओ परिवर्त्तनक छद्म आ तैं परिवर्त्तनक विकृत रूप छल। स्वतंत्रताक बाद तैं सभसँ प्रमुख त्रासदी स्वतंत्रते छल।

जे परिवर्त्तन अपेक्षित आ आशान्वित दूनू छल तेकर भ्रूण हत्या भ' गेल। जे प्रभावी वर्ग भौतिक विकास उचङि लेलक परिवर्त्तन ताहिसँ एकांगी रूपे जुड़ल। निश्चित रूपें तकरां सामूहिक उत्पादकत्व कहब उचित नञि होयत।

मिथिलाक इतिहासक विषयमे बड़कीटा आ व्यापक प्रश्न पूछि देलौं भाइ। राजकमल मूइल छला त' हम एकटा पाँती लिखने रही– 'आब जे हेबाक से हेतैक, जे होइतैक से नहि हेतैक।' मिथिलाक सामाजिक विकासक क्रम छिन्नमस्ता भ' चुकल अछि।

'डिरेलमेंट'क की कारण कहू 'हुलिगन' वा सायाश बतहपन? हमरा क्राइस्टक पाँती कहाइत अछि– 'फादर फोरगिभ देम फॉर दे नो नौट व्हाट दे डू'। ओना हम साहित्येक विषयसँ सम्पृक्त रही से नीक। अर्थशास्त्रक 'जार्गन' दिस अहाँ हाँकी से अहूँक अभीष्ट नञि होयत।

भाइ, की अहाँके लगैये जे दरभंगा राजक चौअनियाँ खोरिस, कांग्रेसी राजक दलाली वृत्ति आ तकरवादक लम्पट तंत्रमे एक अन्तर्सबन्ध अछि? मिथिलाक बौद्धिक उत्पादन सेहो एकर प्रभावसँ नहि बचि सकल अछि। एहि प्रभावके कोना काछि क' फेकल जा सकैये?

भाइ, 'लम्पट-तंत्र' जाहि सीमा तक जा सकैत अछि ताहिमे कोनो रास्ता किएक ओ छोड़त? बल्कि कोनो दलाली कि खोरिस त' एकर हथियार थिक। ऐतिहासिक 'ट्रेजेडी' त' यैह ने थिक जे अपनालोकनिक तथाकथित 'बौद्धिक उत्पादन' सर्वांगसत: लम्पट-तंत्रक पृष्ठपोषण करैत

रहल। मुदा कोछिक' एकांगी रूपें कोनो प्रभाव के केना काटब संभव थिक। दोसर बात ई जे कोनो सामाजिक संस्थाक ऐतिहासिक आ तैं तात्कालिक महत्व होइ छै। इतिहास स्वयं टूटि-फूटि क' अपना के 'स्मूथ' बनबैत रहैत अछि। संगहि हमरालोकनिकेँ समाज सुधारक कार्यक्रमसँ बचबोक चाही-हमर तात्पर्य साहित्यकारसँ अछि।

ओहि प्रभावक काछि क' फेकबामे अथवा ओहि दिस ध्यान आकृष्ट करबामे मैथिली कथाक योगदान की भाइ, अहाँ उल्लेखनीय मानैत छी? यदि नहि त' किये? यदि हँ त' कोना?

श्रद्धेय योगानन्द बाबू शब्दस: त' प्राय: स्मरण नञि अछि, अपन उपन्यासक उपोद्घातमे लिखने छलाह, जे पीसाजी जँ मैथिलक प्रतिनिधि थिकाह त' जतेक शीघ्र हो भलमानुस समाप्त होथि, मुदा जँ भोलानाथ बाबू मैथिलक भलमानुसक प्रतिनिधि थिकाह त' सम्पूर्ण मिथिलामे भलमानुस भरि जाथु। हुनका लिखना त' बहुत दिन भेलनि, मुदा हम एखनहुँ कह' चाहब जे, जे जीवन के मूल्यवान बनबैत अछि, तकरा निखालिश काछिक' परिशुद्धताक आग्रह नञि करक चाही। जे प्रभाव अछि ओ स्वाभाविक रूप सँ अछि। ध्यान आकृष्ट करबाक खा-मखा चेष्टा कछइ सँ बेसी जड़िआइत। कमसँ कम हम सायास एहन प्रयत्न करैक पक्षमे नञि छी।

भाइ, की अहाँ एहिसँ सहमत होयब जे मिथिलाक लोक उद्यमसँ बेसी अनेक जड़ संस्कार आ अन्धविश्वाससँ परिचालित अछि? एहि कारणें ओकर शोषण सेहो होइत अछि? अहाँक 'छठिपरमेसरी' कथा एहि सन्दर्भमे हमरा ध्यानमे आबि रहल अछि। एहि शोषणसँ मुक्ति लेल अहाँक की सुझाव होयत?

प्रियवर हरेकृष्णजी किसिम-किसिमसँ शोषण, गरीबी आ धर्मान्धता सभहक सांगोपांग विश्लेषण केलनि अछि। हमरा सभसँ बेसी ओइ बौआक आँखि उद्वेलित करैत रहल जकरा ई विश्वास नञि, जे अन्तत: केरा ओकरा नञि पैठ हेतै। अरे, बाप, 'शोषण मुक्तिक' लेल आ ताहिमे हमर सुझाव! भाइ, खा-मखा लजा रहल छी।

भाइ, दिल्लीक प्रतिष्ठित कथा' पुरस्कारसँ सम्मानित अपन मूल्यवान कथाकेँ अहाँ 'एकटा मूल्यहीन कथा' कियैक कहलियैक?

कहाँ कहलियै, अन्तत: नञि ने कहलियै। 'दि डस्क एण्ड दी डॉन' कहलियै। भाइ, मूल्यवान कथा केकरा कहै छै? सम्मानित रचना की थिक? हमरा एकटा कथा मोन पड़ैत अछि। एकटा कलाकार लीखि देलकैक जे सर्वोत्तम चित्रक अंश प्रदर्शित कएल जाय। प्रात भेने चित्रक प्रत्येक भाग सर्वोत्तम रूपमे प्रदर्शित क' देल गेलैक। कलाकार दोसर दिन लीखि क' अन्वेषण केलक जे सभसँ असर्ध कोन भाग अछि। चित्रक प्रत्येक भाग पुन: असर्धतम रूपमे प्रदर्शित क' देल गेल छल। तें कोन सर्वोत्तम आ कोन असर्धतम् से त' उधो, मन माने की बात।

एहि बीचमे की सभ अहाँ पढ़ि-लीखि रहल छी? मैथिलीक कोनो खास रचनाक अहाँ उल्लेख कर' चाहब?

पढ़ैत-लिखैत नञि रही भाइ, त' शुद्ध क' बताह भ' जायब, ई बात फूट जे अधिकांश लोक मानै छथि जे हम पढ़ैक चलते बताह भ' गेल छी, पहिल बात। दोसर बात, ई जे हमर विषय वक्ठेठा अछि। पढ़ैत नञि रही त' विषयक संपर्क मे रहब कठिन। एतेक दिन आदत परि गेने त' आब रसो अपने विषयमे अधिक अबैत अछि। अहाँ प्राय: एक बेर चर्चा केने रही जे लेखन थोड़ केलौं अछि। आरोप पूरा-पूरी नहियों मानी, तैयो एतबा त' अवश्य हम मानि लेब जे अपन छुछुन्नर विषयक स्वभावक चलते जतबा सृजन कर्मकेँ अर्घ्य चढ़ेबाक चाहै छल से नहि क' सकलौं।

अइ बीचमे अमर्त्य सेन हमर सभसँ बेसी समय जियान केलनि अछि आ थोड़ेक महबूबुलहक। विनोद कुमार शुक्लक 'दीवार मे एक खिड़की रहती थी' अकादमी पुरस्कारसँ पूर्व, पढ़बाक सौभाग्य भेल छल।

किछु दिन भारतीय ज्योतिष बहुत मनोरंजक लागल। मुदा आखियासलयै त' प्राय: 'ई कथातत्वक कारणे नीक लागल छल।' पढ़ैत-तढ़ैत त' प्राय: यैह सभ रहै छी भाइ। लिखबैक जिम्मा हालमे चि. कानन कन्हेटने छथि। एकटा नेपाली जनजीवनक औपन्यासिक प्रयासमे लागल छी। रचबोक स्कोप त' अपन मातृभाषामे कम्मेसम छै भाइ, आ कि नञि?

हँ, एकटा उल्लेख्य रचना शैलेन्द्र कुमार झाक 'कथा-संग्रह' नजरि पर पड़ल अछि। लगैए दोहराक' पढ़' पड़त।

मैथिली कथा-यात्रामे अहाँ अपनाकेँ कत' ठाढ़ पबैत छी? ललित, राजकमल आ मायानन्दक बाद प्रभास, धूमकेतु आ राजमोहनक ट्रायो कहेन अछि? कोनो मन्तव्य?

भाइ, ठाढ़ पबै छी से कनियेटा बात नञि भेल। हम तञि गदगद छी। अहाँक स्नेह बलधकेल ट्रायो बना रहल अछि।

एहि बीच मे 25 दिसम्बर सँ 29 दिसम्बर धरि अहाँ साहित्य अकादमी आ सम्प्रति, पटनाक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवाद कार्यशालामे विशेषज्ञ रूपमे भाग लेलहुँ। कहेन अनुभव रहल? अनुवाद एवं आयोजन के आर अधिक सार्थक ओ उपयोगी बनेबाक लेल अहाँ कोनो सुझाव दिय' चाहब?

बहुत सुखद अनुभव रहल। एक तरहें बूझी त' पहिले-पहिल अंग्रेजीक खिड़की मैथिली पर खूजल छल। अइ बातक त' अनुभव हेबाक चाही जे मैथिलीक रचनाक माध्यमे अंग्रेजी भाषामे बात कहल' जा सकैत अछि। ई कतेक दृष्टिएँ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। अपन सांस्कृतिक अस्मिताक प्रक्षेपण भारत वर्षमे अंग्रेजीक माध्यमेटा सँ संभव थिक। दोसर ई अनुभव कहक छल जे मैथिलीक रचना जखनि बहुत 'ग्रीकोसेक्शन' आग्रहक संग प्रस्तुत कएल जायत त' ओकर मौलिक सुगंधि नष्ट भ' जेतैक। एहनो वैदुष्यपूर्ण कथा रचना उपलब्ध भेल जे कथासँ बेसी पाण्डित्य प्रदर्शन छल आ तञि ओकर कोनो अर्थे नञि रहि जाइ छल। मैथिलीक जे रचनाक स्वत: स्वाद छैक कोनो स्थितिमे, से जँ नष्ट भ' गेल त' पदार्थ 'ट्रान्सफोर्म' नञि भेल। अइ बातक अनुभव कार्यशालाक क्रममे कत्तेक बेर भेल। हमरा लोकनिकेँ अत्यधिक फूट नोटक उपयोग कर' पड़त। एकाधिक बेर त' हमरा जोर देब' पड़ल जे बरु फूटनोटक फुट्टे एकटा 'ग्लोशरी' द' देबाक चाही। मैथिली बहुत जीवंत भाषा छी आ ओकर सांस्कृतिक शब्द समूह व्याख्याक अपेक्षा रखैत अछि। तञि अनुवादक क्रममे मैथिलीक संग सरलीकरणक व्यामोह त्यागक चाही। बात श्रमसाध्य, से हम ध्यान दियाब' चाहब।

सुझाब त' सभसँ बड़का भाइ, ई जे किछु कएल जाए से सरिपौं कएल जाए, खाना-पूरी मात्र नहि। किमधिकम् विग्येषु।

शताब्दी बीति चुकल अछि। मैथिली कथाक उपलब्धिसँ अहाँ संतुष्ट छी? की सभ मैथिली कथामे अहाँके उपस्थित भेटैत अछि आ कि सभ एखनधरि अनुपस्थित अछि जेकर उपस्थितिक आकांक्षा अहाँ करैत छी?

शताब्दी बीतल रहए त' हम नेपालमे रही, ओत' एहन किछु नञि बूझि पड़ल जे किछु बीतल अछि। वास्तवमे जे उपलब्धि अछि से अछिये। मुदा एकटा अंतिम बात कह' चाहब भाइ, जे साहित्य जीवनक जाहि अंशके प्रस्तुत करैत अछि, तकरा कोनहुँ आन तरहें नहि कएल जा सकैत अछि। कालक्रममे जे व्यथा मनुख भोगैत अछि आ जकर इतिहास साक्ष्य नञि दैत छै, मनुखक सैह व्यथा साहित्य अक्षोणि जोगा क' रखने रहैत अछि।

आकांक्षा त' अइ भाइ, जे मैथिल जनक कथा बिना कोनो लाग-लपेटके आ चोरोने-नुकोने कहि सकी, कहैक सामर्थ्य आ साहस जाबत जीवन उपलब्ध रहितए। शताब्दी-तताब्दी त' बीतिते रहतैक। हम मैथिल जनक व्यथासँ अपनाकेँ सम्पृक्त रखैत छी। उपलब्धिक मीमांसा पंडितजन करथु।

(सन्धान- 4 जुलाई, 2000)

卐

मैथिलीमे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि

['जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि। हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि। जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि।'

समकालीन मैथिली कथामे सुभाषचन्द्र यादवक अपन विशिष्ट स्थान अछि। पूर्ववर्त्ती आ आजुक पीढ़ीक कथाकारक बीच जे किछु कथाकार सभ अर्थे एकटा सेतुक निर्माण केलनि ताहिमे सुभाष अन्यतम छथि। मैथिलीक आजुक रचनाकार मध्य उर्जा आ उष्मासँ भरल सर्जक तारानन्द वियोगी एहि संवादमे सुभाषचन्द्र यादवक गम्भीर, संतुलित आ सरल-सहज व्यक्तित्वकें सोझाँ अनलनि अछि।]

सभसँ पहिने तँ भाइ, अहाँकेँ हम बधाइ दै छी जे एक पैघ अन्तरालक बाद अहाँ पुन: कथा लिखब शुरू कलहुँ अछि। बहुत-बहुत वधाइ। एहि बीच के अन्तरालमे अहाँ लगातार चुप रहलहुँ। प्रसंगवश, एतय हमरा अहाँक कथा-संग्रह 'घरदेखिया'क पहिल कथा 'अभाव' मोन पड़ैत अछि। ओहि कथामे अहाँ देखेने रहियै जे कोनो लेखकक लेखन-उर्जा कोना सुन्न भ' जाइ छै, स्रोत सूखि जाइ छै आ लाख-चेष्टाक अछैत ओ लीखि नहि पाबैए। अहाँ असहमत नहि होयब सम्भवत: जँ हम कही जे ई अनुभव वस्तुत: अहाँक अपने रचनाकारक अनुभव थिक। की कारण होइ छै एहि स्रोत सुखबाक? निज अहाँक संग केहेन अनुभव रहल अछि एहि मादे?

हम सभसँ पहिने उपन्यास लिखने रही। हिन्दीमे। साठि सत्तरि पृष्ठक भावुक आ रूमानी उपन्यास। ओ हेरा गेल। फेर आइ धरि कोनो उपन्यास

नहि लिखलहुँ। उपन्यास लिखबाक बारे मे कतेको बेर सोचैत छी। एक बेर किछु तैयारियो कयने रही, मुदा छूटि गेल।

ओहि पहिल हिन्दी उपन्यासक बाद हम मैथिलीमे कथा लिखब शुरू कयलहुँ। पहिल कथा छल 'गजखेर आ मजमूंगर'। ई कथा 1968क आरम्भ मे 'मिथिला मिहिर' मे छपल। तकर बादे कहियो कविता लिखब शुरू कयने होयब। हमरा इहो मोन नहि अछि जे हमर पहिल कविता कोन रहय। मिथिला मिहिरक फाइल देखलासँ पता चलि सकैत अछि। दू-तीन साल कविता लिखैत रहलहुँ। किछु कविता हिंदियोमे छपल छल। फेर कविता छूटय लागल। बुझायल जेना ई विधा हमर नहि छी। कविताक निजी अभिव्यक्ति-पद्धति विकसित करब हमरा कठिन बुझाएल। हमरा लेल गद्य-लेखन जेना स्वत: स्फूर्त छल तेना कविता नहि। कविता-लेखनसँ विमुख हेबाक एकटा कारण इहो भ' सकैत अछि।

'अभाव' हमर काव्य-लेखनक परित्यागक एकटा मनोदशाकेँ चित्रित करैत अछि। ई कथा 71 ई. मे लिखल गेल छल। भरिसक एहि कथाक बाद हम कविता लिखब छोड़ि देने छलहुँ। मुदा अहाँकेँ ई जानि आश्चर्य होयत जे हम पच्चीस सालक बाद 1996 मे पाँच टा कविता लिखलहुँ। ई कविता कोनो स्वत: स्फूर्त आंतरिक प्रेरणा अथवा सर्जनात्मक व्याकुलताक परिणाम नहि छल; आकाशवाणीक अनुरोध पर लिखल गेल छल। लेकिन तकरवाद किछु दिन धरि काव्यात्मक आवेगक अनुभव होइत रहल। कैकटा विषय आ तदनुरूप काव्यात्मक ढाँचा दिमागमे चक्कर काटय। मुदा पच्चीस सालक अभ्यासहीनता आ कथा लिखबाक हिस्सक बाधा बनि गेल। तकरवादसँ अखनधरि फेर कोनो कविता नहि लिखने छी आ ने भविष्यमे लिखबाक नेआर अछि। अनेक रचनाकार अपन लेखनक आरम्भ कवितासँ करैत अछि आ आगू चलिक' मात्र गद्य लिख' लगैत अछि। मैथिलीमे राजमोहन झा आ प्रभास कुमार चौधरी एहने रचनाकार छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा ई बुझाइत अछि जे जाहि विधामे लेखकक स्वाभाविक रूचि होइत छैक, ताहिमे ओ लिखैत रहैत अछि आ जे रूचिक अनुकूल नहि लगैत छैक तकरा छोड़ि दैत अछि। किछु लेखक अनेक विधामे लिखैत अछि। धूमकेतु, जीवकान्त, मायानन्द मिश्र, रमानन्द रेणु, सोमदेव, धीरेन्द्र आदि एहने लेखक छथि।

लेखन एक विधामे कयल जाय या अनेक विधामे—ई रूचि आ अभ्यास पर निर्भर अछि।

मात्र रुचि आ अभ्यास पर? रचनात्मक उत्तेजना पर नहि? कोनो दृश्य अथवा स्थिति हमरा आवेगपूर्ण बना देलक आ हम लिखबा लेल सोचय लगलहुँ। ई निर्णय तँ बाद मे हेतै जे ओहि वस्तुकेँ हम कोन विधामे लिखी। प्राथमिक बात तँ अछि आवेग कि हमरा लिखबाक चाही...।

लेखनक प्राथमिक शर्त्त ठीके सृजनात्मक आवेग या प्रवृत्ति होइत अछि। मुदा मात्र सहज प्रवृत्ति पर्याप्त नहि अछि। अध्ययन या लेखनाभ्यास सेहो जरूरी होइत अछि। अध्ययन आ अभ्यास द्वारा लेखक अपन सृजनात्मक क्षमताक विकास करैत अछि। रचनाकार कतेको विधाकेँ अजमाबैत अछि। मुदा ओकर गुणक सर्वाधिक विकास कोनो एके विधामे होइत छैक। भारतीय आ विश्व साहित्यमे एकर अनेक उदाहरण अछि जे अधिकांश रचनाकारक कलात्मक श्रेष्ठता कोनो एके विधामे सर्वाधिक पल्लवित-पुष्पवित भेल अछि।

अहाँ ठीक कहै छी भाइ। एकाग्रता आ एकनिष्ठता ओहुनो विशिष्टता आ विशेषज्ञताक मूल थिक। मुदा, सभक जड़िमे तँ अछि जे लेखक लिखय। उद्यम करय। आर बात सभ तँ एकर बादक बात थिक। एहिठाम दू टा अलग-अलग स्थिति हमरा देखार पड़ैत अछि। एक तँ ई जे हम लिखी तँ किए लिखी? यानी कि लिखबाक कारण? आ दोसर, हमरा नहि लिखबाक चाही तँ से किएक? यानी कि नहि लिखबाक कारण? निश्चित रूपसँ अलग-अलग रचनाकारक लेल एहि मे सँ अलग-अलग कारक जवाबदेह होइत छैक। अहाँक बौद्धिक क्षमता अचूक अछि भाइ! हम एहि प्रश्नक सन्दर्भ मे अहाँक विश्लेषण सुनए चाहै छी। खास क, क' मैथिली सन भाषामे जतए कि लेखन करबाक हेतु उत्प्रेरक कारण सभक घोर अभाव छै, लेखकलोकनि किए लिखब छोड़ि दै जाइ छथि आ कि किए कलम धेने रहै छथि? लेखकक अपन जीवन-शैली तँ सेहो संभवतः एकरा लेल उत्तरदायी हेतै।

जखन क्यो लिखब शुरू करैत अछि त' ई नहि बुझैत अछि जे ओ किएक आ कोन कारणे लिखैत अछि। ओ प्रेरणावश लिखब शुरू करैत अछि आ आगाँ चलिक' लिखबाक कारण आ उद्देश्य बुझैत अछि। अधिकांश रचनाकार अपन लेखनक आरम्भ आत्माभिव्यक्ति, आत्मसंतोष आ यशक लेल करैत अछि। एहन लेखक विरले क्यो होयत जे लेखन आरम्भ करबा सँ पहिनहि साहित्यक आदि अंत अर्थात साहित्य नामक संवृति (फेनोमेनन) के फरिछा क' बूझि लिअय आ तकरवाद साहित्य-सृजनमे प्रवृत्त हुअय। लेखकके परम्परासँ साहित्यक मॉडेल या नमूना भेटैत छैक आ ओ ओहि मॉडेलमे अपन बोध एवं अभिरूचिक अनुसार परिवर्तन करैत साहित्य लिखैत अछि।

लिखबाक एकमात्र सामान्य कारण त' इएह अछि जे साहित्य मानव समाज लेल उपयोगी होइत अछि। साहित्यक उपयोगिताक अनेक रूप आ स्तर होइत अछि। मनोरंजनसँ ल' क' सामाजिक परिवर्तन धरि। कोनो रचनाकार एहि कारणे नहि लिखैत अछि जे लिखलासँ कोनो सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति भ' जेतैक। एकर अर्थ ई नहि जे क्रान्तिमे साहित्यक कोनो भूमिका नहि होइत छैक। लेखकमे मनुक्खक प्रति असीम प्रेम होइत छैक आ ओ अपन लेखनसँ जीवन के अधिकाधिक मानवीय आ सुन्दर बनेबाक प्रयत्न करैत अछि।

रचनाकार जाहि भाषामे लिखैत अछि, ओहि भाषाक सामाजिक स्थितिसँ निरपेक्ष नहि रहि सकैत अछि। मैथिलीक सामाजिक परिस्थिति साहित्य-लेखनक बहुत अनुकूल नहि अछि। मैथिलीमे प्रकाशक, वितरक आ सामान्य पाठकक अभाव अछि। कोनो दैनिक समाचार-पत्र नहि अछि। स्थायी आ नियमित पत्रिका नहि अछि। जे थोड बहुत पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन होइत अछि से सभ व्यक्तिगत प्रयास आ त्यागक फल अछि। एहि परिस्थितिक प्रत्यक्ष तात्कालिक प्रभाव ई पड़ल अछि जे मैथिलीमे छोट रूपवंध वला रचना, जेना कथा ओ कविता बेसी लिखा रहल अछि, जाहि सँ ओ कम सँ कम पत्रिकोटा मे छपि सकय अथवा गोष्ठीमे सुनायल जा सकय। धूमकेतु, महाप्रकाश, आ रमानंद रेणुक उपन्यास कतेको सालसँ लिखल पड़ल अछि आ प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि। एहि सभसँ लेखकक उत्साह मारल जाइत छैक आ ओ लेखनक प्रति उदासीन भ' जाइत अछि।

लेखन बंद करबाक एकटा कारण उचित महत्व आ प्रतिष्ठा नहि भेटब होइत छैक। जेना ललित संगे भेलनि। मैथिलीमे कृतिक मूल्य निर्धारण अधिककाल साहित्येतर दृष्टिसँ होइत अछि। सम्बन्धवाद, व्यक्तिगत स्वार्थ, गुटबाजी ईर्ष्या-द्वेष, ललित एहि सभक शिकार भेलाह आ लिखब छोड़ि देलनि। साहित्यक राजनीतिसँ दूर रहनिहार मैथिली लेखक आइयो एहि सभक मारल अछि। मैथिली साहित्य आ सांस्कृतिक उन्नयनमे लागल प्रमुख संस्था सभ पर एहन तत्व काबिज अछि जे साहित्य आ संस्कृतिक बदलामे व्यक्तिगत स्वार्थक उन्नयन क' रहल अछि। परिस्थिति लेखनक प्रतिकूल अछि। रचनाकार एहि कारणे लीखि रहल अछि जे ओ मैथिली साहित्य आ संस्कृतिके जिआ क' राखय चाहैत अछि।

सही बात। लेखक जँ जिद पकड़ने अछि जे हम लिखबे करब तँ एकरा पाछां बहुत गहन करूणापूर्णताक संग ओकर ई चेष्टा छै जे साहित्य आ संस्कृतिकेँ जिआ क' राखल जाय।

एम्हर अहाँक कथा-लेखनक दोसर दौर शुरूह भेल अछि। अहाँक दू-तीनटा एम्हरूका कथा सभ पढ़लहुँ अछि। एहिमे एकटा बात सभसँ बेसी हमर ध्यान आकृष्ट केलक। आ से थिक कथाक पठनीयता। कथामे बहुत बेसी प्रवाह छै आ फोर्स छै। सरल आ सहज शैलीक तँ अहाँ मास्टरे छी। मुदा अहाँक प्रथम दौर के कथा सभ जे हम पढ़ने छी ताहिसँ बहुत बेसी पठनीयताक गुण एहि मे छै। पहिने तँ हम जानए चाहब जे की ई अहाँक सावधान प्रयोग थिक? एकरा पाछां कोनो गँहीर प्रयोग, कोनो निष्पति..... आ दोसर एहि दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट करब जे एहि कथा सभक जे नायक अछि (जेना 'बात' कथाक नायक) तकरामे चमत्कृत वा हतप्रभ रहि जेबाक बोध छै। दुनियाँ तते बदलि गेल अछि जे ओ चकित-विस्मित अछि। सामंजन करबामे ओकरा असोकर्य भ' रहलैए तँ, हमरा ईहो देखाइत अछि जे एहि बदलल समयक चित्रे प्रस्तुत कएनाइ नायकक हतप्रभते देखेनाइ कथाक मूल उद्देश्य थिक। कथानकक पाछां एक ठोस कथ्य होइक, प्रभावान्विति द्वारा तकरा पल्लवित करबाक जतन हो- ई जे समकालीन समझ अछि कथा कलाक सम्बन्धमे, तकरा अहाँक कथा लेखन तोड़ैये। एहि पर अहां की सोचै छी?

अहाँ ठीक लक्ष्य कयने छी हमर कथाक ई दोसर चरण थिक। 'घरदेखिया' संग्रहक बादक लिखल कथा सभक गढ़नि किछु भिन्न अछि। ओहिमे अपेक्षाकृत बेसी सावधानी आ सर्तकता अछि। ई परिवर्तन आ विकास एकटा स्वभाविक प्रक्रिया अछि। रचनाकार शिल्पक प्रति उत्तरोत्तर सजग आ सचेष्ट होइत जाइत अछि।

पठनीयता साहित्यिक कृतिक पहिल शर्त होइत अछि। कोनो रचनाक कथ्य कतबो महत्त्वपूर्ण आ मूल्यवान किएक नहि हो जँ रचनामे पठनीयता नहि अछि त ओ रचना बेकार अछि। चाहे लोककथा हो अथवा शिष्ट कथा, खिस्सा सदैव संसारक सर्वाधिक रोचक आ मनलगू वस्तु रहल अछि। श्रेष्ठ कथा रोचक होइते अछि, मुदा मात्र रोचकता कोनो कथाके श्रेष्ठ नहि बना सकैत अछि।

'बात' कथाक नायक ने त' हतप्रभ अछि ने चमत्कृत। ओ दुखी आ उदास अछि। ओ धोखा, प्रपंच आ हिंसासँ दुखी अछि। ओकर प्रतिवाद करैत अछि। अमानवीयताक प्रति विरूचि आ विकर्षण उत्पन्न करैत अछि। कथाक इएह प्रेरक भाव या कथ्य अछि।

रचनाक परिणति जाहि संवेदना, भाव आ विचारमे होइत अछि, सएह ओकर कथ्य होइत छैक। कथ्य के अज्ञात रूपसँ पाठकक मनोरचनाक अंग बनि जयबाक चाही। हरेक कथाक पाछां कोनो ने कोनो प्रेरक भाव होइत छैक। एहि प्रेरक भावक बिना कोनो कथा लिखायले नहि जा सकैत अछि आ इएह प्रेरकभाव कथाकेँ महत्व आ सार्थकता प्रदान करैत छैक।

हमरा मोन पड़ैए जे 1983मे जखन 'घरदेखिया' छपल तँ एकर व्यापक स्वागत भेल रहै। खूब सराहल गेल रहै। आइ हमरालोकनि एकरा पढ़ै छी तँ एक बात तँ ई लागैए जे अहाँ अपन पीढ़ीक सभसँ काबिल कथाकार छी तँ दोसर दिस ईहो देखार पड़ैए जे अहाँ सर्वाधिक दुविधाग्रस्त लेखक सेहो छी। दुविधाग्रस्त एहि अर्थमे कहै छी जे अहाँ अपन जगह निर्धारिते नहि कए पेने छी। कृत्रिमतापूर्ण आ भागदौड़-टूटन-भरल शहरी जीवन एक दिस तँ युग-युगसँ मूक-बधिर-पंगु बनल दलित जनताक जीवनक राग-विरागक संवेदना दोसर दिस। अहाँ एहि दुनूक बीच डोलैत छी आ ई दुविधाग्रस्तता अहाँक ऊर्जस्विताकेँ कुंद करैत रहल अछि। अहाँकेँ एहन महसूस होइये?

लेखक जीवनक सम्बन्धमे लिखैत अछि। ओ जीवन शहरी अछि वा ग्रामीण से महत्वपूर्ण नहि होइत छैक। लेखक अपन अनुभव क्षेत्रसँ विषयकेँ उठबैत अछि। ई अनुभव क्षेत्र शहरी भ' सकैत अछि, ग्रामीण भ' सकैत अछि या दुनू भ' सकैत अछि। एहि मे दुविधाक कोनो बात नहि अछि, ने एहिसँ लेखकीय ऊर्जाक अपव्यय होइत अछि। 'घरदेखिया' संग्रह मे जँ एक दिस घरदेखिया, काठक बनल लोक, झालि, फँसरी आदि ग्रामीण जीवनक लोकप्रिय कथा अछि त' दोसर दिस डर, टिप, लिफ्ट, रामनिहोर आदि शहरी जीवनक लोकप्रिय कथा अछि।

सातम दशकमे हिन्दीमे 'अकहानी' आन्दोलन चलाओल गेल रहै। 'अकहानी' माने कि परम्परा निर्धारित आ सामान्य-समर्थित गुणधर्मसँ मुक्त कहानी। कथाक विषयवस्तु आ शिल्प दुनूमे व्यापक तोड़फोड़ एहि कालखण्डमे कएल गेलै। 'तोड़फोड़' जे हम कहै छी से निगेटिभ सेन्स मे नहि कहै छी, एकरा विकासेक सन्दर्भमे लेल जाय। मैथिलीमे ई चीज आन्दोलन चलाक' नहि, बहुत सहज आ स्वाभाविक रूपमे एलै। हँ, एहि आगमनमे थोड़े बरखक देरी जरूर भेलै। हिन्दीमे राजकमल चौधरी सेहो एकर मुखर प्रयोक्ता बनलाह। मैथिलीमे ई अकहानी-तत्व जतए हमरा सर्वाधिक प्रस्फुटित रूपमे देखार पड़ैत अछि, से थिक अहाँक बहुतो कथा सभ। 'अभाव', 'टिप', 'डर', 'धुंध मे घटना' आदि-आदि कथा हमरा एतय मोन पड़ैए।

तँ हम अहाँसँ जानए चाहै छी भाइ जे अहाँक एहि कथा सभ मे जे नवीनता छै, परम्परागत कथा-मर्यादाक निषेध छै, से अहाँक स्वानुभूत अछि-माने कि अहाँ जाहि जीवन-प्रवाहकेँ अपन चतुर्दिक देखलियैक अछि तकर घात-प्रतिघातक स्वाभाविक निष्पति थिक आ कि देश-विदेश मे चलल कथा-आन्दोलनक अनुरूप मैथिली कथाकेँ समर्थ आ सम्पन्न बनेबाक सदिच्छासँ अपनाओल गेल एक अननुभूत प्रयोगमात्र, जकरा कि आम भाषामे 'देखाउँस' कहल जेतै...

हिन्दीमे 'अकहानी' कोनो आन्दोलन नहि छल, एकटा नारा छल। गंगा प्रसाद विमल अपनाकेँ स्थापित करबाक लेल एकटा कृत्रिम नारा देलक। 'अकहानी' क ने त' कोनो सुचिंतित सैद्धान्तिक आधार छलैक, ने कोनो सामाजिक मांग। 'अकहानीक' नारा लगायब ठीक ओहिना छल जेना क्यो अपनाके चिन्हेबा लेल अपनाकेँ स्थापित करबाक लेल हिंदीमे कोनो

पत्रिका निकालि लैत अछि। 'अकहानी' एकटा स्टंट छल, वैयक्तिक महत्वाकांक्षा पूर्तिक चेष्टा छल। 'अकहानी'क स्थिति आ गतिक तुलना मैथिलीमे सोमदेव क 'सहजतावाद' सँ कयल जा सकैत अछि।

राजकमल चौधरीकेँ 'अकहानी' सँ कोनो लेन-देन नहि छलनि। ओ 'नई कहानी' युगक कथाकार छलाह। 1957 मे 'नई कहानी' इलाहावादमे' समारोहपूर्वक स्थापित भेल आ 1958 मे राजकमलक पहिल हिन्दी कथा छपल।

डर, टिप, अभाव आ धुंध मे घटना-एहि चारू मे अभाव आ धुंध मे घटना कृत्रिम संवेदनाक कथा अछि, बौद्धिक व्यायाम अछि।

एकटा दोसरो दृष्टिसँ तँ एकरा देखल जा सकैए। जेना एही प्रकारक कथा सभकेँ लेल जाय तँ प्रश्न उठैए जे जँ ई मैथिली कथा थिक तँ एकर मैथिलीपन कतय छै? एहि कथा सभमे मिथिला कतय छै? जँ दोसर भाषा मे एकर अनुवाद कएल जाए तँ पाठक कें एहि मे कोन-कोन ठाम मिथिला देखार पड़तै आ कोना लोक एकरा 'मैथिली कथा' मानत?

कोनो रचना सांस्कृतिक विशिष्टता प्रदर्शित करबाक लेल नहि लिखल जाइत अछि। ओकर सरोकार मानवीय तत्वसँ रहैत छैक, सांस्कृतिक चिह्न सँ नहि। भाषामे संस्कृतिक समस्त विशिष्टता समाहित रहैत अछि। मैथिली मे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि।

एतए एक बेर फेर हम राजकमल चौधरीक उल्लेख करए चाहब। जे राजकमल हिन्दीमे अकहानीनुमा कहानी-लेखनक लेल प्रसिद्ध छथि आ विधागत तोड़फोड़क लेल विख्यात छथि, वैह राजकमल जखन मैथिलीमे कथा लिखलनि तँ ओहिसँ एकदम अलग। हुनकर मैथिली कथा सभ मे बेछप व्याप्तिक संग मिथिला तँ जगजगार छैके, पारम्परिक कथा-भाषा आ कथा-शिल्पक अंगीकार सेहो छै। अहाँ तँ भाइ, राजकमल चौधरीक सेहो विशेषज्ञ छी। राजकमल चौधरीक संग एना कोना भ' सकलनि आ अहाँक संग किये नहि भ' सकल?

राजकमलक अधिकांश हिन्दी कथाक परिवेश शहरी अछि आ मैथिली कथाक परिवेश ग्रामीण अछि। परिवेशगत आ भाषागत भिन्नताक कारणें राजकमलक हिन्दी आ मैथिली कथा भिन्न लगैत अछि। शिल्प आ दृष्टिक स्तर पर हुनक हिन्दी आ मैथिली कथामे कोनो भेद नहि अछि।

रचनाकारक आपसी भेद-अभेद कोनो अस्वाभाविक आ आश्चर्यजनक घटना नहि अछि। कतेको अर्थमे समान होइतो हरेक व्यक्ति दोसरसँ भिन्न होइते अछि। ओ राजकमल चौधरी छलाह आ हम सुभाषचन्द्र यादव छी।

कखनो-कखनो हमरा लागैए भाइ जे एक कथाकार रूपमे अहाँ अकहानी-आन्दोलनेक देन छी। से लागैए विशेषत: अहाँक अवधारणा देखिक'। अहाँक कथा-रचनाक जे शिल्प अछि, तकरा 'फोटोग्राफिक' कहल जा सकैए। माने कि स्थिति आ घटना जेनाक जेना अछि, तकर सीधा-सीधी फोटोग्राफी। एहि शैलीक विशेषता हमरा एकटा ई बुझाइये जे एहि मे उपस्थापनक ओते महत्त्व नहि छै, जते कि चयन के। अकहानी दौर के हिन्दी कथा सभक ई शैली छलै। आ कमोवेश अहाँक निजी शैली आइयो यैह थिक। अहाँकेँ कहेन लागैये?

'अकहानी' कोनो आन्दोलन नहि छल। ओ व्यक्तिवादी नारा छल। ओकर कोनो सिद्धान्त, शिल्प आ शैली नहि छल। अस्तित्ववादी आ एब्सर्ड विचारधाराक प्रभावमे रचित गंगा प्रसाद विमलक किछु कथाक संग 'अकहानी' जनमल आ मरि गेल। एहि सम्बन्धमे अहाँक समस्त धारणा आधारहीन अछि।

नहि भाइ, हम कोना मानब जे आधारहीन अछि। ई बात सही छै जे अकहानी धरतीसँ नहि जनमल छल, आयातित छल। मुदा जे किछु होउक, छल त' ओ अवश्ये। अस्तित्ववाद आ एब्सर्डिटीक कोनो प्रभाव हिन्दी कहानी पर नहि पड़लै, से क्यो मानत? तखन ई बात जरूर जे गंगा प्रसाद विमल प्रभृति कमजोर पड़लाह आ 'नई कहानी' बला सभ हुनका दाबि देलकनि। ओना, ईहो बात हमरा साफ देखाइत अछि जे अकहानीक एकमात्र प्रयोक्ता विमले टा तँ नहिये छलाह सभसँ प्रतिभाशाली प्रयोक्ता सेहो विमल नहि, निश्चित रूपसँ राजकमल चौधरी छलाह। तखन, ई बात ध्यान राखब जरूरी जे राजकमलक समुच्चा कहानी-साहित्य एहि दौर के नहि छियै मात्र परवर्त्ती कहानी सभ छियै। हँ, एहि बातसँ हम पूर्ण सहमत छी जे अकहानी जेना जनमल, तहिना मरियो गेल। हम तँ ई कहब जे ओकर मरि जायब हिन्दी कहानीक स्वास्थ्य लेल आवश्यक छल आ ई एक कल्याणकारी घटना भेल। मुदा मूल बात ई अछि जे जनमल तँ ओ छल जरूर, पसरल तँ छल जरूर, बहुतोंकेँ प्रभावितो कएने छल, बहुतो लोक ओही कलाकेँ विधेय कहानीकला मानलक, तहियो मानलक आ बादोमे मानैत रहल...व्यक्ति के बात हम नहि करै छी, हम दौर के बात करै छी। खैर, एहि प्रसंगकेँ छोड़ू। अहाँ अपन कथा-शिल्पक विषयमे की सोचै छी?

1977 मे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रह मे हमर 'घरदेखिया' कथा संकलित कयल गेल। एहि कथाक भाषाक संबंध मे संपादकीय टिप्पणी छल: कथामे भाषा कोना फोटोग्राफी करैत चलैत छैक, तकर बड़ सुंदर उदाहरण ई कथा अछि। लगैत अछि भाषा संबंधी इएह टिप्पणी अहाँक एहि धारणाक स्रोत एवं आधार अछि जे हमर शिल्प फोटोग्राफिक अछि।

साहित्य चित्रात्मक होइत अछि। ओ देश काल-पात्रक भावात्मक चित्र प्रदान करैत अछि। चित्रात्मक कहलासँ हमर शिल्पक कोनो विशिष्टता प्रमाणित नहि होइत अछि। अहाँक चयन आ उपस्थापन अर्थात भाव-तत्व आ ओकर गढ़नि-सुन्दर कृतिक लेल दुनू एक रंग महत्त्वपूर्ण अछि। सौंदर्य मे अनुपात होइत अछि। भाव-तत्व आ ओकर गढ़निकेँ समानुपातिक हेबाक चाही, तखने रचना सुन्दर भ' सकैत अछि।

प्रश्न ई नहि अछि भाइ जे की 'हेबाक चाही', प्रश्न अछि जे की छै। अस्तु। हमरा लागैए जे समकालीन जीवन जें कि बहुत जटिल भ' गेलैए, अनेकानेक प्रकारक जटिलता सभसँ परिपूर्ण तें एकरा अभिव्यक्तिक हेतु जे 'वस्तु' चुनल जतै कथामे, आ तकर जे उपस्थापन हेतै, से जटिलतासँ परिपूर्ण। आ लेखकक सफलता एहि बातमे निहित छै जे एहि समस्त जटिलताकेँ ओ कते सरल ढंगसँ अभिव्यक्त क' पाबैए अपन कथामे। एम्हरूका जे कथा सभ अहाँक नजरिमे आएल हएत, ताहिमे ई बात अहाँ देखने हेबै। जँ हम हरिमोहन झा वा प्रेमचन्द्र जकाँ जीवनक पक्षमे आ प्रगतिशीलताक पक्षमे ठाढ़ छी तैयो हुनका सभ जकाँ सरल निष्पति हम कथामे नहि द' सकै छी, कारण हमरा सभक समक्ष जे समकालीन समाज आ जीवन अछि, यथार्थ अछि से महाग जटिल अछि।

मुदा भाइ, अहाँक जे मान्यता हमरा बुझाइत अछि से एकर एकदम विपरीत अछि। अहाँ स्थितिक फोटोग्राफी करै छी। ई बात कोनो संग्रहक भूमिका पढ़ि क' हम नहि कहि रहल छी, शुद्ध अपन

अभिमत कहि रहल छी। 'सरल यथार्थ के' पकड़ै छी आ तकर सरल अंकन करै छी। जटिलता जँ कतहुँ आबितो छैक तँ से मात्र वस्तुक चयनमे उपस्थापनमे तँ किन्हु नहि। बहुत सुनिर्धारित तरीकासँ, सहज-व्यवस्थित भ' क' अहाँक यथार्थ अपन निष्पति दिस गमन करैत अछि। नहि?

हरेक रचनाकार अपन समयक चुनौती, मानवीय संकट आ समस्याकेँ अपना ढंगे बुझैत अछि आ अपन क्षमताक अनुरूप ओकरा व्यक्त करैत अछि। यथार्थ बदलैत अछि आ ओकरा संग-संग अभिव्यक्तिक पद्धति सेहो बदलैत रहैत अछि।

सहज आ सरल भेनाइ बड़ कठिन होइत अछि। जटिलतासँ गुजरिए क' सरलता प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

एकदम सही बात। हम देखै छी जे यथार्थ के चयनक संग-संग ओकर उपस्थापनो पर जतय अहाँ समान रूपसँ सजग रहलहुँ अछि आ तकर फलस्वरूप एक चमत्कारपूर्ण सन्तुलन कायम भेल अछि जकरा कि अहाँ 'भाव तत्व आ गढ़नि के समानुपातन' कहलहुँ, से कथा सभ बहुत सफल भेल अछि। 'घरदेखिया' आ 'काठक बनल लोक' के हम खास तौर पर चर्चा करब, जे कि अहाँक सर्वश्रेष्ठ रचना मानल जाइए।हमरा बुझने एहि दुनू कथाक जे श्रेष्ठता छै, से एकर सन्तुलनेमे निहित छै। दोसर बात जे कखनो-कखनो हमरा लागैए से ई जे कथाक संबंधमे जे अहाँक मान्यता अछि आ कथा-कलाक जे अहाँक मानदण्ड अछि, ई दुनू कथा तकर अतिक्रमण करैत अछि। आ एकर समस्त श्रेष्ठता एकर अतिक्रमणेमे निहित छै। अहाँ की कहै छी?

जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि। हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि। जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि।

साधुवाद भाइ। अहाँक एहि आश्वस्तिपूर्ण विचारक लेल साधुवाद! हम, मैथिलीक समस्त लेखकलोकनि अहाँक एहि उक्तिकेँ ल'क' एकैसम शताब्दीमे प्रवेश करी। यैह हमरालोकनिक काम्य हो, लक्ष्य हो। साधुवाद!

(सन्धान-4, जुलाई 2000)

卐

कथाकार अपन लेखनमे क्रमश: अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि

['हमरा लगैत अछि जे प्राचीनकालसँ आइधरि वाचिक परम्परासँ लिखित परम्पराधरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य, स्वरूप एवं स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नताकें देखैत कथाकें कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हब कि तकर चेष्टे करब अनर्गल भ' गेल अछि। कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठकसँ वैयक्तिक संवेदना आ संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि। स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुँचबा लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थीक।'

मैथिलीक मान्य समालोचक आ हेबनिमे प्रकाशित अपन दोसर कविता संग्रह 'आब आगाँ सुनू'क कवि कुलानन्द मिश्र अपन अद्यतन सोच, दृष्टिक संग उपस्थित छथि एहि संवादमे। कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथा पर लिखल समालोचना चर्चित-प्रशंसित अछि। दृष्टान्त स्वरूप हुनक विचार बहुधा उद्धृत होइत रहैत अछि। अहू संवादमे कतेक प्रश्न हुनके लिखल पाँती पर आधारित अछि।]

भाइ, मैथिली साहित्यमे कवि ओ समालोचक-चिन्तक रूपमे अहाँक एक विशिष्ट स्थान अछि। अहाँक मन्तव्य ओ टिप्पणी बहुधा चर्चामे रहल अछि। मैथिली कथा पर अहाँक प्रकाशित ओ आकाशवाणीसँ प्रसारित निबन्ध हमरालोकनिकेँ मैथिली कथाक प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ, ऐतिहासिकता तथा युगीन दृष्टिबोधसँ परिचित करबैत अछि। अहाँ स्वाभाविक रूपें मैथिली कथाक सजग ओ सचेष्ट

पाठक सेहो छी। एही शताब्दीमे प्रारम्भ भेल मैथिली कथा-यात्रा आइ जत' धरि पहुँचल अछि की ओहिसँ संतुष्ट छी? यदि संतुष्ट छी त' कोना? यदि सन्तुष्ट नहि छी त' से किये? कने फरिछा क' कहियौक।

हम साहित्य संग अपन संपृक्ति तीन तरहें मानैत छी। पहिल-पाठक, दोसर रचनाकार आ तेसर समीक्षक कि आलोचक रूपमे। पाठकक रूपमे साहित्य संग हम अपन सम्बन्ध हाइ स्कूली जीवनेमे (प्रायः किछु अधिके आतुरता संग) जोड़ल। पटना कॉलेजक मिण्टो छात्रावासमे चारि बरख जे काटल ओहि अवधिमे साहित्यक पाठके मित्र अधिक भेटलाह। रचनाकारक रूपमे एकमात्र सहपाठी रहथि डॉ. नन्द किशोर नवल, जे मौकाक सभ अवसर पर इम्हर कतोक बरखसँ कोनो बाँस आ कोनो रंगक कप्पा संग आलोचनाक क्षेत्रमे झण्डा गाड़ैत आबि रहल छथि। हिनके प्रेरणासँ छात्रावास-कालमे हम दूटा अनुवाद कयल, जे हमर पहिल लेखकीय प्रयास मानल जा सकैछ। एहि दुनू अनुवादमे एकटा राजकमल चौधरीक मैथिली (दमयंतीहरण) क हिन्दीमे आ दोसर यशपालक हिन्दी कथा (मनुष्य)क मैथिलीमे अनुवाद छल। छात्रावास हम 1960 ई. मे छोड़ल। सन् 1963 ई. क जुलाइसँ सरकारी चाकरी आरम्भ कयल। एहि समस्त अवधिमे हम मूलतः पाठके बनल रहलहुँ, मुदा से हम गम्भीरता संग बनल रहलहुँ। राजकमल चौधरीक अकाल निधन जून 1967 मे भेलनि। ओहि संदर्भमे 'दिनमान' (2 जून 1967) मे छपल हमर पत्र पैघ विवाद ठाढ़ कयलक आ एहि विवादसँ हमरा आत्मामे ई बोध फरीछ भेल जे हमरामे लेखन-क्षमता अछि। राजकमल 'ध्वजभंग' नामक एकटा पत्रक प्रकाशन लेल कहियो विचारने रहथि आ ई बात एक दिन हम चारि मित्र (हम, डॉ. नन्द किशोर नवल, प्रो. शिव बच्चन सिंह आ सिद्धिनाथ मिश्र)क बीच चर्चाक केन्द्र बनल। ओहि दिन हम सभ 'ध्वजभंग' नामक एकटा मात्र समीक्षा पर आधारित पत्रिका हिन्दीमे बहार करबाक निर्णय कयल। 'ध्वजभंग'क तीन अंक बहार भेल आ एहि प्रकारें हमर लेखकीय जीवनक विधिवत् आरम्भ समीक्षा-लेखन संग भेल। ई बात सन् 1967 सँ 1970 क बीचक थीक। 'ध्वजभंग'क बन्द भेलापर हम सखा-स्नेही मोहन भारद्वाजक प्रेरणासँ हुनके

संग मैथिलीमे 'सन्निपात' नामक अनियतकालीन पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कयल, जकर 5 टा अंक बहरा सकल। 'सन्निपात' मे हम सम्पादनक अतिरिक्त अनुवाद आ समीक्षा द्वारा रचनात्मको सहयोग कयल। निश्चित रूपसँ लेखनक क्षेत्रमे डेग धरैत काल समीक्षा आ आलोचनेक पथके प्रशस्त करबाक बात हमरा मोनमे सभसँ अधिक जड़िआयल छल। कविता हम किछु बादमे लिखब आरम्भ कयल आ कविता लेल आलोचनासँ कम लेखकीय ममत्व नहि पोसैत छी, मुदा हुनको लोकनिक मान्यताकेँ गंभीरतापूर्वक स्वीकार करैत छी जे हमरा कविकेँ हमरा आलोचककेँ कद-काठी आ मर्यादामे ठेंठ मानैत छथि। यद्यपि किछु गोटे भिन्नो मतिक छथि, मुदा हम अहाँक एहि मान्यता संग सहमत छी जे मैथिली कथा-यात्राक आरम्भ एही शताब्दीमे भेल। एहि शताब्दीक पहिल दू दशकमे भेल मैथिलीक कथा-यात्रा सँ हम संतुष्ट आ गौरवान्वित दुनू अनुभव करैत छी। एहि संदर्भ मे हम ई स्पष्ट करब आवश्यक बुझैत छी जे एहि शताब्दीक पहिल दू दशकमे लिखल गेल कथा-उपन्यासक अविचारित विधा नामकरणक कारण कथा-उपन्यासक वास्तविक आरम्भ काल संबंधी ओझरा अखनो बनल अछि। हमर व्यक्तिगत मान्यता ई अछि जे तुलापति सिंहक 'मदनराज चरित', जीवनाथ मिश्रक 'मोहन् मोहिनी', जनार्दन झा 'जनसीदन'क ताराक वैधव्य', 'निर्दयी सासु' आ 'पुर्नविवाह', जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर' आदि खाहे ओ कथा कहि छपल हो कि उपन्यास कहि वास्तवमे ओ सभ कथा थीक आ यदि कथा नहि थीक त' मनोरंजनक गद्य रचना थीक। एहि शताब्दीक पहिल दू दशकक त' बाते भिन्न सन् 1932 मे काञ्चीनाथ झा 'किरण'क उपन्यास कहि बहरायल 'चन्द्रग्रहण' सेहो उपन्यासक रूपमे नहि, कथेक रूप मे हमरा मान्य अछि। मैथिलीक पहिल उपन्यास वास्तवमे प्रो. हरिमोहन झा लिखलनि, जे पोथी रूपमे 'कन्यादान' नामसँ सन् 1933मे प्रकाशित भेल छल।

मैथिली कथा-यात्राक अद्यतन प्रगतिसँ हमर संतुष्ट कि असंतुष्ट होयबाक प्रसंग अहाँक जिज्ञासाक सम्बन्धमे स्पष्ट उत्तर देब हमरा कठिन आ असंगत दुनू लगैछ, कारण कोनो एक निश्चित बात कहलासँ, बहुतो एहन बात कहबाक प्रासंगिकता समाप्त भ' जायत जे एहन जिज्ञासाक

सन्दर्भमे आवश्यक रूपसँ चर्चाक पात्रता रखैछ। तें अहाँक एहि जिज्ञासाक संदर्भमे हम मैथिलीक कथा-यात्राक प्रगतिक सम्बन्धमे संतोष आ असंतोष दुनूक बात गछब उचित बुझैत छी। ओहुना कोनो क्षेत्रमे प्रगतिक गप्प संतोषपूर्वक मानब कोनो ने कोनो रूपमे भविष्यक संभावनाकेँ अवांछित कि असंभव मानब भ' सकैछ। हम मैथिलीक कथा-यात्राक प्रगतिक प्रति अपन संतोष आ असंतोषक सन्दर्भमे अहाँक 'किया' ओ 'कोना'क जबाब मे अपन स्थिति एहि तरहें स्पष्ट करबाक प्रयास क' रहल छी।

(1) हम मैथिलीक कथा यात्राक अद्यतन प्रगतिसँ संतुष्ट छी, कारण अजुका मैथिली कथामे ओ वैचारिक आ आवेगात्मक तत्व सभ न्यूनाधिक रूपमे समाहित थीक जे कोनो भाषाक आधुनिक कथा-साहित्यमे अनिवार्य रूपसँ ग्रहण कयल गेल अछि। तखन एहि कथा सभमे आधुनिक भाव-बोधक प्रामाणिकता, सघनता तथा निजताक निर्वाहक विन्दु सभ पर विवाद भ' सकैछ। असहमति एहू प्रश्न पर संभव थीक जे मैथिली कथा अपन जातीय अस्मिताक रक्षा करैत अपन यात्राक प्रगति जारी रखलक अछि कि प्रगति-क्रममे ओकर जातीय अस्मिता खाहे देशीय प्रकृतिक क्षरण वा नवीनीकरण भेलैक अछि।

(2) हम मैथिली कथाक अद्यतन प्रगतिसँ संतुष्ट नहि छी, कारण जे मैथिली कथामे सार्वदेशिकताक सामानान्तर निजताक संस्कारक कोनो विकास नहि भेल। सभ भाषाक साहित्यमे भीतरी आग्रह आ बाहरी प्रभावक कारण समय-समय पर बगय-बानीमे किछु अन्तर अबैत छैक, मुदा सभ भाषाक साहित्यमे निजताक विकासक उद्योगो देखार रहैछ। मैथिली कथा आन बहुतो भाषाक आधुनिक कथा जकाँ बाहरी प्रभाव ग्रहण करबामे पर्याप्त सामर्थ्य देखाइयोक' अपन नैसर्गिक संस्कारक विकास हेतु चेष्टा कि चिन्ताक प्रति उदासीन सन रहल।

हिन्दीमे प्रेमचन्दक समकालीन आ बादोक कतोक रचनाकार जकाँ समष्टि आ व्यष्टिक सार्वभौम अनुभूतिक संग एकात्मता स्थापित करबाक संग एक विशिष्ट भौगोलिक आ ऐतिहासिक इकाईक प्रति देखार चिन्ता, दुश्चिन्ता, सामाजिकता आ निस्संगता एवं अनुरक्ति तथा विरक्ति आ उपलब्धि तथा अनुपलब्धिक निरूपणमे मैथिलीक समकालीन कथाकार

वर्गमे एकान्त रूपसँ अपन कोनो विशिष्ट छवि-छटाक प्रस्तुतिक सुनियोजित प्रयासक प्रति रूचि आ उत्साहक अभाव स्पष्ट देखा पड़त।

भाइ, मैथिली कथाकेँ देखैत कोन तत्त्व सभ अहाँके ओहिमे उपस्थित भेटैत अछि? संगहि की सभ अहाँ अनुपस्थित पबैत छी।

अहाँक एहि प्रश्नक सोझ आ बहुत संतुलित उत्तर देबामे हमरा असौकर्य भ' रहल अछि। कोनो भाषामे कथाक देल कोनो परिभाषा क्रमशः खाहे अव्याप्ति कि अतिव्याप्तिक दोषसँ ग्रस्त मानल गेल अछि, खाहे बदलैत कथा-परिदृश्यमे कथाक सम्बन्धमे बहुतो पुरना धारणा कि मान्यताकेँ ध्वस्त करैत जयबाक आ तकरा स्थान पर नव-नव अवधारणा आ परिभाषामे एतेक त्वरित गतिसँ बदलाओ आबि रहल हो आ ओ स्वीकृतो भ' रहल हो, एहनामे अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे कोनो सुच्चा आ बेलाग बात कहब निरापद नहि होयत। तें हम चाहब अध्यापकीय गतानुगतिकता आ सम्पादकीय निस्संगता अवधारियेक' एहि प्रसंग मे अपन बात कही। कथाक सम्बन्धमे सर्वसम्मत परिभाषा कि अवधारणाक अभावक अछैतो कथाक पाठक-विचारक लोकनिकेँ कथाक सम्बन्धमे एकटा एहन मिश्र बोध रहलनि अछि जकरा आधारपर कथा आ अन्य गद्य-रचनामे अन्तर्निहित प्रकृत भिन्नताकेँ फराक-फराक चिन्हबामे कोनो आधारभूत जटिलता पर विवाद अपेक्षित नहि भेल अछि। ई बात पुरना आ आधुनिक दुनू कथा-रूप संग न्यूनाधिक मात्रामे सत्य रहल अछि। तखन आरंभिक कथामे जत' फ्रायड आ मार्क्सक सम्बन्धमे हमरा सभकेँ कोनो चिंता नजरि नहि पड़ैछ, आधुनिक कथाक सभ भंगिमामे ई दुनू महाप्राणक छाप बेछप देखबामे आओत। ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था टूटब औद्योगिक विकासक परिणाम जकाँ लक्षित होइछ आ गामक क्रमशः पतरायब आ नगरक पसरब बीच नव अर्थ-व्यवस्थासँ बदलैत सामाजिक संरचनाक असहज स्वरूप सभ प्राचीन मूल्य सम्बन्ध आ सोचकेँ नव अर्थ आ भंगिमा प्रदान करैछ।

हमरा सभक आधुनिक कथाक आरंभिक कालमे सामाजिक कुरीति आ वैषम्य पर अधिक ध्यान गेल आ सुधारक भाव लेखनक प्रमुख उद्देश्य बनल रहल। बादमे जखन सामाजिक वैषम्य आ मानवीय सम्बन्धमे व्याप्त दूरीक कारण सभक व्याख्या कयल गेल त' एहिसभ दुरबस्थाक पाछाँ

व्यवस्थाक सहस्र बाँहिपर लोकक नजरि पड़लैक आ सभ सामाजिक आ मानवीय संत्रासक लेल व्यवस्थाक अव्यवस्थित व्यापार उत्तरदायी बुझा पड़लैक। व्यवस्था, जे कोनो सत्ताक सभसँ विश्वस्त यंत्र होइछ, सामाजिक असंतोषमे वृद्धि के देखैत अपन नौह आर तेज आ अपन सिकंजा आर कठोर बना लैत अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा व्यवस्थाक विद्रूप आकृति आ संवेदनहीन प्रकृतिसँ त' परिचित भेल अछि, मुदा तकर भयंकरता आ हृदयहीनताक प्रति ओकर दृष्टि तेहेन फरीछ भेल नहि लगैछ, जाहिसँ शंका आ छलनामे अंतर करब साध्य होइत छैक।

कुला भाइ, मैथिली कथा मे जे एखन अहाँक सम्मुख अछि, अर्थात एखन जे कथा लिखल जा रहल अछि, से केहेन लगैत अछि? की मैथिलीक टटका, आजुक कथा अहाँकेँ आकृष्ट करैये? कोन तत्त्व सभक दिस अहाँक ध्यान बेसी आकृष्ट भेल अछि?

हम अहाँक एहि प्रश्नक प्रसंगमे सोझ उत्तर देबासँ बचैत अजुका साहित्यक (कथा सहित) सम्बन्धमे अपन किछु सामान्य सोच प्रस्तुत करब।

समकालीन लेखनक प्राय: सभ विधाक आगाँ सभसँ पैघ चुनौती ई रहलैक अछि आ अखनो छैक जे पूर्वसँ अरजल संस्कार आ बोधक कारण सामान्य पाठककेँ एहि लेखनक कथ्य आ तकर उपस्थापनकेँ रूचिगर मानबामे असौकर्यक अनुभव होइत छैक। एकरा संगे विडम्बना ईहो जे अपना जीवनोमे जे ओ संस्कारबद्ध लड़ाइ लड़ैत अछि तकरा साहित्यमे पाबि असमंजसमे पड़ि जाइत अछि। एतेकधरि जे ओकर अपनो क्षत-विक्षत स्वरूप साहित्यमे अनभुआर लगैत छैक। ओ अखनधरि साहित्यमे लड़ल जाइत लड़ाइकेँ अनठीया आ अपनासँ फराक आ अद्भुत बुझैत आयल अछि। आ तें ओ अपन अखनो लड़ल जाइत लड़ाइ साहित्यमे साहित्यिक लड़ाइ जकाँ लड़ल जाइत देखय चाहैत अछि। समकालीन साहित्यमे संघर्षक ओ छवि-छटा बदलि गेल अछि। आब साहित्य लेल अपन रचनात्मकतामे सामान्य पाठकक सामानान्तर होयबाक बात अनर्गल भ' गेल अछि, कारण जे समकालीन लेखन आब सामान्य पाठकक सामानान्तर नहि रहि सोझे-सोझ ओकर जीवनमे दाखिल आ शामिल भ' गेल अछि। समकालीन लेखनक

आगाँ जे अखन एकमात्र रास्ता बाँचल छैक ओ व्यवस्था आ ओकर द्वारा कयल जाइत उपयोगक विरूद्ध जाइत छैक।

व्यवस्थाक विध्वंस तथा विरोधक नाम पर अपनाओल गेल सभ परिपाटी विद्रोहकेँ सुगमतापूर्वक व्यवसायमे बदलि दैछ आ तकराबाद व्यवस्था द्वारा ओहि क्रान्तिक उपयोग सरल भ' जाइछ आ क्रान्तिक भ्रमो पसरल रहि जाइछ। एहने समयमे पहिनहुँ आ आइयो-काल्हि एकटा 'विकल्पहीन अभिशप्त स्थिति'क दार्शनिक जुमला साहित्यमे चलाओल गेल आ अखनो चलाओल जा रहल अछि, मुदा लगले ई बात फरीछ भ' जाइछ जे समकालीन लेखनमे उठाओल गेल नाना तरहक समस्या मध्य साहित्यक वास्तवमे दुइएटा समस्या मुख्य रहल अछि-पहिल जे साहित्य स्थितिसँ भिड़बा लेल अन्तरसँ उद्यत हो किवां पंगु रहि सर्वजन-स्वीकृति-जोगर 'साधु' साहित्यक सर्जक' अपनाके कृतार्थ मानय।

रचनाक व्यापक व्यावसायिकताक तथा पीढ़ी सभक मध्य मौजूद रचनात्मक दृष्टिक अन्तर तथा संघर्षक एहि युगमे स्वीकृति लेल अनेक चोर-गली उपलब्ध छैक। अपन समकालीन रचनात्मक अपेक्षासँ अपनाकेँ फराक राखि स्वीकृति पायब बड़ सुविधाजनक बात थीक। मुदा ई स्पष्ट थीक जे कोनो रचनाकार अपन लेखकीय अस्मिताके क्षति पहुँचौने बिना आसानीसँ स्वीकृति नहि प्राप्त क' सकैछ, कारण जे ई स्वीकृति बरोबरि कोनो व्यावसायिक संस्था वा व्यवस्था-पोषित संस्थानेक माध्यमसँ प्राप्त होइत छैक।

अखनुक व्यवस्थामे शब्द समस्त रूपाकारमे शक्तिहीन आ लुञ्ज-पुञ्ज भ' गेल अछि। अतएव साहित्यकेँ जीवित रहबा लेल ई परमावश्यक छैक जे ओ अपन सम्पूर्णतामें अनुभवगम्य हो तथा बेपर्द नजरि आबय। अमूर्तता साहित्यकेँ तटस्थ त' बनबिते अछि, ओकरा परोपजीवी सेहो बना दैछ। जतय अधिकांश लेल एक पलक जीवन लेल संघर्ष अनिवार्य हो, एक कौर भात लेल श्रम-स्वेद अपरिहार्य हो, ओतय तटस्थताक की अर्थ भ' सकैछ? आब जे सभ अहाँके संग नहि चलि रहल छथि, अहाँके मानिक' चलबाक अछि जे ओ अहाँके विरोधमे जा रहल छथि। तें समकालीन लेखक लेल विरोध कोनो प्रयोगक परिणामक प्रतीक्षाक वस्तु नहि थीक। विरोधक

निरन्तरता समकालीन लेखनक रचनात्मकताक प्रकृत आ अनिवार्य स्वभाव थीक।

प्राचीन भारतीय कथा अपन निष्कर्ष ल' क' महत्त्वपूर्ण होइत छल, ओकर खण्ड-खण्ड मे बाँटल सम्प्रेषणीय तथ्ये ओकर प्राण होइत छलैक, मुदा समकालीन कथा मनुक्खक जीवनक एहन मूर्त आ स्पन्दित चित्र होइछ, जाहिमे पात्र आ पाठक संग स्वयं लेखको ओहिमे शामिल रहैछ।

समकालीन कथाक स्वरूप आ स्वभावक सम्बन्धमे एतबा बात प्रस्तुत करबाक क्रममे एहि कथाकेँ परिभाषित करबाक पाठकीय अपेक्षा हमरा बिसरल नहि रहल अछि, मुदा हम देखैत छी जे भिन्न-भिन्न भाषाक कथा-साहित्यक इतिहाससँ जे तथ्य उभरैत अछि ओ ई थीक जे कोनो युगमे कोनो भाषा-साहित्यक कथाक गढ़ल कोनो परिभाषा ओहि युगक समस्त कथा लेल मानक परिभाषा सिद्ध नहि भेल। देखबामे त' बहुधा ई अबैछ जे प्रत्येक समर्थ कलाकार लेल अपन विशिष्ट सृजन-क्रममे एकटा नव परिभाषा गढ़ब ओहि कथा-विशेषक आंतरिक संरचना तथा अभीष्ट प्रेषणीयताक कारण आवश्यक भ' जाइछ। यैह कारण थिक जे एक युग आ एक भाषामे गढ़ल कथाक परिभाषा दोसर युग आ भाषा लेल अप्रासंगिक भ' जाइछ। एके युग आ एके भाषाक एक कथाकारक कथा-दृष्टि दोसर कथाकार लेल असंगत भ' जाइछ। हमरा लगैत अछि जे प्राचीनकालसँ आइधरि वाचिक परम्परासँ लिखित परम्पराधरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य स्वरूप एवं स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नताकेँ देखैत कथाकेँ कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हबे कि तकर चेष्टे करब अनर्गल भ' गेल अछि। कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठकसँ वैयक्तिक संवेदना आ संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि। स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुँचबा लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थिक।

छठम दशकक समाप्ति कालधरि मिथिलामे सामाजिक स्तर पर परम्परागत सामंती व्यवस्थाक तौनीमे भूर भेनाइ आरम्भ भ' गेल छल। मैथिली बाजब आ माछ-भात खा भाङक तरंग मे नचारी गयबाक प्रति आसक्ति बनल रहितो अन्न आ माछक स्रोत सुरक्षित नहि रहल, किनबालेल द्रव्यक अभाव

भ' गेल। कोजगरा लेल मखान आ बहीनि लेल सामा-चकेबा कीनब जखन कठिन भ' गेलैक त' जड़िआयल मिथिलाक सूत्रबन्ध छिन्न-भिन्न होबय लागल। क्रमे-क्रमे एतुका लोक प्रवासी बनय लागल। हिन्दी, बंगला आ पंजाबी सीखि चाह-बिस्कुट खा, ठर्रा चढ़ा सिकरेट धूकय लागल। एहनो दु:स्थितिक कालमे मिथिलामे क्रान्तिक किवां वास्तविक जन-जागरणक कोनो लक्षण नहि देखा पड़ल, श्रीकाकुलम बनबाक बात त' बहुत दूरक गप्प भेल। तथापि भिन्न-भिन्न क्षेत्रक समगोत्री पीड़ाक साधारणीकरण एहना मे सहज भ' गेल। आधुनिक पाश्चात्य सोच कि भारतीय साहित्यक दाबल-दबल मनोदशा संग एकमेत होइत मैथिलीक रचनाकारकेँ बोधक विस्तार हेतु कतोक नव आयाम प्राप्त भेलैक। समयक एहने कुचक्र आ स्थितिक एहने विभीषिका बीच मैथिली कथा क्षेत्रमे ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र, सोमदेव, बलराम आदि किछु पहिने तथा प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, जीवनकान्त आ गुञ्जन आदि कने बादमे अपन कथा चेतना संग उपस्थित भेलाह।

ई सभ कथाकार लगभग समान क्षेत्र आ समान सामाजिक स्थितिक भोक्ता होयबाक कारण अपन आशा-निराशा, संतोष-विक्षोभ, क्रान्ति चेतना कि क्रान्ति प्रति अरुचिमे एक जातीयताके रेखांकित कयलनि। ई कहबाक प्राय: प्रयोजन नहि जे एहि कालखण्डक सभ कथाकार मध्यवर्गसँ अयनिहार कथाकार छथि जे अपन समस्त वैचारिक तापक बादो ओहि लक्ष्मणरेखासँ बाहर जायब अनिष्टकारी बुझैछ, जतय गेलाक बाद लोक खाहे नष्ट भ' जाइछ, खाहे अभीष्टक प्राप्तिमे सफल होइछ। एकटा निश्चित सीमाक अतिक्रमण मैथिली कथाक क्षेत्रमे सुभाषचन्द्र यादवक शुभागमनक बादे आरम्भ भेल जे अखनुक नव्यतम कथाकारलोकनिक प्रियतम आस्था आ पवित्रतम विश्वास बनि गेल अछि।

व्यवस्थाक प्रति मोहभंगक प्रक्रिया समस्त भारतीय कथा साहित्यमे छठमे दशकमे आरम्भ भ'गेल छल जे सातम दशकमे आबि क' असंदिग्ध रूपसँ निराशामे परिणत भ' गेल। मैथिलीक कथाकारो सभक दृष्टिमे व्यवस्था आ तकर संग पुरनिहार लोक-शत्रुक स्वरूप आ स्वभाव क्रमश: फरीछ भ' गेल। मुदा तें व्यवस्थाक विरोधक प्रक्रिया लगले देखार नहि भ'

सकल। एहिकालक अधिकांश कथाकार अपन कथाक माध्यमसँ एहि सत्यक सोझ साक्षात्कार कयल। किछु गोटे क्रान्तिकेँ बोल नहि देबाक कुण्ठोक भोग कयल। मुदा किछु कथाकार एहनो छथि जे एहि समय सत्यकेँ अवचेतनमे स्वीकारि एकरा परोक्ष रूपसँ प्रस्तुत कयल। एहन करबाक पांछाँ एहि कथाकार सभक अन्तरमे व्यवस्था भीति प्राय: नहि रहनि। प्राय: अपन कथा-शिल्पक माँगक अनुरूप सत्यक प्रत्यक्ष प्रस्तुतिसँ परोक्ष प्रस्तुति हिनका सभकेँ अधिक संगत बुझा पड़लनि।

समकालीन लेखनक कतोक शिविर आ मंच देखबामे आओत। प्रत्येक शिविर आ मंचपर आधुनिकता बोध आ तकरा संग सामाजिक बोधक प्रति मत-भिन्नताक संग अपन-अपन रचना-धर्मक निरूपणमे एतेक परस्पर विरोधी आ आत्ममुखी स्थापना भेल अछि जे ओ सभ वस्तु सत्यकेँ ओझराक' राखि देने अछि। समकालीन लेखन पर इतिहासक प्रति विवेकाहीनताक आरोप बहुत प्रबल आरोप थिक। संस्कृति-संस्कार हीनता, जीवनसँ अलगाओ, फोंकपना आ सतही आडम्बर, नकली क्रान्ति-बोध, दायित्व-चेतनाक शून्यता, चमत्कार-हीनता, विम्ब आ प्रतीकसँ पाटल गंभीर अर्थवान संसारक अभाव आदि-आदि अनेक आरोप लगाओल जाइत रहल अछि। एहि आरोप सभसँ भले ई प्रतिभासित हो जे साहित्यकर्मीलोकनि सामाजिक यातना, आर्थिक वैषम्यक कलुष आ सांस्कृतिक विसंगतिक पहिचानक जे चेष्टा कयलनि अछि ओ आंशिको थीक आ परस्पर विरोधियो थिक।

स्पष्टत: एहन आरोप सभ ओहि वर्ग द्वारा लगाओल गेल जे साहित्यक क्षेत्रमे दिन-प्रतिदिन जनतांत्रिक मूल्यक प्रतिष्ठा, वर्गीय समाजमे क्रमश: घटैत वर्ग विशेषक गरिमा आ दोसर वर्ग विशेषक मानवीय महत्त्व आ अपन उचित अधिकार लेल अधिकारहीन वर्गक बढ़ैत रोष आ क्रान्तिधर्मी संघर्षक चेतनासँ बहुत प्रसन्न नहि छथि। ओ सभ परिवर्तनो व्यवस्थित ढंग सँ चाहैत छथि, खूनी समाजकेँ भागवत सुना ओहिमे शुचिता आनय चाहैत छथि।

किछु संस्था मनुष्यक मानसिकताकेँ विकृत आ विरूपित करबामे लागल रहल अछि। भारतक ऐतिहासिक सन्दर्भमे बिआह, सम्मिलित कुटुम्ब आ वर्णाश्रम व्यवस्था किछु एहने संस्था थीक। वर्त्तमान समाजमे पूँजीवादी

स्वतंत्रता आ सम्पत्तिक पवित्रता दूटा एहने अन्य संस्था थीक। समकालीन लेखको सभ एहने-एहने संस्थासँ विकृत होइत पुन: पुन: प्रबुद्ध भ' नव साज-सज्जा संग उगैत अयलाह अछि। एकटा विराट सांस्कृतिक छलसँ गुजरैत एहि देशमे समृद्धिक अनुभवसँ कतोक नव अनुभव लोकके भेलैक। समृद्धिक अर्थ समानतावला समाजमे सामाजिक न्याय नहि होइछ, समृद्धिक प्रदर्शन बुर्जुआ समाजक अभिरूचि बनि गेल अछि, समृद्धिक मानदण्ड उपभोक्ताक आदति होइछ एवं समृद्धिक साधन भ्रष्टाचार, अधिकाधिक लाभ व्यभिचार आ निर्मम शोषण-चेतना बनि गेल अछि। नेहरू युगक छद्म समाजवादी सामाजिक चेतनाक बाद आरम्भ भेल अनिश्चयताक दौर, जे चलैत रहल आ एहन सन प्रतीत होबय लागल जे लोकक क्रान्तिकारी चेतना मद्धिम पड़य लागल अछि। चारू दिस व्यक्तिवाद, स्वार्थ, लंठई तथा भोगवादी रूचिक बोलवाला होबय लागल आ एहन सन प्रतीत होबय लागल जे जनताक मूल्य-बोध आ जनतांत्रिक अभिरूचि पस्त पड़य लागल अछि। एक तरहें राष्ट्रक मानवीय चेतनाक व्यापारीकरणक संग सामाजिक-ऐक्य-चेतनो पर धूराक ढेरी लागि गेल। मुदा क्रमश: एहन सांस्कृतिक आ सामाजिक स्थिति उत्पन्न भेल जे सभ तरहक उत्सर्गक मांग कयल जाहिमे खतरा, बलिदान, त्याग, संघर्ष आ क्रान्ति-सभक अपेक्षा छैक।

हम मानैत छी जे समुदायक बहुलांशक जीवनमे त्रासदी अखनो बनल छैक। समकालीन सामाजिक यातना आ सांस्कृतिक संक्रमणक विसंगति बीच जीवनक त्रासदी अखनो कार्यशील थीक। मुदा सहस्रो वर्षसँ त्रासदीके जीवन धर्म मानि चलैत अबैत मनुक्खक संतान आ रचनाकर्मी अखनो विलुप्त नहि भेल अछि। यातना भोग ओकर नियति छैक त' ओकरासँ मुक्ति लेल अविराम संघर्ष ओकर स्वभावो बनि गेल छैक। ओ ई खूब जनैत अछि जे सामाजिक यातना-भोग आ मानसिक वेदनासँ उद्धारक एक्केटा आदिम आ अत्याधुनिक मार्ग छैक जे मार्ग राजनीतिक स्वतंत्रता संग आर्थिक स्वतंत्रताक बीच प्रशस्त होइत छैक। एहि स्वतंत्रताक उत्कट अभिलाषा संग संस्कृतिक पुनरूद्धार आ रचनाकर्मक पवित्रताक सुरक्षा लेल चिंतित मनुक्खक एक मात्र धर्म होइत छैक-क्रान्ति।

बहुतो भारतीय साहित्यक कथा जकाँ मैथिलीक विगत 20-25 वर्षक कथा-रचनाक विहंगावलोकनसँ कतोक तथ्य दर्पण जकाँ झलक' लगैछ।

एहि अवधिक कथा-आन्दोलन कतोक वर्षसँ चलि अबैत विचार-मंथनके पूर्णतः निर्णीत क' देलक अछि जे कोनो जीवन्त कथाकार हेतु सामाजिक प्रतिबद्धता आवश्यक थीक। ई कोनो कथा-रचनाक सार्थकता लेल अनिवार्य अर्हता थीक। राजनीतिकेँ नकारब कि ओहिसँ दूर रहबाक गप्प करब एक तरहक अभिजात पाखण्ड थीक। तटस्थताक गप्प वास्तवमे गप्पे मात्र होइछ। मैथिली कथाक जातीय परम्परा मे प्रो. हरिमोहन झा, किरण, श्री गोविन्द झा, मणिपद्म, ललित, सोमदेव, राजकमल, मायानन्द मिश्र आदि रचनाकार छथि प्रो. उमानाथ झा, मनमोहन झा, उग्रानन्द, नगेन्द्र कुमार सन रचनाकार नहि।

लोकप्रियता आ महानतामे कमे काल अन्तर्विरोध भेटैछ। यथार्थवाद आ प्रकृतवाद एकदम्मे भिन्न वस्तु होइछ। आदर्शवाद नहि, आदर्शोन्मुख यथार्थवादो नहि, अपितु द्वन्द्वात्मक आ ऐतिहासिक यथार्थवादे कथा लेल सही खाद-पानि, ऊर्जा तथा उष्माक जोगाड़ करैत अछि। अनुभववाद आ तथाकथित भोगल यथार्थवाद एक तरहें पूँजीवादी व्यक्तिवादेक असंयत संतति थीक। कोनो कथा पाठक लेल मात्र शोभा आ स्वादक वस्तु नहि होइछ, ओ ओकर अस्तित्वक कथा सेहो होइछ आ से यदि ओ नहि अछि त' ओकरा होयबाक चाही। पियरे इपोतँक अनुसार '...दी थ्योरी ऑफ आर्ट फॉर आर्टस सेक स्पष्टतः 'इनफेंटाइल' थीक आ ओ घोषणा कयलनि जे... आर्ट मस्ट हैव ए सोशल परपज' एहि बिन्दु सभकेँ ध्यानमे रखैत हमरा लगैत अछि जे विगत शताब्दीक अंतिम दू दशकक कथाकार अपन लेखन मे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि आ लोकरंजनक संग-संग लोक-चिन्तोक प्रति एक संग सजगता देखौलनि अछि।

भाइ, नवम दशकके कथाकारक कथा प्रवृत्ति पर गप्प करैत अहाँ कहने छी जे 'प्रकट संघर्षक चेतना आ निष्कम्प दिशा-बोध हिनका लोकनिमे एक हदधरि चरित्र-भिन्नताक बादो हिनका सभकेँ अविभक्त धरातल पर सम जातीय प्रतिबद्धता आ एकदेशीय वैचारिकताक संग ठाढ़ क' देने छनि। निश्चित सामाजिक, राजनीतिक आ साहचर्य बोध संग ई लोकनि व्यवस्थाक नाम पर पसरल सभ अव्यवस्थाक संतुलित आ सार्थक प्रतिरोध लेल प्रस्तुत नजरि अबैत

छथि।' की अहाँके लगैत अछि जे साहचर्य बोधक संग सार्थक प्रतिरोधक बात एम्हर आर बढ़ल अछि? आर व्यापक भेल अछि? खासक' कय शताब्दीक अन्तिम दशकमे?

हमरा लगैत अछि जे अहाँक एहि प्रश्नक उत्तर हम पूर्वे द' चुकल छी। जेना-जेना कथाकार सभ सामाजिक प्रतिवद्धताकेँ अपन रचनात्मक धर्मक रूपमे स्वीकार कयलनि अछि, निश्चित रूपसँ साहचर्यवोधक संग हिनका सभमे प्रतिरोध संकल्प बढ़लनि अछि। लोकक प्रति स्नेह कि मात्सर्यक वृद्धिसँ व्यवस्था-विरोध आ उत्पीड़नक प्रतिरोध स्वतः उग्र आ तें स्वतः देखार होइछ।

भाइ, कहल जाइत अछि जे सांस्कृतिक चेतनाक स्वर एम्हर बेसी मुखर भेल अछि मैथिली कथामे। (सन्दर्भ-मैथिली कथामे समकालीन स्वर- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास) कथाकारलोकनि अपन कथामे अपन जड़ि, माटि-पानि, अपन समाजक बात बेसीक' रहल छथि। की ई विश्वक भूमण्डलीकरणक प्रभाव थिक अथवा बिहारक सामाजिक-न्यायक प्रभाव? की लगैये अहाँकेँ?

अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे अपन बात कहबासँ पूर्व हमरा किछु प्रति प्रश्न करब आवश्यक लगैछ-मैथिली कथामे इम्हर सांस्कृतिक चेतनाक स्वरक अभिवृद्धिक बात जे सभ कहि रहल छथि हुनक सांस्कृतिक चेतनाक अभिप्राय की आ व्याप्ति कतेक छनि? कथाकारलोकनि जे अपन जड़ि, माटि-पानि आ समाजक बात बेसी कर' लगलाह अछि, की ओहिमे अन्तर्निहित चिन्ता वर्गीय दृष्टिक आग्रह-दुराग्रहसँ निरपेक्ष होइत अछि?

इम्हर रचनाकारलोकनिक रचना कि लेख आदिमे सांस्कृतिक चेतना संग जड़ि आ माटि-पानि संग सरोकारक चिन्ता हमरो किछु अधिक देखबामे आयल अछि। प्रो. हरिमोहन झा आ यात्रीसँ ल'क' कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास आ कवि विवेकानन्द ठाकुर धरिक रचना प्रसंग गप्प करबाक क्रममे एहन चिन्ता सभकेँ बोल भेटलैक अछि। हमरा एहन चिन्तामे होइत वृद्धिसँ प्रसन्नता भेल अछि, मुदा हमरा संगहि ईहो स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमरा सभक चिंताक केन्द्रसँ एखनो ओ वर्ग तत्वतः बाहर थीक जे वृहत्तर होयबाक संग-संग सांस्कृतिक विकासक असली कारक कि

माटि-पानिसँ अधिक सम्पृक्त रहल अछि आ तें हमरा सभक चिन्तो खण्डित रहबा लेल अभिशप्त बनल रहैछ। हम ई स्वीकार करैत छी जे अभिजात वर्ग द्वारा अपनाओल सांस्कृतिक अवधारणा ओहि सम्पूर्ण जाति, समुदाय कि क्षेत्रक संास्कृतिक चेतनाक आत्मा होइत छैक, मुदा तकर अभिव्यक्तिक सभ उपादानक ओरिआओनमे ओहि वर्गक प्रमुख भूमिका रहलैक अछि जे एहि वा ओहि कारणसँ ओहि संस्कृतिक बारल वर्गक रहल अछि। हम सभ अपन साहित्यमे ओहि बारल वर्गक जीवन आ संस्कारकेँ यथास्थान प्रतिष्ठित कयलाक बादे, अभिजात आ लोक संस्कृतिक बीच संवाद स्थापित कैयेक' अपन सांस्कृतिक चेतनाक वस्तुनिष्ठताकेँ चिन्हित क' सकैत छी। हमरा सभक रचनाकार जे एहि दिशामे सजगता देखा रहल छथि तकर विश्वक भूमंडलीकरण संग अप्रत्यक्ष सम्बन्ध अवश्य छैक मुदा अपना प्रदेशक मण्डलवादी बिहाड़ि अलवत्त एकरा अधिक प्रभावित क' रहल अछि। भूमण्डलीकरणक प्रभाव जखन प्रत्यक्ष होयत त' ओ संस्कृतिक बहुतो पुरना तानी-भरनीकेँ नष्ट क' देत। ओना दृष्टि सम्पन्न वर्गक लेल वर्गीय संघर्षक जातीय संघर्ष दिस उन्मुख होयबे नितांत चिन्ताक विषय थीक, मुदा तथाकथित 'मनुवादी' संस्कृतिक हाथें आइधरि जे ओहि वर्गक दुर्गति होइत अयलैक अछि, तकर प्रतिक्रिया होयब त' अवश्यम्भावी छलैहे। हमरा सभक वेद-ब्राह्मण-उपनिषद-पुराण आ स्मृतिग्रंथ आ किछु शाखा-सम्प्रदायक सिद्धान्त सभक अनुशासनमे विकसित सांस्कृतिक चेतना 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया' सन बातक उद्घोष करैत काल समस्त मानव समुदायक बात निश्चिते नहि ध्यानमे रखैत छल, ओकर 'सर्वेक' परिधिमे मात्र 'आर्यजना:' कि 'संस्कृतजना:' समाहित छलाह।

कुला भाइ, मैथिली कथामे अन्तिम दशकमे आयल ई सांस्कृतिक चेतनाक स्वर की पूर्वसँ अबैत वर्ग-संघर्षक स्वरकेँ कमजोर कलेक अछि? की वर्गक स्थान पर वर्णक गप्प बेसी भ' रहलय? मैथिली कथा अपन यात्रामे भटकि त' ने रहल अछि? की सोचै छी अहाँ?

इन्दिरा गाँधीक आपातकालकेँ विरोधमे लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा सम्पूर्ण क्रान्तिक आन्दोलनक नेतृत्व कयल गेल। आपातकाल समाप्त भेल, इन्दिरागाँधी गद्दीसँ उतारल गेलीह, मुदा तकराबाद जे भेल आ भ'

रहल अछि ओ निश्चित रूपसँ जन-क्रान्तिक एकजुट होइत शक्तिकेँ छिन्न-भिन्न क' देलक। वर्ग संघर्षकेँ धकियबैत वर्ण-संघर्षक चेतना प्रत्यक्षत: समतावादी सामाजिक दृष्टिकोणकेँ पथभ्रष्ट क' रहल अछि आ हमरा लगैत अछि जे एकरा पाछाँ उएह शक्ति काजक' रहल अछि जे सम्पूर्ण क्रान्तिकेँ प्रतिक्रान्तिमे बदलि देलक। साहित्यमे इम्हर जोरदार ढंगसँ अभरैत सांस्कृतिक चेतनाक स्वर मे हमरा कखनोकाल फासीवादी अन्दाजक फुसफुसाहटि शामिल लगैछ।

भाइ, शताब्दीक अन्तिम दशकसँ आब अहाँके सत्तरि-पचहत्तरि वर्ष पाछू ल' चलैत छी। जखन मैथिलीक मौलिक कथा लेखन प्रारम्भ भेल। अहाँ अपन निबन्धमे कहने छी जे 'मैथिलीक मौलिक कथा अपन भारतीय स्वरूप आ आत्माकेँ चिन्हैत आरम्भ त' भेल, मुदा ओकर ढबमे परम्पराक विकास नहि छल, नवताक वेलूरिपना आ सकपकाहटि अलबत्त देखबामे आयल। क्रमश: डेग स्थिर आ गति सहज भेलैक तथापि गुलाम भारतक सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचारक मुखर विरोध ओहिमे परिलक्षित नहि होइछ।' परम्पराक विकास नहि हेबाक पाछाँ आ सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचार मुखर विरोध नहि हेबाक पाछाँ की कारण लगैत अछि अहाँके? की कथाकारलोकनिक अपन वर्गीय हितसँ बाहर नहि जेबाक अथवा बाहर नहि देखबाक मनोभाव एकर जड़िमे अछि?

अहाँक एहि प्रश्नक उत्तरमे संक्षेपमे जे हम कहि सकैत छी जे ओकर उत्तर अहाँ स्वयं अपन प्रश्नक अंतिम भाग मे द' देने छी। ओना अपना सभक साहित्य-संस्कार 'काव्य-शास्त्र विनोदेन' समय काटब त' संगत बुझैत अछि, मुदा कोनो मानवीय कि सामाजिक मूल्य लेल 'टंटा बेसाहब' अमर्यादित बुझैछ। विश्वमे भोगल जाइत नाना प्रकारक कष्ट कि संकटक अनुभूति त' ओकरा भेलैक अछि, मुदा कष्टमे काहि कटैत समुदायकेँ ओ बरोबरि नियतिक मारल बुझैत आयल अछि, जखन कि वास्तविकता ई छैक जे ओ एक वर्ग द्वारा बुधियारीसँ चलाओल सामाजिक व्यवस्थाक नाम पर दोसरवर्गक सम्पूर्ण शोषणक नग्नलीला थीक। हमरा सभक जन-हित-चिन्तन बरोबरि वर्गीय चिंतन रहल अछि, ओहिवर्गक चिन्तन जे अपन समुदायक लाभ-हानिक प्रति सतर्क रहैत सभ जीवमे ब्रह्म दर्शन करैत आयल अछि।

ओ वर्ग दया, बन्धुत्व आ स्नेहसँ खूब परिचित अछि, मुदा ओकरा दृष्टि मे एकर अधिकारी विशिष्ट वर्गेटा रहलैक अछि।

भाइ, अहाँ अपन निबन्धमे कहैत छी जे 'मैथिली मे मौलिक कथा-लेखनक संगे कथा अपन वाचिक की, लिखित परम्परासँ विछिन्न भ' गेल अछि। हिन्दी मे कथाक आरंभमे प्रेमचन्दक कथामे भारतीयकथा-चेतनाक जाहि सातत्यक दर्शन होइछ, ओहेन किछु यदि मैथिलियो कथामे परिलक्षित होइत त' अपन कथा-दृष्टिक गप्प संभव छल। प्रो. हरिमोहन झाक कथा बादमे जाहि जातीय आ क्षेत्रीय विशेषताक संग उपस्थित भेल तकरो अनुसरण भेल रहैत त' एहन चर्च लेल आधार बनैत। मुदा से नहि भेल आ मैथिलीक मौलिक कथा आदिएसँ अनठीया गमलामे पल्लवित-पुष्पित भेल। तैं विश्वकथा दृष्टि, कमसँ कम सामान्य भारतीय दृष्टिसँ पृथक कोनो स्वतंत्र दृष्टि मैथिलीमे विकसित नहि भेल।' भाइ, मोटामोटी सभ आधुनिक भारतीय भाषामे कथाक विकास त' अनठीये गमलामे भेल अछि। हिन्दीयो मे प्रेमचन्द्रक बाद से बात कहाँ रहल। तखन मैथिलीमे स्वतंत्र दृष्टिसँ की तात्पर्य अछि अहाँके? कने स्पष्ट करियौक।

हम अहाँक एहि टिप्पणीसँ सहमत छी जे अजुका अधिकांश भारतीय भाषाक कथा-साहित्य अनठीये गमलामे फुलायल अछि आ हमरा सभक देशी वाचिक परम्पराक अवेशेषो आब लिखित साहित्यमे देखबामे नहि अबैछ आ एहि दृष्टिसँ मैथिली कथाक स्थिति कोनो भिन्न नहि कहल जा सकैछ। ई बातो सत्य थीक जे प्रो. हरिमोहन झाक समाने प्रेमचन्दोक 'किस्सागोई' कि कथा कहबाक छवि-छटाक सम्हार परवर्ती रचनाकार लोकनि द्वारा संभव नहि भेलनि वा खाहे ओ अपना समयक बात कहबा लेल उपयुक्त नहि जँचलनि, मुदा प्रेमचन्दक सामाजिक-वैचारिक दृष्टि बादक बहुतो हिन्दी कथाकारकेँ दिशा-निर्देश देलकनि, जखन कि प्रो. हरिमोहन झा एकटा एहन आदर्श बनिक' रहि गेलाह जे अनका ककरो अनुकरणक सुविधा प्रदान नहि क' सकल, ककरो अनुकरण हेतु तत्वत: अनुप्राणित नहि क' सकल। हमरा एकर प्रमुख कारण प्रेमचन्दक साहित्यक दुनियाक विस्तृत होयब तथा प्रो. झाक दुनियाक संकुचित होयब लगैछ।

प्रेमचन्दक सत्य जत' समस्त हिन्दी क्षेत्रक सत्यकेँ आत्मसात कयने रहल, प्रो. झाक सत्यक खण्डित रूप तकरा अगिला उदारपीढ़ी लेल कोनो सम्यक वैचारिक दृष्टिक ओरिआओन नहि क' सकल। प्रेमचन्दक साहित्य जाहि वृहत्तर वर्गकेँ सम्बोधित अछि, ओ अखनो ओहि साहित्यमे अपन जीवनक सत्य संग न्यूनाधिक रूपमे अपन सरोकार बनल देखैछ, जखन कि प्रो. झाक साहित्य द्वारा सम्पोषित सीमित वर्ग आब अपन जीवनक सत्यक धरातल सर्वथा अलग देखैत अछि, जीवन-मूल्य सर्वथा बदलल देखैत अछि।

मैथिली कथाक अपन स्वतंत्र दृष्टिसँ हमर अभिप्राय ओकरा कोनो क्षेत्रीय सीमामे बान्हब कथमपि नहि थीक। हम त' मात्र एतबा कह' चाहैत छी जे कोनो विषयक उपस्थापनमे ओकर ओ जातीय विशिष्टता स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित होयबाक चाही जे ओकरा बंगला कि तमिल कि मलयाली कथा-चेतनासँ भिन्न चरित्र प्रदान करतैक।

भाइ, एही क्रममे एकटा प्रश्न अहाँसँ पुछबाक मोन कर' लागल अछि। ओना ई मैथिली कविताक सन्दर्भमे बेसी स्पष्ट ढगेँ देखल जा सकैत अछि।की परम्पराक विकास उचित ढगेँ नहि हेबाक पाछाँ ई जीर्ण लेखन-नवलेखनक सोरहो त' ने अछि? की ई स्पष्टत: दू गोला भ' गेनाइ विकासकेँ प्रभावित त' ने कलेक? की हमरालोकनि दू अतिवादी दृष्टिकोणमे त' नहि फँसि गेलहुँ? मैथिली कथाक प्रसंगमे अहाँक की विचार? की मैथिलीमे एहि दृष्टिसँ कथा आ कविताक विकासकेँ फुटकाओल जा सकैत अछि?

नव लेखन शब्द हम सभ हिन्दीसँ उधार लेल अछि। हिन्दीमे ई शब्द एक विशिष्ट प्रकारक लेखन हेतु प्रचलित कयल गेल। मैथिलीमे नव लेखनक तात्पर्य आधुनिके लेखनसँ रहल अछि। नव वा आधुनिक लेखन अपन तात्त्विक विशेषताक कारण पारम्परिक लेखनसँ पृथक होइत अछि। समय आ समाजकेँ देखबाक ओ अन्तरे ओ मूल कारक थीक जे एहि दुनू प्रकारक लेखनकेँ पृथक बगयबानी प्रदान कयल। नव लेखनक प्रति नव पीढ़ीक आग्रह-दुराग्रहकेँ एही सन्दर्भ मे देखल देल जा सकैछ। पुरना मूल्य सभक एक-एक क' ध्वंस आ नव-नव सामाजिक सम्बन्धक स्थापनामे परम्पराक विकासक वास्तविक अवरोधक कारणकेँ चिन्हित कयल जा सकैछ।

अहाँ लिखैत छी जे 'आरम्भक आधुनिक मैथिली कथा बहुतो अर्थमे मध्य वा निम्न मध्यवर्गक सचेष्ट लोकसभक मोहभंग, आलस्य, क्षुत्रता, निरीहता आ टूटैत जयबाक निरंतर यंत्रणाक कथा थीक। उत्साह आ निर्माणक स्वर ओहि कथा सभमे कतौ कान नहि पड़ैछ।' भाइ, एकर की कारण लगैत अछि अहाँके? की सम्पूर्ण मिथिला समाजमे उत्साह आ निर्माणक स्वर कतहु नहि रहय? अथवा कथाकारलोकनिक कान मे ई स्वर नहि पहुँचि सकलनि?

अंग्रेजी शासनक अवधिमे भारतीय समाजक तानी-भरनी तेनाक' अव्यवस्थित नहि भेल छल, जेना कि ओ स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद भेल आ स्वाधीनतासँ प्राप्त खुशी तें लगले विलायब आरम्भ भ' जाइछ। बदलैत सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धक उच्छृंखलता जेना-जेना अधिक देखार होइत गेल, लोकक व्यवस्थाक प्रति असंतोष बढ़ैत गेल, मुदा सामाजिक सम्बन्धक नव समीकरण अस्पष्ट रहबाक कारणें चिन्ताकुल होइतो लोक समाधानक ने त' नव रस्ता देखि रहल छल आ ने कोनो नव रस्ता पर आश्वस्ति संग डेग बढ़यबा लेल प्रस्तुत छल। मैथिली आधुनिक कथाक आरम्भिक काल समाजक एही द्विविधाक कथा कहैत अछि।

भाइ, एकठाम अहाँ लिखने छी जे 'मैथिली कथामे निम्नवर्ग कि त' अपन प्रकृत रूपमे आयले नहि अछि, खाहे आयलो अछि त' ओहिरूपमे जाहिरूपमे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग कि निम्न मध्यमवर्गकेँ कतौसँ हिंस्र प्रतीत नहि भेलैक।' की अहाँ आइयो यैह मानैत छी? अथवा स्थितिमे कोनो परिवर्त्तन लगैत अछि? परिवर्त्तन अयलैक अछि त' कोना? कहेन? यदि नहि अयलैक अछि त' एकर की कारण लगैत अछि अहाँकेँ?

हम अपन टिप्पणीसँ एखनो सहमत छी। कोनो बदलाओ किया नहि आबि सकल अछि, ई अलबत्त विचारणीय थीक। वास्तवमे निम्नवर्गक दशा-दुर्दशाक लेल जिम्मेदार हाथेसँ साहित्यक कठपुतरीक डोरि घिचाइत रहल अछि आ तें सत्यक निरूपणक मार्गमे कतोक तरहक कुण्ठाक अवरोध बनल रहल अछि। हम सभ कृषि आधारित अर्थ व्यवस्थासँ औद्योगिक अर्थ व्यवस्था कि पूंजीवादी अर्थ व्यवस्थासँ छलांग लगबैत आब उपभोक्तावादी अर्थ व्यवस्थाक व्यूहमे फँसबा लेल वृत्त छी। एहि आपाधापीमे सामाजिक

संरचनाक तानी-भरनीमे तेनाक' बदलाओ आबि गेलैक अछि जे ओहि विशिष्ट वर्गक गप्प करब आब सहज भ' गेलैक अछि।

सातमदशकक मैथिलीकथा पर टिप्पणी करैत अहाँ लिखैत छी जे, 'लागत जेना सातम दशकक मैथिलीकथाकेँ विचारक प्रौढ़ि त' हासिल भेलैक, मुदा निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभावमे कोनो व्यवस्थित आ विश्वासयोग्य प्रतिरोध लेल आधारभूमि तैयार करब ओकरा लेल संभव नहि भेलैक। आर्थिक आ राजनीतिक पस्तीक बादो लोकक आँखिमे शील आ विचारमे कुलीनता, सुलभ मूल्यक बात समाप्त नहि भेलैक। ओ परिवर्त्तनक उदीप्त आकांक्षा रखितो विरोधमे हाथ उठा लेबाक मनस्थिति नहि बना पबैछ।' की भाइ, अहाँकेँ लगैत अछि जे निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभावकेँ अतिरिक्त एकर कारण अपन इतिहास ओ संस्कृतिक फरीछ ज्ञानक अभाव सेहो अछि? प्रतिरोध आ विरोधक इतिहास आ परम्पराकें झाँपि देबाक चेष्टाक ई एक कुफल थिक? प्रतिरोध लेल आधार भूमि तैयार करबाक लेल हमरालोकनिकेँ अपन सामाजिक-राजनीतिक ओ सांस्कृतिक इतिहासकेँ हिला-डोलाक' देखं' पड़त? की लगैये अहाँके?

हमरा नहि लगैत अछि जे हमरालोकनिक प्रतिरोध कि विरोधक कोनो ठोस परम्परा कि विश्वासयोग्य इतिहास रहल अछि। वृहत्तर भूखण्डक नीक अधलाह सामाजिक संचरण संग एकात्म होयबाक यत्न मैथिलक इतिहासमे बड़ थोड़ आ सेहो बड़ दुर्बल लागत। अखनुक समय लेल आवश्यक प्रतिरोध-विरोधक भूमि तैयार करबालेल पुरना परम्परा कि इतिहासकेँ हिला-डोलाक' देखबासँ श्रेयस्कर तकरा एक हदधरि बिसरि नब परम्परा आ नब सामाजिक समीकरणक सम्बर्द्धनक दिशामे डेग उठायब हायत। हमरा सभकेँ एहि भूमण्डलीकरणक दुनिया आ मण्डलीकरणक समाजमे ई बात बिना कोनो ननुनचकेँ स्वीकार कर' पड़त जे वर्ग कही वा वर्ण ओकर संख्या मात्र दूटा छैक। एहि सत्यक स्वीकारसँ हम सभ परम्पराक आ इतिहासक बहुतो बान्ह छैक केँ हँटा स्वतंत्र आ व्यवस्थित चिंतन आ लक्ष्यगामी अभियान लेल प्रस्तुत भ' सकब।

सातम दशकक मैथिली कथा पर हमर जाहि टिप्पणीक उल्लेख अहाँ कयल अछि, ओकर वस्तु सत्यसँ हम एखनो सहमत छी। हम त' एखनो ई देखि हतप्रभ छी जे मैथिलीक अधुनातन प्रवृत्तिक कथाकारो प्राय: एहि लेल चिंतित नहि छथि जे एखनधरि कोनो एकात्म परम्परा आ सार्वजनीन ऐतिहासिक सत्यक दर्शन हमरा सभक मोनमे फरीछ नहि भ' सकल अछि।

भाइ, आठम दशकक कथा यात्रा पर दृष्टिपात करैत अहाँ कहैत छी जे 'एतेक दूर अबैत-अबैत कथाक सभ पुरंना परिभाषा अव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त प्रतीत होबय लगैत अछि। तखने एहि सत्यक अनुभूति भेल जे कथाक इतिहासे कथाक एकमात्र संगत परिभाषा होइछ। अखनुक कथा त' एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भ' गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैछ। प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइछ। ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइछ।' भाइ, कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छापक कारण की कथाक अन्तर्वस्तु जटिल भ' गेल? कथा जे सामान्यत: वाचिक परम्परामे सोझ, सादा-सादी रहैत छल से बदलि गेल? कथाकार आ पाठकक सम्बन्धक दृष्टिसँ ई केहन घटना लगैत अछि अहाँके?

कथ्य कि शिल्प पर कथाकारक बढ़ैत छाप आ कथाक अन्तर्वस्तुक संशिष्ट होयबाक बीच हम कोनो तात्विक सम्बन्ध नहि देखैत छी। कथाकारक वैयक्तिकता कथाक प्रभान्वितिकेँ त' स्पष्टत: प्रभावित करैत छैक, मुदा कथाक संरचना कि ग्रथन-तंत्रकेँ मूलत: ओकर कथा-तत्त्व प्रभावित करैत छैक। कथाक अन्तर्वस्तुक संशिष्ट होयबाक खतरा मनोजगतमे विचर'वला कथा संग अधिक होइत छैक। देखार दुनियाक ओझरो देखारे होइछ।

एहिठाम एकटा आर बात भाइ। हरिमोहन बाबूक पाठककेँ अहाँ मैथिली कथाक पाठक मानैत छी? की ओहि पाठकक विकास मैथिलीमे भेल अछि अथवा हरिमोहन बाबूक वाद नब पाठक, नब रसबोधक संग मैथिलीमे आयल अछि? की लगैये अहाँकेँ?

मैथिली कथा साहित्यक आरंभिक कालमे मैथिली पाठकक वृहत्तरवर्ग निश्चित रूपसँ प्रो. हरिमोहन झाक कथाक पाठक छल जकरा ओ नव

रसज्ञता प्रदान करबामे सफल भेल रहथि। तखन ई भिन्न बात थीक जे बादक कथाकार जें कि प्रो. झाक कथाकारितासँ भिन्न पथ पर डेग बढ़ा अग्रसर भेलाह। प्रो. झाक कथाक पाठकक बगय बदलि गेलैक, ओकर मोनक चिन्तो-दुश्चिन्ता फराक भ' गेलैक। प्रो. झा सराहल एखनो जाइत छथि, मुदा ओहि सराहनामे वर्त्तमानक अनुराग नहि, इतिहासक पूर्वराग भेटैछ।

अहाँ कहने छी जे 'आधुनिक मैथिली कथाके ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्तक योगदान आन सभ कथाकारक तुलनामे अधिक व्यापक छनि। ललित अपन भाव आ भाषाक सहजता, राजकमल अनुभूतिक अक्खड़पन आ आन्तरिक करूणा, मायानन्द मिश्र अपन बोधक सुकुमारता, राजमोहन झा अपन तराशल शिल्प आ स्पंदित भाषा, प्रभास कुमार चौधरी अपन विषयक संग सुपरिचय आ वर्णनक संतुलित रूखि आ जीवकान्त अपन कथा वस्तु आ अभिव्यक्तिमे अन्तर्निहित वेग ल' कए चिन्हार होइत छथि। एहिक्रममे धूमकेतुक कथाक कोन विशिष्टता अहाँके आकर्षित करैत अछि? अगुरवान सँ ल' कए छठिपरमेसरी ओ एकटा मूल्यहीन कथाधरिक हम सन्दर्भ ल' रहल छी।

आधुनिक मैथिली कथाक उपलब्धिमे प्रमुख योगदानक प्रसंग हमर जाहि टिप्पणीक अहाँ उल्लेख कयल अछि, ओहिमे धूमकेतुक नाम नहि छनि आ एहि लेल उचिते हमरा अपन स्थिति स्पष्ट करबाक चाही। एहि प्रसंग पहिल बात ई जे जहिया ई टिप्पणी लिखल गेल छल तहियाधरि धूमकेतुक 'छठिपरमेसरी' कि मूल्यहीनकथा' लिखल नहि गेल छल। ओना एहि दुनू कथाक प्रकाशनक बादो हमरा विचारसँ आधुनिक मैथिली कथाकेँ महत्त्वपूर्ण अवदान देनिहार कथाकार सभमे धूमकेतुक नाम ओहि कथाकार लोकनिक नामक बादे लेल जयबाक चाही, जिनका लोकनिक उल्लेख प्रसंगाधीन टिप्पणीमे हम कयल अछि। धूमकेतुक कथाकारक लेल हमरा मोन मे पर्याप्त आदरक भाव अछि। हम अपन ओही टिप्पणीमे आगाँ लिखने छी जे– 'अपन एकान्त रूपसँ नव रचनात्मक संबेदना आ नव सौन्दर्य-आस्थाक, कारण हिनक (धूमकेतुक) कविता आ कथा अपन बहुतो समकालीनसँ

पर्याप्त भिन्न गोत्रक आ परवर्त्ती पीढ़ीक रचना-धर्मिताक समगोत्री प्रतीत होइछ। सभ लोकधर्मी रचनाकार जकाँ समय-शोधित जीवंत मूल्यक लेल ईहो आग्रह रखैत छथि, मुदा परम्परा जर्जर निस्पन्द मूल्यक प्रति हिनका कोनो मात्सर्य नहि छनि। बहुतो बारल मनोभावक प्रकृत संवेदनाकेँ पकड़ि ई व्यक्तिक कतोक मनोग्रन्थिकेँ विश्लेषित क' ओकरा पाठकक सोझाँ प्रस्तुत करैत छथि आ एहि क्रममे अन्तरक अबोल सत्यसंग सोझ साक्षात्कार करबैत छथि। 'अगुरबान', 'टिटिम्हा', 'देह', छहोछित्त', 'बताह' आ 'भरदुतिया' हिनक किछु रम्य आ प्रिय कथा अछि।' हँ, सम्भव थीक जे तहिया जँ हमरा 'छठि परमेसरी' कि 'एकटा मूल्यहीन कथा' पढ़बा लेल उपलब्ध भेल रहैत त' हमर उल्लिखित टिप्पणीक स्वर किछु भिन्न होइत। हमरा यदि धूमकेतुक दूटा कथाक नाम लेबाक लेल कहल जाय त' हम 'अगुरबान' आ 'एकटा मूल्यहीन कथा'क नाम लेब आ धूमकेतुक कथाकारक प्रति अपन धारणाकेँ 'अण्डरलाइन' करब।

भाइ, मैथिली कथामे किछु कथाकार जेना रमानन्द रेणु, विभूति आनन्द आदि निम्नवर्गक भाषा-भंगिमाक संग कथा कहि सामान्य धारासँ फराक अपन परिचित बनौलनि। मुदा हिनकालोकनिक प्रयास अथवा आन्दोलन गति नहि पकड़ि सकल। एकर की कारण मानैत छी अहाँ?

निम्नवर्गक भाषा आ भंगिमाकेँ अपनाके कथाक पात्र आ परिवेशकेँ यथार्थक स्वर आ संस्कार देबाक चेष्टा त' ठीके होइछ जा धरि रचनाकार ओहि पात्र आ परिवेश संग आत्मीय आ अकृत्रिम सम्बन्ध स्थापित नहि क' पबैछ, ता धरि कथाक धारा सामान्य धारासँ सारतः फराक नहि होइछ। औपचारिक लगाओसँ एहनामे बात नहि बनैछ। रमानन्द रेणु कि विभूति आनन्द सन कथाकार अपन प्रतिपाद्य संग ओ सम्बन्ध सूत्र जोड़बामे सफल नहि भेलाह। ओहुना एहि तरहक 'विशिष्ट' प्रयास सामान्यतः आन्दोलन ठाढ़ नहि क' पबैछ। हिन्दीमे आंचलिक उपन्यासक धारा त' चलल, मुदा 'मैला आंचलो' कोनो आन्दोलनमे नहि बदलि सकल। हमरा लगैत अछि जे रचनामे पर्याप्त वस्तुनिष्ठ होयबा लेल अपना विषय संग बहुतो स्तर पर एकमेत होयब आवश्यक होइछ। महाश्वेता देवी होयब सभक लेल संभव नहि, तें जंगल आ जंगलवासीक कथो लिखब सभक लेल सम्भव नहि।

भाइ, मैथिली कथामे कविताजकाँ सहजतावाद, अकवितावाद, नवचेतनावाद, अभिव्यंजनावाद आ तदर्थवाद आदि कोनो नारा वा आन्दोलन नहि देखाइ पड़ैत अछि। एकर जड़िमे की कारण लगैत अछि अहाँकेँ? की मैथिली कथा पर हिन्दीक 'नई कहानी' आन्दोलनक कोनो प्रभाव लगैत अछि अहाँकेँ?

आधुनिक मैथिली कवितामे कोनो आन्दोलन कि नाराक पाछाँ कोनो सुविचारित दर्शनक बरोबरि अभाव रहल आ तें एहिमे अधिकांश अपन स्थापक धरि सिमटि क' रहि गेल। कोनो एहन आन्दोलन अपन सार्थकता एहि लेल सिद्ध नहि क' सकल कारण जे आधुनिक कविताक प्रचलित दू धारा (परम्पराक प्रति निर्मोह कि परम्पराक प्रति मोह पोसैत) सँ अपन एकदम भिन्न पहिचान बनाएब ओकरा लेल संभव नहि भेलैक। सभ उछल-कूदक बादो राजकमल चौधरी सन कवियो अपन कविताकेँ कोनो दोसर धारा कि नामसँ नहि जोड़ल। मैथिली कथामे यदि कोनो आन्दोलनक विशिष्ट आन्दोलनक सूत्रपात नहि भेल त' एहिसँ मैथिली कथा कतोक वैचारिक ओझरासँ बाँचि गेल। हिन्दीक 'नई कहानी' एकटा आन्दोलनक रूपमे प्रकट भेल छलैक जे किछु वैचारिक आग्रह-दुराग्रहकेँ अपन आधार बनौने छल। हिन्दी नवकविताक 'लघु मानव'क वर्चस्व हिन्दीक नई कहानियाँ पर निर्विवाद रूपसँ पड़ल छैक। मैथिलीक आधुनिक कथाक काल-विभाजन त' एहि वा ओहि आधार पर कयल जाइत रहल अछि, मुदा विषय कि तकर प्रतिपादनक भिन्नताक दृष्टिसँ कथाक वर्गीकरणक चेष्टा मैथिलीमे नहि भेल अछि। आब हम ई त' स्वीकार करब जे मैथिली आधुनिक कथा हिन्दीक नई कहानीसँ विषय संग सम्बन्ध स्थापित करबाक संस्कार आ तकरा संग निबाहबाक कौशल त' अर्जित कयलक अछि, मुदा अपन विशिष्ट अनुभूतिक पृथक सौन्दर्यक अलग-पहिचान लेल विषय-वस्तुक उपस्थापनक प्रक्रियाकेँ अपन जातीय संस्पर्श नहि द' सकल।

भाइ, कथा ककरा कही अथवा आइ कथा केहेन रचना भ' गेल अछि ताहि पर अहाँ अपन निबन्धमे त' विचार कने छी। अपन फराक, खास दृष्टि संग मैथिली कथा नहि उपस्थित भेल अछि सेहो बात अहाँ मानैत छी। मुदा कोनो कथाकारक कथाके कोन तत्व सभ मैथिली कथा बना दैत अछि? मैथिली कथाक परिचिति लेल कोन निम्नतम तत्वक अनिवार्यता अहाँ जरूरी बूझैत छी? एहि लेल कोनो अनुशासन अहाँकेँ आवश्यक लगैत अछि कि नहि?

अहाँक जिज्ञासा ई अछि जे मैथिली कथाकेँ मैथिली कथा-होयबा लेल ओहिमे कोन-कोन तत्त्व सभक उपस्थिति हम जरूरी मानैत छी। अहाँ अपनो स्वीकार करब जे अहाँक एहि जिज्ञासाक उत्तरमे बहुत फरिछाओल बात कि निश्चित बिन्दु नहि गनाओल जा सकैछ। ओना 'मैथिलीक आरम्भिक अवधिक कथाकार लोकनिक कथामे मैथिल-संस्कार ततेक प्रकृतरूपमे आयल अछि जे तकरा चिन्हबा लेल कोनो तरहक चश्माक जरूरति नहि। ललितसँ ल'क' जीवकान्त धरिक रचनाकारक कथामे विशिष्ट मैथिलत्वक छाप खाहे नजरिए नहि आओत खाहे ओ गैर-मैथिल चेतना संग तेनाक' एकमेत भेल लागत जे तकरा आधुनिक मैथिली-कथा कहबासँ अधिक उपयुक्त ओकरा आधुनिक भारतीय कथा कहब होयत।

सुभाषचन्द्र यादव मैथिली कथाक बहुतो रूढ़िके तोड़बाक संग मैथिली कथाकेँ पुन: ओहि सुगन्धिसँ सुवासित कयलनि जे हम सभ मैथिलत्वक सुगंधिक रूपमे जनैत आयल छी। तखन ई भिन्न बात थीक जे प्रो. हरिमोहन झा कि उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथाक मैथिल-चेतना आ सुभाष चन्द्र यादवक मैथिल-संस्कारक बीच अभिजात-अनभिजातक एहन देवार ठाढ़ अछि जे जकरा तोड़ब अनिवार्य होइतो ओ आइधरि तोड़ल नहि गेल अछि। एहि लेल ओहेन विचारकलोकनि अधिक उत्तरदायी छथि जे सभ प्रो. हरिमोहन झाक कथा-संसारमे समस्त मिथिलाकेँ समाहित देखैत अयलाह अछि। ओकर बाहरक दुनियाँ हुनका अपन सोचक स्थापना लेल अनावश्यक लगैत रहलनि अछि।

धरती एक होइतो सभठाम एक रंग नहि छथि। तहिना मनुक्ख जाति तत्वत: एक होइतो कतोक तरहक भिन्नता रखैत अछि। एहि भिन्नताक कारण सभकेँ आब जानल-बूझल छैक। चीन, जापान, भारत वा आन देश एके भूमिक भाग होइतो भौगोलिक भिन्नताक अतिरिक्त ऐतिहासिक आ वैचारिक भिन्नतोक रूपमे देखल जाइछ। तें कोनो रचना अपन जातीय आ क्षेत्रीय संस्कारकेँ आत्मसात् क' वैश्विक सोचक संग होइतो अपन संवेदनागत विशिष्टताक कारण अपन पृथक पहिचान बना सकैछ। मैथिलीक कथाकारोकेँ अपन विशिष्टताक रक्षा हेतु एक संगे कतोक दुनियामे रहबाक संग-संग भिन्न-भिन्न क्षेत्र आ दुनियाँक सोच संस्कार संग आत्मीयता स्थापित क' अपनाकेँ ओहि भिन्न-भिन्न दुनिया आ सोचक अपनाकेँ सहभागी आ सहभोक्ता बना अपन असंदिग्ध पहिचान लेल नव ओरिआओन कर' पड़तनि। अपन इतिहास आ संस्कृतिक पुर्नअन्वेषण दुरूस्त बात थीक। मुदा

एहि अन्वेषणकेँ एकांगी नहि होयबाक चाही। एहि पुर्नअन्वेषणमे मानव जातिक समस्त अधिवास आ सम्पूर्ण चिंतनक प्रतिफलोक प्रभाव देखार होयबाक चाही। समता आ एकताक समस्त दण्ड-प्रणायामक बादो ई एकटा सत्य थीक जे सुकरात, अरस्तू आ भरतमुनिमे तात्विक अन्तर छनि जे हुनक मनुक्खकेँ छोट-पैघ घोषित कयने बिना हुनका सभकेँ पृथक करैत छनि। वेद, बाइबुल, कुरान आदि सभ धर्म चिंतन मानवक हित-चिंतन करितो अपना चिन्तनमे भिन्न अछि। तहिना भिन्न-भिन्न विश्व साहित्य कि देशीय साहित्यक सहगामी होइतो मैथिली रचना अपन फराक अस्मिताकेँ निस्संकोच भावसँ फराक राखि सकैत अछि।

अन्तमे भाइ, मैथिली कथाक समालोचना पक्षपर अहाँक विचार जान' चाहब। की आइधरि जे समालोचना अहाँक दृष्टिमे आयल अछि से मैथिली कथाक इतिहास, प्रवृत्ति, कलात्मकता ओ सामाजिक सन्दर्भके फडिछा क' सोझाँ आनि सकल अछि? अथवा अहूमे अहाँकेँ मैथिल मानसक अतिवादिता हाबी लगैत अछि?

अहाँक लेल ई सोचि पायब बहुत आसान थीक जे एहि प्रश्नक उत्तर देब हमरा लेल धर्म संकटक संग सोझ साक्षात्कार थीक। प्रतिष्ठित समालोचक मोहन भारद्वाजक पुस्तक 'अनवरत'क भूमिकामे हम मैथिली आलोचनाक विद्यमान स्थिति-दु:स्थितिक सम्बन्धमे किछु अपन सोच प्रस्तुत कयने रही, यद्यपि हमर सभ बात ओहि 'प्रकाशित' भूमिकामे कोनो कारणसँ शामिल नहि थीक। हम एखनो ई मानैत छी जे प्रो. रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनाक काज बहुत कालधरि गम्भीरता ओ आग्रहहीनताक संग सम्पादित नहि भेल। प्रो. झा आग्रहहीन रहथि, ई हम नहि कहब मुदा ओ अपन काजक प्रति गम्भीर रहथि, ई हुनक शत्रुओ स्वीकार करताह। मैथिली आलोचनामे अखन जे हमरा देखबामे आबि रहल अछि ओहिमे सभसँ भयावह बात ई थिक जे आलोचना रचनाक नाम पर नहि, रचनाकारक नाम पर आग्रही भ' रहल अछि। क्यो हमर उल्लेख कत्तौ करैत छथि त' हमरो ई धर्म बनि जाइछ जे हम हुनक गुणगान करियनि। वस्तु अपना जगह जड़बत स्थापित रहैछ आ आलोचनाक आँखिये ओकर स्वर आ स्वरूप स्पष्ट होइछ। जखन कि वस्तुक स्वर आ स्वरूपेकेँ ओहि रचनाक चरित्रकेँ विश्लेषित करबाक चाहैत छलैक। ओकर आलोचनाक दिशा स्थिर करबाक चाहैत छलैक।

मैथिली आलोचनाक क्षेत्र मे प्रो. रमानाथ झाक बाद व्याप्त अन्हार किछु अधिक समयधरि व्याप्त रहल, मुदा से इम्हर पतराय लागल अछि।

आब वस्तुनिष्ठ आलोचक आ आलोचनामे संख्यात्मक आ गुणात्मक दुनू तरहक अभिवृद्धि भेल अछि। हम ई मानैत छी जे आलोचनाक क्षेत्रमे अखनो निष्ठापूर्वक काज कयनिहार व्यक्तिक संख्या बहुत थोड़ अछि, मुदा ई संतोषक विषय थीक जे नव लेखक सभक रचनात्मक क्षमताक संग आलोचनात्मको क्षमताक स्तर ऊँच भेलनि अछि। हमरा इम्हर राजमोहन झा, मोहन भारद्वाज, हरेकृष्ण झा, तारानन्द वियोगी सन किछु व्यक्ति अपन आलोचनात्मक दृष्टिसँ पर्याप्त आश्वस्त कयलनि अछि। एहि सभ व्यक्तिमे मोहन भारद्वाजक आलोचनात्मक लेखन हमरा सभसँ व्यवस्थित आ दृष्टि-सम्पन्न लगैत अछि। ओना प्रतिमानक अनुसार वस्तुके देखबाक स्थान पर वस्तुक अनुसार प्रतिमान गढ़ब हिनका अपन बात कहबा लेल बहुधा अधिक अनुकूल होइत छनि।

हमरा मैथिली आलोचनामे आलोचनाक उपयुक्त भाषाक अभाव बरोबरि सर्वाधिक चिन्तित करैत रहल अछि। जेना कविताक भाषामे कथा लिखब बेढब होइछ, ओहिना हमरा सभके निबन्धक भाषामे आलोचना लिखब बेढब बूझि ओकरासँ परहेज करबाक चाही। निबन्धक भाषामे विशेषार्थक ध्वनि ओकर स्वरूप आ चरित्रकेँ स्पष्ट होयबामे वाधक बनैत अछि। जखन कि आलोचनात्मक प्रभावान्वितिक दृष्टिसँ ओ लाभप्रद होइछ। हम आलोचना मे सांध्य-भाषाक पक्षपाती कथमपि नहि छी, मुदा ओकरा भाषामे अखबारी कि निविदात्मक स्थूलता हमरा त्रस्त करैत अछि। आलोचना लेल कोनो स्थितिमे कोनो सर्वेक्षण-प्रतिवेदन, अंकेक्षण प्रतिवेदन कि घटना स्थलसँ पठाओल प्रतिवेदनक यथातथ्यता काम्य नहि होइछ। ओ त' कोनो रचनाक ओहि सौन्दर्यबोध आ यथार्थोस्थापनकेँ विवेचित आ विश्लेषित करबा धरि सीमित रहि रचनाकार आ पाठकक बीच ओहि संवादकेँ आरम्भ करबाक आधार तैयार करैत अछि, जकर परिणति रचनाकार आ पाठकक बीच आत्मीय सम्बन्धक स्थापनामे होइछ। ओकर भाषामे कोनो न्यायाधीशक भाषाक निर्णायक भंगिमो काम्य नहि थीक। एकटा अधिवक्ताक भाषाक लोच ओकरा अपन विन्दुकेँ स्पष्ट करबामे अधिक सहायक होयतैक। प्रायः आलोचनाक भाषाक सम्बन्धमे हम अपन बात स्पष्ट नहि क' सकलहुँ अछि, मुदा हमरा द्वारा उल्लिखित संकेत सभसँ हमर अभिप्राय बुझबामे लोकके असुविधा नहि होयतैक।

(सन्धान-4, जुलाई 2000)

卐

मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकेँ पढ़िक' कयल जयबाक चाही

['मिथिला जनपदकेँ स्मार्त ब्राह्मणक प्रभुतासम्पन्न देश कहल गेल अछि। ई विशेषण कहियो लाभकारी नहि छल, आजुक समयमे त' एकदम्मे नहि अछि। मुट्ठी भरि लोकक आचार-विचार आ सौख-सेहन्ता कोनो जनपदक खुशी आ सम्पन्नताक मापदण्ड नहि भ' सकैत अछि। एहि मापदण्ड केँ बदल' पड़त। कसौटी ताक' पड़त। महाजनक तराजू आ बटखरासँ संस्कृति आ साहित्यकेँ जाधरि तौलैत रहब ताधरि यैह हाल रहत।'

सहजता सँ साफ-साफ बात कह'बला दृष्टि-सम्पन्न समालोचक मोहन भारद्वाजक कथन सोचबा लेल विवश कैए टा देत। चाहियो क' हुनकासँ असहमत होयब कठिन अछि। हुनका संग विभिन्न विषय पर विस्तारसँ अनुवादक, समीक्षक, पत्रकार आशुतोष झा सार्थक ओ महत्त्वपूर्ण संवाद केलनि अछि।]

अहाँ पछिला तीस वर्षसँ मैथिली साहित्यक सेवामे समर्पित छी। विद्यार्थी जीवनक बाद अहाँ केन्द्र सरकारक सेवामे आबि गेलहुँ। फेर मैथिलीक लेल एतेक समय कोना निकालि पबैत छी?

एहिठाम अहाँक जे पहिल वाक्य अछि ताहिसँ हम कनेक असहमति देखायब। जखन अहाँ कहैत छी जे मैथिली साहित्यक सेवामे हम समर्पित छी तखन अहाँक मोनमे धार्मिक दृष्टिकोण रहैत अछि। हम माँ मैथिलीक सेवा नहि करैत छी। मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक आ भाषिक विकास

केँ ध्यानमे राखिक' साहित्यक माध्यमकेँ अपनओने छी। सामाजिक कार्यक अनेक रूप भ' सकैत अछि। साहित्य सेहो ओहिमे एक अछि। साहित्य-रचना करबाक पाछाँ, हमरा जनैत, यैह सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण होयबाक चाही। हम एही दृष्टिकोणसँ प्रेरित-निर्देशित भ' क' साहित्यक कार्यमे लागल छी। दोसर बात, विद्यार्थी जीवनक बाद हम सोझे केन्द्रीय सरकारक चाकरीमे नहि अयलहुँ। 1964 मे एम. ए. कयलहुँ। लगभग डेढ़-दू साल साहेबगंज कॉलेजमे प्राध्यापक छलहुँ। तखने ए. जी. ऑफिसमे स्थायी नौकरी भेटि गेल। तकराबाद कतहु कोनो नोकरीक प्रयासे नहि केलहुँ। नोकरी करैत लेखन-कार्य सुविधासँ कयल जा सकैत अछि। नोकरीमे जतेक समय लगैत छैक ताहिसँ बेसी समय लेखन लेल अथवा लेखनसँ इतर कार्यक लेल बचैत छैक। मूल बात छैक इच्छा आ प्रवृत्ति। हम नोकरी एहि लेल करैत छी जे अपन आ परिवारक भरण-पोषण हो। हम लिखैत एहि लेल छी जे समाजक भरण-पोषण हो। दुनूमे कोनो विरोध नहि छैक। लेखन कार्य कने बेसी व्यापक छैक आ तेँ बेसी उचित तथा महत्त्वपूर्ण सेहो छैक।

एहिठाम हम एक बात आओर कह' चाहब। किछु साहित्यकार एहन छथि जे लेखन आ सामाजिक कार्यकेँ परस्पर विरोधी मानैत छथि। चेतना समिति, साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादेमी अथवा अन्य कोनो सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थामे कार्य करब आ साहित्य लेखन करब परस्पर पूरक कार्य अछि। एक महार पर एक तरहक कार्य होइत छैक, दोसर महार पर दोसर तरहक। दुनू महारक काज कैएक' पोखरिकेँ उपयोगी आ आकर्षक बनाओल जा सकैत अछि। ई व्यक्तिक इच्छा आ सामर्थ्य पर निर्भर छैक जे ओ कतेक क्षेत्रमे कतेक गंभीरतासँ काज करैत सार्थक भ' सकत।

मैथिलीक सेवा एतेक पैघ स्तर पर करबाक संकल्प कोना लेलियैक? किएक त' विद्यार्थी अहाँ छलियैक राजनीति विज्ञानक। तकर तात्पर्य जे अहाँक लेल छात्र जीवनमे प्राथमिकता मैथिलीक नहि रहल होयत।

औपचारिक रूपमे हम ठीके राजनीति विज्ञानक छात्र रही। मुदा से प्रायः एकटा दुर्घटना छल। बी.ए. मे आनर्स लेबाक काल हमर किछु शुभचिन्तक लोकनि बाबूकेँ सुझाव देलखिन जे राजनीति विज्ञान पढ़लासँ

कमीशनमे सुविधा हेतनि, नीक नोकरी भेटतनि। तेँ अगत्या हमरा राजनीति विज्ञान पढ़' पड़ल। ओना, हम छात्र रही साहित्यक-हिन्दी हमर एकटा विषय छल। साहित्यक प्रति अभिरुचि हमरा पैतृक गुणक रूपमे प्राप्त छल। सैह स्वभाव आ प्रवृत्ति आगाँ चलिक' प्रभावी भेल आ हम साहित्यक कार्यमे लगलहुँ।

ओना त' राजनीति कोन चीजमे नहि छैक। ताहूमे भाषा ओ साहित्यक क्षेत्रमे त' कने बेसिए छैक। किएक त' साहित्यक क्षेत्रमे सफलता भेटि गेलाक बाद ख्याति एवं पाइ समान रूपसँ आब' लगैत छैक आ साहित्यक इतिहासमे नाम सुरक्षित भ' जाइत छैक से अलग। त' ई कहियौ जे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे राजनीति कतेक दूर तक प्रभावी छैक?

एहिठाम फेर हम अहाँक प्रश्नक प्रसंग किछु कह' चाहब। 'राजनीति' शब्दक प्रयोग अहाँ प्रायः ओकर चालू अर्थमे केलियैक अछि। एहि अर्थमे राजनीति शब्दक अर्थ होइत छैक, प्रपंच आ स्वार्थ-सिद्धि। किन्तु वस्तुतः राजनीति ओ नहि छियैक। कोनो समस्याक निदान जखन सत्ताक माध्यमसँ ताकल जाय त' से राजनीति कहबैत छैक आ संवेदनाक माध्यमसँ ताकल जाय त' ओ होइत छैक साहित्य। तात्पर्य ई जे राजनीति हो वा साहित्य-ओ दुनू एकेठाम पहुँचबैत छैक। दुनूक एक्के उद्देश्य छैक-मनुष्यक खुशहाली, सामाजिक विकास। क्षुद्र व्यवहार, क्षुद्र आचार-विचार साहित्यमे हो अथवा सत्तामे, ओ घृणित अछि, त्याज्य अछि। मैथिली साहित्यमे स्वार्थजन्य मतभेद बेसी प्रभावी छैक, सिद्धान्तमूलक दृष्टिकोण नहि।

वैचारिक मतभेद बेजाय बात नहि थिक। तर्क आ विवेकसँ कार्य करब अपराध नहि थिक। किन्तु, जखन हम तर्क आ विवेक पर, सिद्धान्त आ विचार पर स्वार्थ आ गोत्रवादकेँ प्रभावी बना दैत छियैक त' से हानिकारक होइत छैक। मैथिली भाषा ब्राह्मणवादी अथवा अभिजनवादी स्वार्थबुद्धिसँ अभिशप्त रहल अछि। मैथिली साहित्यकेँ सेहो एकर दंश भोग' पड़लैक अछि। आइयो भोगि रहल अछि।

साधारणतः रचनात्मक लेखन कनिहारकेँ मान्यता बहुत आसानीसँ भेटि जाइत छैक। खासक' मैथिली लेल त' ई बात कने बेसिए स्पष्ट

होइत अछि– रचनाक स्तर चाहे जे हो। ताही दुआरे सम्भवत: एतय जे किओ मैथिली साहित्यसँ जुड़ल नामी लोक सभ छथि ओ रचनात्मक लेखन अर्थात् कथा, कविता इत्यादिसँ शुरु भ' जाइत छथि। ई रस्ता पकड़लासँ हुनका सभकेँ साहित्यकार कहाब'मे त' सुविधा होइते छनि, महत्त्वपूर्ण पुरस्कार (ओकर संग संग पुरस्कारक राशि!) पएबामे सेहो सुविधा रहैत छनि। एहि सदर्भमे हमर अपन अनुभव उल्लेखनीय अछि। हम जे शुरु-शुरु मे अनुवादक द्वारा मैथिली साहित्यसँ जुड़लहुँ त' मैथिलीक कैक टा अग्रणी विद्वान हमरा बुझौलनि जे जँ हम अनुवाद आ आलोचना करैत रहब त' मैथिली साहित्यमे उचित मान्यता भेटनाइ कठिन। त' भाइ, ई कहियौक जे अहाँ ई कठिन रस्ता किएक आ कोना चुनलहुँ आ' शुरु भ' गेलहुँ? कखनो ई नहि बुझाइए जे तीन दशकसँ बेसिए समय धरि आलोचनात्मक लेखन केलाक बादो ओ सभ नहि भेटि सकल अछि जे किछुए दिनमे रचनात्मक लेखनसँ प्राप्त भ' जाइत?

अहाँक एहि प्रश्नमे समाजक साहित्यिक अवधारणा बाजि रहल अछि। साहित्यकेँ आजुक मैथिल समाज कोन रूपमे ल' रहल छैक तकर एकटा प्रतीक थिक उक्त विचार अथवा अहाँक संग कयल गेल प्रश्नक घटना।

हम पहिने कहि चुकल छी जे साहित्य दिस हमर झुकाव स्वभाववश, पारिवारिक पृष्ठभूमिवश भेल। साहित्य पढ़ैत काल हमरा लागल जे साहित्यक भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण छैक। हम एहि कार्यमे लागि गेलहुँ। प्रारंभ हमहूँ केलहुँ कथा आ कविता लेखनसँ। विद्यार्थी जीवनक बाद हमर पहिल रचना जे छपल छल से एकटा कथा अछि 'धन कुसेसरा तैं ईहो' (वैदेही, 1965)। एहि कथाक बाद हम कथा आओर कविता दिस झुकलहुँ। किन्तु आलोचना हमरा बेसी प्रिय भेल। लगैत अछि, एकरो कारण प्राय: हमर पिता छलाह। ओ संस्कृत साहित्यक आलोचक रहथि। ओहि क्षेत्रमे बहुत किछु कार्य कयने छथि। हुनका संग रहैत संस्कृत साहित्यक विभिन्न विषय पर आलोचना-प्रत्यालोचना सुनबाक अवसर हमरा भेटय। ओहिसँ हमर आलोचना बुद्धि विकसित आ प्रभावित भेल। भरिसक यैह कारण छल जे हम कविता, कथाकेँ गौण स्थान देलियैक आ' आलोचना प्राथमिकतामे आगाँ बढ़ि गेल।

ओना, सूचनाक लेल हम कह' चाहब जे कविता, कथा हम एखनो लिखैत छी। समय अयला पर ओकर प्रकाशन हेतैक। जहाँधरि लेखनसँ अर्थ आ यश प्राप्तिक प्रश्न अछि से आनुषंगिक महत्वक वस्तु थिक आ हम एकरा ताही स्थान पर ओही रूपमे राख' चाहैत छी। ई बात नहि छैक जे पैसा अथवा यश भेटला पर हमरा खराब लगैत अछि। किन्तु साहित्य लेखनक ई उद्देश्य नहि होयबाक चाही। यश आ अर्थकेँ साहित्यक उद्देश्य संस्कृत साहित्यक काव्यशास्त्रीलोकनि मानने छथि, किन्तु ओ समय राज-दरबारक छलैक। आइयो सरकार आ टाटा-बिड़लाक पुरस्कार-योजना राज-दरबारक भूमिकामे ठाढ़ अछि। किछु गोटय ओकरे साहित्य लेखनक अभीष्ट बुझैत छथि। किन्तु, हमर स्पष्ट धारणा अछि जे एहन रचनाकार अथवा हुनक कृति कालजयी नहि होइत अछि। पानिक बुलबुला आ' पानिक लहरि बनबामे फर्क छैक। पानिक बुलबुला ओ बनि सकैत छथि, समयक गतिमे लहरि अनबाक सामर्थ्य हुनक रचनामे नहि होइत छनि। साहित्यक सार्थकता समय-सालक विकास-गतिकेँ त्वरा प्रदान करब थिक।

एहिठाम अहाँ एकटा आओर नीक प्रसंगक उल्लेख कयलहुँ अछि। आजुक समयमे केवल मिथिला-वासिये नहि, सम्पूर्ण भारतवासी अथवा कही जे अखिल विश्वक लोक अनुवादमे जीबि रहल अछि। भाषा, संस्कृति, आचार-विचार, सभक अनुवाद भ' रहल अछि। ई उचित आ आवश्यक अछि। जखन हम विश्व-बंधुत्वक गप्प करैत छी तखन अनुवादक आश्रय लेब हमरा लेल अनिवार्य भ' जाइत अछि। सार्वभौमिकताक संग क्षेत्रीयताक संवाद अनुवाद द्वारा भ' सकैत अछि। मैथिलक अथवा मनुष्यक एहि आवश्यकताकेँ जे नहि बुझैत छथि सैह अनुवाद कार्यकेँ गौण कहैत छथि।

निश्चित रूपसँ अनुवाद कार्य आजुक स्थितिक स्वभाव आ आवश्यकता अछि। अनुवाद द्वारा मैथिलक, ओकर भाषा आ साहित्यक जतेक काज कयल जा सकैत अछि ततेक प्राय: मौलिक लेखनो द्वारा नहि। तेँ अनुवाद अहाँ अवश्य करू से हमर इच्छा आ कामना। यश आ अर्थ स्वत: अनस्यूत रूपमे प्राप्त होब'वला वस्तु अछि, तेँ ओहो भेटत से उम्मीद कयल जा सकैत अछि।

ओना आब त' आलोचनाकेँ सेहो रचनात्मक लेखनक मान्यता प्राप्त भ' गेल छैक, मुदा की कविता, कथा, उपन्यास लेखनक इच्छा नहि होइत अछि?

जेना हम कहलहुँ जे हमरा दृष्टिकोणमे समाज आ' लोक अछि। हम देखि रहल छियैक जे एहनो रचनाकार छथि जनिक कविता, कथा आ, उपन्यास द्वारा समाजक उपकारो नहि, अपकारो भ' रहल अछि। लोक भुतिया रहल अछि। कोनो वस्तु स्वत: महत्वपूर्ण नहि होइत छैक। महत्ता ओकर उपयोगिता आ सार्थकतामे निहित छैक। सोनाक गहना प्रिय वस्तु थिक, किन्तु सोनाक भाला बना क' मारल जाय त' मृत्यु सेहो भ' सकैत छैक। कविता, कथा ओ उपन्यास यदि विपथगामी बनाबय, सामाजिक विकासमे बाधक बनय त' ओहिसँ परहेज होयबाक चाही। यैह काज आ दायित्व आलोचकक छैक। आलोचना साहित्यक मर्मकेँ उद्घाटित करैत अछि, ओकर दिशाकेँ देखार करैत अछि। मिथिला जनपदकेँ स्मार्त ब्राह्मणक प्रभुता सम्पन्न देश कहल गेल अछि। ई विशेषण कहियो लाभकारी नहि छल, आजुक समयमे त' एकदम्मे नहि अछि। मुट्ठी भरि लोकक आचार-विचार आ सौख-सेहन्ता कोनो जनपदक खुशी आ सम्पन्नताक मापदण्ड नहि भ' सकैत अछि।

एहि मापदण्डकेँ बदल' पड़त। कसौटी ताक' पड़त। महाजनक तराजू आ बटखरासँ संस्कृति आ साहित्यकेँ जाधरि तौलैत रहब ताधरि यैह हाल रहत। आलोचनाक अभियानमे सम्मिलित भ' क' हमरा खुशी होइत अछि। हम एकरा नीक आ सही, आवश्यक आ समयोचित मानैत छी।

रचनात्मक लेखनक गप्प शुरु भेल अछि त' भाइ, की अहाँ आजुक कथा लेखनसँ एक आलोचकक रूपमे अपनाकेँ संतुष्ट पबैत छी? मैथिली कथा पर गृह-विरह (नॉस्टलजिया) सँ ग्रस्त रहबाक आरोप आइयो लगाओल जाइत अछि। की अहाँ सहमत छी?

आजुक मैथिली कथा-लेखन उपलब्धिमे संतोषजनक नहि अछि। किन्तु ओकर दिशा आश्वस्तिजनक अवश्य छैक। ई बात सही अछि जे मैथिली कथाकार एखन धरि मिथिलाक साग आ तिलकोड़मे, अयाची आ मंडनमे लटपटायल छथि। कहल जाइत अछि जे ई सभ मिथिलाक संस्कृतिक

प्रतीक अछि। विचारणीय अछि जे मिथिलाक संस्कृति ककरा मानल जाय। अभिजनवादी जीवन-शैली आ ओकर कर्मकाण्ड हमरा संकीर्ण करैत रहल अछि। हम क्रमश: बन्द गलीक ओहि छोर पर पहुँचि गेलहुँ अछि जाहिठाम नॉस्टेलजिया दुखद रोग जकाँ टीसैत अछि। अपन माटि-पानि आ सभ्यता-संस्कृति पर गौरव-बोध होयब अनुचित नहि, किन्तु ओ अपन हो तखन। कखनो क' एहन होइत छैक जे दोसरक देल वस्तुकेँ लोक अपन बूझय लगैत अछि। एहि भ्रांतिकेँ दूर करब आवश्यक। तेँ माटि-पानिक गप्प करब जतबे आवश्यक ततबे ईहो बूझब आवश्यक जे ई माटि-पानि ककर थिक। एहि माटि पर हम कत' छी। गाम ककरो आ बाँट करय बक्खो। दोसर बात, ई माटि-पानि, ई जनपद, विश्वक भू-भागसँ जुड़ल अछि। अपनाकेँ द्वीप बनाक' राखब हमरा सभक लेल घातक भेल अछि।

आजुक मैथिली कथामे विश्व-दृष्टि आबि रहल अछि। निश्चित रूप सँ ई नीक बात थिक आ एहिसँ मिथिलावासीक स्थिति आ समस्याकेँ व्यापक परिप्रेक्ष्यमे देखबाक अवसर त' भेटिते अछि, ओहिसँ लड़बाक आवश्यकताक अनुभव सेहो होइत अछि। मैथिलीक नवतूरक कथाकार मिथिलासँ बाहरक साहित्य आ साहित्येतर रचनासँ परिचित भेलाह अछि। हुनक दृष्टि व्यापक भेलनि अछि। आजुक कथामे एकर प्रभाव देखल जा सकैत अछि।

की अहाँकेँ लगैत अछि जे मैथिलीमे आइयो आयास-प्रयाससँ कथा लिखल जाइत अछि? कथा लेखनक क्षेत्रमे नैसर्गिक प्रतिभाशाली लेखकक अभाव अछि? फलस्वरूप मैथिली कथा ने पाठकसँ जुड़ि पाबि रहल अछि आ ने आन भाषा साहित्यक समानान्तर अपन कोनो पहिचान बना पाबि रहल अछि।

एहिठाम फेर साहित्यक प्रति समाजक अवधारणाक प्रश्न उठैत अछि। मैथिलीमे कोनो भाषा जकाँ दू प्रकारक साहित्यकार छथि। यदि कथाक स्तर पर देखी त' ओतहु ई दुनू कोटि भेटि जायत। प्रथम कोटिक कथाकार ओ छथि जे स्वभाव आ प्रवृत्तिसँ साहित्य रचना करैत छथि। हुनक रचना एकटा वैचारिक तथा काल्पनिक सोचकेँ कथाक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि। दोसर प्रकारक कथाकार ओ छथि जिनकामे साहित्यबोध आ साहित्यरस

नहि छनि। बातकेँ स्पष्ट करैत कहि सकैत छी जे मैथिल छी, मैथिली भाषा बजैत छी त' मैथिलीक साहित्यकारो भइये सकैत छी ई धारणा गलत अछि। मैथिलीभाषी होयब आ' मैथिलीक साहित्यकार होयब दू वस्तु थिकैक से ओ नहि बुझैत छथि। एहने लोक कूथि क' साहित्य लेखन करैत छथि आ हुनक लेखन 'आयल पानि, बाटे बिलायल पानि' भ' क' रहि जाइत छनि।

हमर कहबाक ई अर्थ नहि अछि जे साहित्य-लेखनमे अभ्यास आ प्रशिक्षणक कोनो महत्त्व नहि छैक। किन्तु दुखक बात ई अछि जे आजुक अधिकांश रचनाकार जनमिते अपनाकेँ पाकल-परोड़ बूझ' लगैत छथि आ अभ्यास तथा प्रशिक्षणकेँ निरर्थक मानैत छथि। तखन यश आ टाकाक अधीर महत्त्वाकांक्षा लेखनकेँ घटिया बनबैत अछि, ओकर अकालमृत्युक कारण होइत अछि।

एकटा दोसर स्थिति सेहो अछि। संवेदनशील होयबाक तथा ऊर्जामय बनल रहबाक अवधि होइत छैक। जहिना बाल्यावस्थामे संवेदनशीलता अथवा ऊर्जा कम होइत छैक तहिना बुढ़ारीमे क्षीण सेहो भ' सकैत छैक। मैथिलीक साहित्यकार जल्दी सेराइत छथि। हुनक उष्मा जल्दी समाप्त होइत छनि। साफ अछि जे मिझायल आगिसँ चूल्हि नहि पजारल जा सकैत अछि। एहने रचनाकार कूथि क' कथा लिखैत छथि। विधा-परिवर्त्तन द्वारा अपन जीवन्त होयबाक विज्ञापन भने करथु, किन्तु एक विधाक सेरायल पानि दोसर विधामे गरम लागत से संभव नहि छैक।

ऊर्जावान बनल रहबाक लेल जीवनसँ, समय-सालसँ संपृक्त रहब आवश्यक होइत छैक। व्यक्तिवादी जीवन शैली पलायनवादी मनोवृत्तिक सूचक थिक आ पलायन लेखनक घोर शत्रु। लेखन, संबद्धता आ सरोकारक जीवन्त देन थिक। ई एकटा एहन तथ्य अछि जकरा बुझिए क' लेखनक सार्थकता पर विचार भ' सकैत अछि।

मैथिलीमे एहनो साहित्यकार भेल छथि जे दीर्घजीवी भेलाह। संगहि जीवनक अंतिम कालधरि लिखैत रहलाह। जेना हरिमोहन झा आ यात्री। की हिनका सभक अंतिम कालक लेखन सेरायल छलनि? की ई सभ कूथि क' लिखैत छलाह?

हम पहिनहि कहलहुँ अछि जे लेखनक अर्थ होइत छैक सामाजक सरोकार। एहिमे सन्देह नहि जे हरिमोहन झा आ यात्री मैथिलीक महान रचनाकार छथि। एकर सभसँ पैघ कारण अछि हुनकालोकनिक सामाजिक संपृक्ति। किन्तु दुनू रचनाकारक संपूर्ण लेखनकेँ ध्यानमे राखल जाय त' स्थिति स्पष्ट भ' जायत। संयोगक बात अछि जे दुनू रचनाकार 1929 मे लेखन शुरु कयलनि। समाजक स्थिति आ समस्या के त' ओ सभ लेखनक विषय बनयबे कयलनि, ओहि मादे अपन विचार सेहो रखलनि। तात्पर्य ई जे हुनकालोकनिक लेखन यथार्थ आ इच्छाक समन्वय छल।

हरिमोहन झाक सर्वोत्कृष्ट लेखन, हमरा जनैत, अछि- 'कन्यादान' आ 'खट्टरककाक तरंग'। एहि दुनू कृतिमे हुनक सामाजिक सरोकार गहन रूपमे घुलल-मिलल अछि। किन्तु जीवनक अंतिम समयमे हरिमोहन झाक सामाजिक सरोकार कमि गेलनि। लगभग 1965 क बाद हुनक लेखन मे ओ उष्मा नहि रहलनि जे पहिने छलनि।

प्राय: यैह कारण थिक जे हुनक आत्मकथा पढ़ला पर एक प्रकारक झटका जकाँ लगैत अछि। हरिमोहन झाक लेखनीक जे सामर्थ्य, जे आकर्षण 'कन्यादान' आ 'खट्टरककाक तरंग' मे भेटैत अछि से हुनक 'जीवन यात्रा' मे नहि। ओना एकरो कारण एक प्रकारक सामाजिक दृष्टिकोणे छल। आत्मकथा लिखैत काल ओ सोच' लगथिन जे ई बात लिखबैक त' हुनका केहेन लगतनि। एहि मनोभावक परिणाम भेल जे ओ लिखलाहाकेँ कपचैत गेलाह, बदलैत गेलाह आ तखन जे वस्तु सोझाँ आयल से हरिमोहन झाक नहि, हुनक बुढ़ारीक रचना बनि गेल।

ठीक एकर विपरीत यात्री कहियो बूढ़ नहि भेलाह। सामाजिक सरोकार, वैचारिक ऊर्जा तथा लेखकीय तटस्थता हुनकामे अन्तधरि बनल रहलनि। ओ जीवनक अंतिमो समयमे सामाजिके नहि, पारिवारिक तथा आत्मगत विकृतिकेँ सेहो व्यंग्यक निशाना बनबैत रहलाह। लोक की कहत तकर परवाहि नहि कयलनि। बीमार आदमीकेँ दवाइक स्वाद नहि पुछलनि। मैथिली लेखक-समुदायमे यात्रीक महत्ता हुनक एही असाधारणतामे व्यक्त भेल अछि। हमर सभक समस्त रचनाकारक आदर्श 'यात्री' होइत छथि तँ से अपन एही जीवन्तता तथा सामाजिक दृष्टिकोणक कारणे।

हम पूछ' चाहब जे मैथिलीके आयास-प्रयाससँ रचनात्मक लेखन कोनिहार सभसँ त्राण कोना भेटि सकैत छैक? की अहाँके नहि बुझाइत अछि जे ओ मैथिलीक सभसँ पैघ अहित क' रहल छथि?

बनौआ आ सौखिया साहित्यकारसँ मुक्ति कोना भेटत ताहि लेल चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि छैक। समय सभसँ पैघ कसौटी होइत छैक। वैह हुनक उपचार क' देतनि। किन्तु एकटा आओर तथ्य विचारणीय अछि। नीक आ अधलाह सापेक्ष शब्द थिक। रचनाकार सेहो पाठक होइत अछि। अधलाहो लेखक अक्षरक महत्त्व बुझैत अछि। तेँ ओकर तिरस्कार नहि होयबाक चाही। एक समय छल जखन अक्षरक तुलना महीससँ कयल गेल छल– 'काला अक्षर भैंस बराबर'। महीस बला मोट संवेदनाक जीव अक्षर पुरुषकेँ मानल गेलैक। आइ स्थिति ई अछि जे अक्षरसँ लोकके विरक्ति भ' रहल छैक। टी.वी. आ एहि प्रकारक उपकरण अक्षर-संसारकेँ रसातलमे पहुँचयबा पर बिर्त अछि।

एहि संघर्षमे लेखन कार्यमे विश्वास करयबला प्रत्येक व्यक्तिक योगदान महत्त्वपूर्ण छैक। ई बात अवश्य जे अक्षर जतेक मनगर आ' सार्थक हेतैक ततेक ओ प्रिय होयत। स्थायी होयत। तेँ आयास-प्रयास करबाक चाही, करयवलाक संभव हो त' सहयोगे करबाक चाही।

मैथिलीक अग्रणी साहित्यकार सभमे जे आलोचनाकेँ अपन कार्यक्षेत्र बनौलनि अछि, हुनका लोकनिक बीच की अहाँ अपनाकेँ असगर अनुभव करैत छी? आ भाइ, ई कहियौ जे मैथिली आलोचना आइ कत' ठाढ़ अछि। पहिलुका आ आजुक आलोचक सभक 'टेम्परामेंट', विचारमे की अन्तर छैक?

मैथिली आलोचनाक एकटा इतिहास छैक। ओना मैथिलीमे अनुसंधान आ व्याख्याक काज करयवला पहिल रचनाकार छथि चन्दा झा। किन्तु ओ आजुक अर्थमे आलोचक नहि छलाह। एहि दृष्टिकोणसँ मैथिलीक पहिल आलोचक छथि रमानाथ झा। किन्तु, रमानाथ झाक आलोचनाक सीमा छनि। ओ अंग्रेजीक विद्यार्थी भइयो क' संस्कृत मानसिकताक लोक छलाह। साहित्यक प्रति हुनक अवधारणा संस्कृत काव्यशास्त्रक पृष्ठभूमिमे पल्लवित भेलनि। मैथिली साहित्यक ओ जे व्याख्या आ विश्लेषण कयलनि तकर मुख्य कसौटी छल संस्कृत काव्यशास्त्र। यद्यपि हुनक समीक्षा पढ़ला पर

लगैत अछि जे संस्कृत काव्यशास्त्रक कसौटीकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक व्याख्याक लेल ओ पर्याप्त नहि मानैत छलाह, तथापि ओहि सीमा सँ बाहर निकलबाक प्रयास ओ नहिये जकाँ कयलनि अछि।

हुनका बाद अथवा हुनका संग दू व्यक्ति आओर एहन छथि जे मैथिली साहित्यकेँ बुझबाक आँखि देलनि। ओ सभ छथि काञ्चीनाथ झा 'किरण' तथा रामकृष्ण झा 'किसुन'। ओ आलोचक नहि मानल जाइत छथि, किन्तु मैथिली आलोचनाक जे आधार हिनका सभक द्वारा प्रस्तुत भेल अछि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ उपयोगी अछि। एकरा बाद अबैत छथि कुलानन्द मिश्र। मैथिली साहित्य जखन यात्रीक नेतृत्वमे वर्णवादी सँ वर्गवादी अवधारणा दिस अग्रसर भेल तखन ओकरा बुझबाक लेल तदनुरूप आलोचनाक आवश्यकता भेलैक। सोझ शब्दमे कही जे मैथिली साहित्यकेँ अर्थात् सर्जनात्मक साहित्यकेँ मार्क्सवादी आधार देलनि यात्री आ मैथिली आलोचनाकेँ मार्क्सवादी आधार देनिहार छथि कुलानन्द मिश्र।

एहि दृष्टिकोणसँ साहित्यकेँ देखबाक आ बुझबाक प्रयास किछु आओर साहित्यकार क' रहल छथि। जेना, हरेकृष्ण झा, सुकान्त सोम आदि। किन्तु आलोचक रूपमे हिनका लोकनिक छवि एखन धरि प्रशस्त नहि भेल अछि।

जहाँ धरि हमर स्थिति अछि, हम साहित्यक अध्ययन मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ समाजशास्त्रीय कसौटी पर करैत छी। हमर इच्छा ओ प्रयास रहैत अछि जे साहित्यमे समाज ताकल जाय तथा समाजमे साहित्यक सार्थकता निरूपित कयल जाय। एहि प्रयासमे हम कतेक दूर धरि सफल भेलहुँ अछि से पाठक कहताह।

मैथिली आलोचक सभक संदर्भमे हमर ई धारणा अछि जे ओ सभ लेखकसँ अपन व्यक्तिगत सम्बन्धके बेसी महत्त्व दैत छथिन। एनामे आलोचनाक की गति होइत रहल छैक ताहिसँ अहाँ नीक जकाँ परिचित छियैक... अहाँके नहि लगैत अछि जे अधिकांश आलोचक आलोचना आ समीक्षा करबाक स्थान पर 'निर्णय' वा 'ओपीनियन' दैत छथिन। अपन टिप्पणीक समर्थनमे किछु कहनाइ आवश्यक नहि बुझैत छथिन। एकर अतिरिक्त कोनो कविता, कथा अथवा उपन्यासक आलोचनामे 'नीक', 'बड़ नीक', 'खराब', इत्यादिसँ आगाँ बढ़ब आवश्यक नहि बुझैत छथिन। एहि पर अहाँक विचार।

एहिठाम मैथिली आलोचनाक इतिहास आ स्थिति पर फेर विचार करबाक आवश्यकता अछि। मैथिलीमे दू प्रकारक आलोचक भेल छथि। एक कोटिक आलोचकमे छथि रमानाथ झा आ कुलानन्द मिश्र। दोसर कोटिक आलोचकमे ओ सभ छथि जिनका हम 'पदेन आलोचक' कहैत छी। मैथिलीक अध्यापक छी, छात्रकेँ पढ़यबाक लेल साहित्यक व्याख्या करबाक अछि-इएह पाठ्य सामग्री आलोचना भ' जाइत अछि। एहन अध्यापक लेल आलोचना हुनक विवशता होइत छनि। तेँ ओ आरोपित आलोचक होइत छथि। कुशल शिक्षक होयब एक बात थिक आ कुशल समीक्षक होयब दोसर। सफल शिक्षक नीक आलोचको हो से भ' सकैत अछि, मुदा से होयबे करय ई आवश्यक नहि।

मैथिलीमे एहन 'पदेन आलोचक' जखन साहित्य-संसारमे प्रवेश करैत छथि तखन 'नीक', 'बड नीक' सनक टूटप्पीमे कार्य चलायब हुनक विवशता भ' जाइत छनि। तात्पर्य ई जे आलोचक लेल अध्ययन अनिवार्य छैक। क्लासक पाठ्य सामग्रीसँ अतिरिक्त विषयक अध्ययन करबाक जकरा इच्छा आ सामर्थ्य नहि रहतैक से नीक आलोचक नहि भ' सकैत अछि। तेँ हँ', 'हूँ' वला, 'नीक' 'बेजाय' वला मास्टरी-पाठ आलोचना बनि जाइत अछि।

कहबाक प्रयोजन नहि जे आलोचना संसारमे ई सभ जहिना प्रवेश कयलनि तहिना बाहरो भ' जेताह। समय हिनक उपचार क' देतनि।

एहिठाम एकटा बात दिस ध्यान देब आवश्यक अछि। रमानाथ झाक समयमे मैथिली साहित्य शिक्षण-व्यवस्थामे प्रवेश क' रहल छल। तेँ रमानाथ झा शैक्षणिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत बहुत रास व्याख्या-विश्लेषण कयने छथि, पोथीक भूमिका लिखने छथि। शैक्षणिक आवश्यकताक सीमामे रहियो क' साहित्यक छात्रोपयोगी पाठ्य-सामग्रीक ओ जे व्याख्या कयलनि से छात्रसँ इतर पाठकक लेल सेहो महत्त्वपूर्ण भेल।

हुनका बाद एहि प्रकारक व्यापक प्रयास अथवा प्रभावी प्रयास अध्यापकलोकनि नहि कयलनि अछि। अपवादस्वरूप प्रो. आनन्द मिश्र, रामदेव झा तथा भीमनाथ झा सदृश किछु अध्यापकक नाम लेल जा सकैत अछि। वस्तुतः ई सभ अपवादे छथि।

अहाँ अनेक कथा-संग्रहक सम्पादन कने छी। अहाँक पोथी 'अनवरत' आ सद्यः प्रकाशित 'एकल पाठ' मे मैथिली कथा पर अनेक निबन्ध अछि। कथा लेखनक अद्यतन प्रवृत्ति सभसँ अहाँ अवगत छी। मैथिलीक आठम आ नवम दशकक कथामे जे आक्रामकता भेटैत अछि से आब सदीक अन्तिम दशकमे सेरायल सन नहि लगैत अछि? की एहि सेरायल आक्रामकताक संग नव सदीमे मैथिली कथाक प्रवेश मैथिली कथा-यात्राकेँ गन्तव्य दिस ल' जा सकत? एक मार्क्सवादी आलोचकक रूपमे की लगैत अछि अहाँके?

मैथिली कथा साहित्यक अपन इतिहास छैक। प्रारंभमे भाववादी आ' प्राचीन सौन्दर्यवादी सरणि पर कथा-रचना भेल। किरणजी आ हरिमोहन झा ओकरा सामाजिक आधार देलनि। हरिमोहन झाक बाद ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द आदि कथाकार एहि क्षेत्रमे अयलाह। छठम दशकक उत्तरार्द्धसँ सातम दशकक अन्तधरि मैथिलीक साहित्यिक प्रतिभा कथाक क्षेत्रमे लहलहायल। किन्तु एहि कालक कथाकार स्थितिक उपस्थापन धरि सीमित रहि गेलाह।

तकरा बाद मैथिली कथाक विषय-वस्तुमे व्यापकता आयल। अभिजन सँ जन धरि ओ पहुँचल। भाषा सेहो भावुकताक झुल्ल उतारलक। ठोस जमीन परहक गप्प ठोस भाषामे होमय लागल। किन्तु, कथाकारलोकनि एकटा कृत्रिम शालीनताक भीतर रहि क' स्थितिकेँ देखबाक प्रयास कयलनि। स्वतंत्र भारतमे जनमल कथाकार जखन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न आदि राक्षसी शक्तिक सम्मुखीन भेलाह तखन हुनक सोच आ भाषामे परिवर्तन आयब स्वाभाविक भ' गेल। तेँ हुनक कथाक भाषा आक्रोश-मूलक अछि। हुनक कथाक विषय 'सिविल' नहि, फौजदारीबला अछि। कथा विकासक ई संक्रमणकाल नवम दशक धरि अबैत-अबैत प्रायः समाप्त भ' गेल।

कथाकारलोकनि ई बात बुझलनि जे स्थितिक दंश मिथिलाक लोक भोगि रहल अछि अवश्य, किन्तु ओहि स्थितिक कारण आ निदान मिथिला मे नहि छैक। क्षेत्रीय समस्या, व्यापक समस्याक स्थानीय अभिव्यक्ति थिक। स्थानीय भाषामे कथा बनिक' ओ आबय से उचित आ आवश्यक। किन्तु

ओकर स्थायी निदानक हेतु व्यापक कारण आ समाधानक दूरी धरि जायबो ततबे अनिवार्य अछि। मैथिली कथाकारक ई युगबोध हुनक कथाक स्वरमे परिवर्तन अनलकनि।

ठीक एही समयमे अर्थात् नवम् दशक बितैत-बितैत विश्वमे एकटा आर दुर्घटना भेल। ओ छल सोवियत संघक विघटन। सोवियत-क्रान्ति कहियो विश्व भरिक साहित्यकारकेँ प्रभावित कयने छल। सोवियत संघक विघटन सेहो साहित्यकारक चिन्तन-दिशाकेँ बदलबाक जोरदार अभियान चलओलक। अधिकांश कथाकार एहि विघटनक अमरीकी व्याख्यासँ सहमत होइत अपन सोच बदलि लेलनि। हुनक लेखन छद्मकेँ छोड़ि असली रूपमे देखार भेल। ई परिवर्तन पूंजीवादी प्रचारक परिणाम छल। मैथिलीक मुख्य साहित्यधारा एहिसँ तरंगित अवश्य भेल, मुदा दिशाहीन नहि भेल। अधिकांश साहित्यकार अपन आचार-विचार पर, अध्ययन आ लेखन पर अडिग रहलाह। खुशीक बात ई भेल जे नव पीढ़ीक साहित्यकार अथवा कथाकार पूंजीवादी चक्रचालिक एहि अभियानकेँ गंभीरतासँ लेलनि आ'ओकर उत्तरमे तेहने कथा-रचना ल' क' सोझाँ अयलाह।

सामन्तवाद आ पूंजीवादमे अन्तर छैक। सामान्तवादसँ लड़बा लेल जाहि हथियारक उपयोग होइत छलैक तकर उपयोग आब नहि भ' सकैत छैक। जखन लड़ाइ उत्तर-आधुनिकतावाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आदि शब्दावलीक हथियार ल' क' भ' रहल अछि तखन ओकर उत्तरमे ओहने अस्त्र ल' क' जायब आवश्यक छैक। यैह कारण छैक जे मैथिलीक कथाकार आब हल्लावला (लाउड) कथा नहि लिखैत छथि। तरबिठुआक जवाब केहुनिया मारिसँ दैत छथि।

स्पष्ट अछि जे आजुक कथामे संवेदनाक स्तर पर गहिरै आयल अछि। संगहि, अपन प्रतिहिंसाक मुद्राकेँ सेहो ओ अक्षुण्ण रखने अछि। तेँ वर्तमान दशकक कथाकेँ 'सेरायल' कहब उचित नहि। ई ओतबे अथवा ओहूसँ बेसी जुझारू अछि जतेक पहिने छल। डिब्बामे कंकड़-पाथर कम रहैत छैक त' आबाज बेसी होइत छैक। मुदा कंकड़-पाथरसँ डिब्बा भरि देल जाय आ तखन प्रहार कयल जाय त' आवाजो नहि हेतैक आ दुश्मनक कपारो फूटि जयतैक। आजुक कथाक यैह प्रवृत्ति अछि।

आधुनिक कथाक मुख्यधारा यैह अछि। तखन नदीमे छारनि रहिते छैक। नाला सेहो रहैत छैक। ओकरा धार नहि कहबैक। ओहि पर विचार नहि करब।

अहाँ कहैत छी जे आजुक मैथिली कथाक संवेदना-संसार व्यापके नहि, गहीँर सेहो भेल अछि। अहाँ इहो कहैत छी जे सामाजिक चेतनाक कथा मैथिलीमे बड़ कम लिखल गेल अछि। अपन दुनू मन्तव्य पर कथाक विकास दृष्टिसँ आर किछु कह' चाहब? सामाजिक चेतनाक कथा कम लिखल जेबाक कारण की लगैत अछि अहाँके?

आजुक कथाक मुख्य धारा पर जखन हम ध्यान दैत छी तखन ई एकदम स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ओ पूँजीवाद आ पूँजीवादी हथकण्डाक विरोधमे ठाढ़ अछि। अपन समाङक संगोर करबाक आवश्यकताक अनुभव सेहो ओ करैत अछि। किन्तु खटक' वला बात तखन होइत अछि जखन एहन सन लगैत अछि जे कथाकारकेँ सामाजिक विकासक, सामाजिक संरचनाक ज्ञान संपूर्णतामे नहि छनि। ई बात नहि छैक जे आजुक कथाकार राजकमल चौधरी जकाँ किरणमाला ताकि रहल छथि। ईहो बात नहि छैक जे आजुक कथाकारकेँ अपन रचनाक काँचे रहि जयबाक आशंका छनि। हुनका अपन रचनाक शक्ति पर विश्वास छनि आ एही विश्वासक संग ओ प्रत्याक्रमण क' रहलाह अछि। आवश्यकता केवल एहि बातक अछि जे पुरान घर खसलाक बाद नव घरक रूपरेखाक संबंधमे हुनका फरिछायल ज्ञान होइन।

एहिबातकेँ कनेक दोसर तरहें सेहो हम कह' चाहब। साहित्य अथवा कथामे दू टा वस्तु होइत छैक 'यथार्थ' आ 'इच्छा'। आजुक कथाकार यथार्थक उपस्थापन बहुत सफल रूपमे क' रहलाह अछि। साहित्यक शर्त्त पर अर्थात् संवेदनाक धरातल पर ई काज भ' रहल अछि। किन्तु हुनक इच्छा अर्थात् सामाजिक अवधारणा रचनाक संरचनाक अंग नहि बनि रहल अछि। से भेला पर कथामे सामाजिक चेतना अबैत छैक, सामाजिक चेतनाक स्वर मुखर होइत छैक-एकर अभाव एखन हमरा भेटैत अछि।

यैह कारण थिक जे नवतूरक अनेक कथाकारक कथामे वर्णन अत्यन्त माँजल आ सटीक होइत अछि, मुदा अन्त धरि अबैत-अबैत ओ गड़बड़ा जाइत छथि। हुनक कथामे तानी रहैत छनि, भरनी नहि। दुनूक तालमेलेसँ कथा पूर्ण आ सार्थक होइत छैक।

भाइ, एकटा बात अहाँसँ पूछ' चाहब। की अहाँके आलोचना करबा मे व्यक्तिगत संबंध कहियो बीचमे नहि आयल? किएक त' रचनाकार एवं आलोचकक बीच मौन संघर्ष कोनो नब बात नहि अछि।

मैथिली क्षेत्रीय भाषा थिक। मैथिली जनपद बड़ छोट अछि। अधिकांश रचनाकार एक दोसरासँ परिचित रहैत छथि। प्रारंभमे व्यक्तिगत परिचय आलोचना लिखबामे बाधक लागय। किन्तु आब परिचयक विस्तार भेलाक बादो ओ कोनो बाधा नहि दैत अछि। एकर कारण एक्केटा अछि। हम व्यक्तिक नहि, व्यक्तिक प्रतिगामी क्रिया आ विचारक विरोधी छी।

एहि प्रसंगमे एकटा आओर बात हम स्पष्टत: कह' चाहब। हमर बहुत एहन मित्र छथि जिनका ई शिकायत छनि जे मित्र-शत्रुमे हम भेद नहि करैत छी। हमरा सभक स्नेह प्राप्त अछि। हम सभक सम्मान करैत छियनि। निश्चित रूपसँ ई सम्मान ओहि सकारात्मक पक्षक होइत छैक जकर हम खोज करैत छी, उत्खनन करैत छी। केहनो आदमी, कोनो वयसक लोक प्रगतिशील दृष्टिकोणसँ रचना क' सकैत अछि, करैत अछि। हमर आलोचनामे वय अथवा व्यक्तिगत परिचय कतहु बाधक नहि भेल अछि। ओना, एहि सम्बन्धमे पाठकक रूपमे अहीं सभ निर्णय क' सकैत छी।

अहाँकेँ ई नहि लगैत अछि जे विशेष भाषा-साहित्यक उचित आलोचना करबा लेल अन्य भाषा ओ साहित्यक रचना तथा ओहि सभमे कयल जा रहल आलोचनाक पर्याप्त जानकारी हो? आ ताहि लेल 'एक्सटेंसिव' अध्ययन आवश्यक?

आजुक साहित्यकारक लेल व्यापक अध्ययन अनिवार्य छैक। एक समय छलैक जखन स्वयंभू साहित्यकार होइत छलाह। आब से संभव नहि छैक। कवि-हृदय होयब फराक बात थिक आ कविता करब फराक बात। व्यक्ति कतबो सहृदय किएक ने हो, ओ कवियो भ' जाय से आवश्यक नहि छैक। आलोचक लेल त' सहृदयताक संग-संग अध्ययन प्राथमिक

आवश्यकता छैक। मुदा, अहाँक एकटा विचारसँ हम सहमत नहि छी। अन्य भाषाक आलोचना पढ़ब ओतेक आवश्यक नहि लगैत अछि जतेक अन्य अनुशासनक ज्ञान प्राप्त करब। साहित्यकार अथवा आलोचक लेल भूगोल, इतिहास आ समाजशास्त्र पढ़ब अनिवार्य छैक। हम देखने छियनि जे यात्रीजी बुढ़ारीमे एटलस कीनिक' मैग्निफाइंग ग्लास सँ ओकर रेखा पढ़ैत छलाह। यदि हम मिथिलाक भूगोल, इतिहास आ समाजकेँ नहि जनबैक त' हम मैथिली साहित्य जानिये नहि सकैत छी।

मैथिलीक संग दुर्भाग्य रहलैक अछि जे एहिमे वाराणसीमे गति पाबयवला साहित्यकार बेसी भेलाह अछि। विभिन्न विषयक ज्ञान त' दूर रहय, साहित्योक ज्ञान हुनका नहि रहैत छनि। अधिकांश 'पदेन आलोचक' एहने होइत छथि। मिथिलाक प्रसिद्धि विद्वताक क्षेत्रमे एहि लेल अछि जे एहिठामक लोक विभिन्न विषयक ज्ञाता होइत छलाह। एहिठामक परीक्षा-पद्धति विशिष्टताकेँ महत्त्व नहि दैत छल। सर्वज्ञता मैथिल बुद्धिमत्ताक मापदण्ड छल। मैथिली साहित्य, विशेषत: आलोचना, एहि दृष्टिकोण स' अत्यन्त दयनीय स्थितिमे अछि। जाधरि एहि स्थितिमे परिवर्तन नहि होयत ताधरि आलोचनाक सम्यक् विकासो संभव नहि अछि।

अपन लेखनक आरम्भिक कालमे अहाँ कोन आलोचकसँ सभसँ बेसी 'इन्सपायर्ड' भेल छलहुँ? आइ हिन्दी आ अंग्रेजीक कोन-कोन आलोचक अहाँके प्रभावित करैत छथि? मैथिलीक नवका आलोचक सभमे किनका सभकेँ अग्रणी मानैत छियनि?

जेना हम कहि चुकल छी, साहित्यमे आलोचना विधा दिस हमर जे अभिरुचि भेल तकर कारण हमर पिता आ पित्ती छलाह। हुनकालोकनिक साहित्यिक कार्यकलाप, विचार-विमर्श हमरा आलोचक बनबामे उत्प्रेरक भेल। जखन हम आलोचना विधा दिस उन्मुख भेलहुँ तखन कुलानन्द मिश्र हमर दृष्टिकेँ मजलनि, ओकर दिशा निश्चित केलनि। तकराबाद स्वाध्याय मात्र हमर संबल बनल रहल अछि।

हिन्दी अथवा अंग्रेजीक आलोचक के हम अपन गुरु नहि मानैत छी। ई बात सही छैक जे हम रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, निर्मला जैन तथा मैनेजर पाण्डेय लिखित आलोचनाकेँ पढ़ैत छी। किन्तु, दृष्टिकोण अथवा मान्यतासँ सहमति भिन्न बात थिक,

ओहिसँ प्रभावित होयब भिन्न बात। मैथिली साहित्यक आलोचनामे ओ सभ बहुत सार्थक नहि छथि।

किरणजी ठीके कहने छथि जे मैथिली साहित्यके बुझबा लेल मैथिल आँखि चाही। कोनो सिद्धान्त आ दृष्टिकोण कतेक दूर तक हमर जनपदकेँ आ ओकर साहित्यकेँ प्रभावित कयलक अछि से देखब मैथिली आलोचनाक मुख्य काज छैक। लूकाच आ ग्राम्शी सन समाजशास्त्री सेहो क्षेत्र-विशेषक अध्ययनमे आंशिके रूपसँ मार्गदर्शक भ' सकैत छथि। तेँ हम कहब जे मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकेँ पढ़ि क' कयल जयबाक चाही।

आ, अन्तिम प्रश्न। यद्यपि एकर उत्तरमे ककरो 'सब्जेक्टिव' भेनाइ स्वाभाविक छैक। किएक त' हरेक व्यक्तिक अपन व्यक्तिगत पसिन्न एवं नापसिन्न भ' सकैत छैक। कृपया ई कहियौक जे अहाँक दृष्टिमे कविवर विद्यापतिसँ आइतक मैथिली साहित्यक पाँच टा सभसँ प्रतिभाशाली कवि के छथि? तहिना पाँच-पाँच टा कथाकार, उपन्यासकार ककरा मानब अहाँ?

प्रतिभाशाली आ भुसकौल रचनाकारक गप्प नहि हो, हम अपन प्रिय रचनाकारक नाम कहि सकैत छी। ओना, एहू मे किछु कठिनता अछि। छौ सै वर्षक अवधि आ ताहि अनुपातमे साहित्यकारक संख्या-एहिमे पाँच-दसटा केँ चूनब सरल नहि अछि। एकर अतिरिक्त हम मानैत छी जे एहि प्रकारक कोनो सूची व्यक्ति सापेक्ष होयत। एहिमे भिन्नता हेतैक। दृष्टिकोणक अन्तर नाममे परिवर्त्तन-परिवर्द्धन क' देत। एहि सभ किन्तु-परन्तुकेँ ध्यानमे रखैत तत्काल स्मरण पथमे आबयवला हमर प्रिय साहित्यकारमे छथि-विद्यापति, चन्दा झा, हरिमोहन झा, कांचीनाथ झा 'किरण', यात्री, राजकमल चौधरी, लिली रे, राधाकृष्ण, प्रभास कुमार चौधरी, विनोद बिहारी लाल, कुलानन्द मिश्र, सुकान्त सोम, सुभाष चन्द्र यादव, हरेकृष्ण झा आदि।

नवका पीढ़ीक रचनाकारमे विभूति आनन्द, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, तारानन्द वियोगी आ रमेशकेँ पढ़ब हमरा नीक लगैत अछि। आनो रचनाकारक बहुत रचना नीक लागल अछि, तेँ मोनो अछि। मुदा बहुविधावादी लेखकक बेसी लेखन बिसरा जाइत अछि। एकरा रचनाक कमजोरी कही अथवा हमर

सीमा-मुदा ई यथार्थ अछि। हमरा दृष्टिमे कथ्य महत्त्वपूर्ण होइत अछि, तकरे हम प्रतीक्षा करैत छी, तकरे हम स्वागत करैत छी।

धन्यवाद भाइ, चलैत-चलैत ई कहि दिअ' जे तत्काल अहाँ कोन काजमे हाथ लगौने छी?

एखन हम विद्यापति गीतक अध्ययन क' रहल छी। अद्‌भुत विडम्बना अछि जे, हमरा जनैत, विद्यापति पर, खास क' मैथिलीमे, कोनो काजे नहि भेल अछि। किन्तु किछु गोटे मानैत छथि जे विद्यापति पर आब की काज करब। एहि प्रसंग मे हमरा मोन पड़ैत अछि अपन मित्र पी. के. झाक एकटा संस्मरण। ओ कहलनि जे दरभंगा रेडियो स्टेशनमे कार्यक्रमक इच्छुक जतेक लोक आबथि ताहिमे नब्बे प्रतिशत विद्यापतिक संबंधमे रचना पाठ करयवला रहथि। एहिमे स्कूलक अदन्त विद्यार्थीसँ ल' क' सेवानिवृत्त गलित नखदन्त अध्यापक धरि रहथि। एतेक लोकप्रिय भेलाक बादो विद्यापति केँ जाहि उपेक्षा दृष्टिसँ देखल आ पढ़ल गेल अछि से अत्यन्त चिन्तनीय थिक।

कतेक लाजक बात थिक जे विद्यापतिक अन्य अनेक कृतिक प्रकाशनक तँ गप्पे कोन, संपूर्ण गीतक संग्रह एखनधरि नहि प्रकाशित भेल अछि। पोथी छपबे नहि कयल अछि, गीतक संग्रहे नहि आयल अछि तखन ओहि प्रसंग विचार की होयत? एक दिस स्थिति ई अछि आ दोसर दिस हमर अध्यापक तथा मैथिलीसेवी वरदपुत्र उद्‌ग्रीव भ' क' विद्यापतिक नाम-संकीर्तन क' रहल छथि। हमर उद्देश्य साहित्य संसारक मैथिली प्रेमीकेँ एहि स्थितिसँ परिचित करायब अछि।

(सन्धान-4, जुलाई 2000)

卐

सर्वस्वांतक ऐतिहासिक महत्व छैक

[मैथिलीमे हेबनिमे जे उपन्यास सभ आयल अछि ताहिमे साकेतानन्दक 'सर्वस्वांत' प्रमुख अछि। एहि संवाद लेल एहू दुआरे एहि उपन्यासक चयन कयल गेल जे ई उपन्यास मिथिलाक पुरान आ महत्त्वपूर्ण समस्या बाढ़ि पर आधारित अछि। एहि उपन्यासमे कोसी नदीक विभीषिकाक संग बान्ह सेहो एक विकराल प्रश्न ठाढ़ क' गेल अछि। 'घर-बाहर'क एहि अंकमे विशेष रूपें नदी, अकाल, बाढ़ि आ ओकर निदान लेल नदी जोड़बाक परियोजना पर चर्च भेल अछि। मिथिलाक समाज, आर्थिक तंत्र, सांस्कृतिक परिदृश्यकें जाहि हिसाबें नदी, बान्ह, बाढ़ि, अकाल आदि प्रभावित केलक अछि, ताहि कारण ई एक प्रमुख समस्याक रूप ल' लेलक अछि।

'सर्वस्वांत' उपन्यासक समीक्षा उपयुक्त मानिक' ई निर्णय लेल जे एहि पर मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाजसँ संवाद कयल जाय। स्वाभाविक रूपसँ ई संवाद सर्वस्वांत उपन्यासकेँ एक साहित्यिक कृति मानिक' कयल गेल। तेँ एहि संवादक एक सीमा सेहो अछि। हमरालोकनि जे एहिमे भाग लेलहुँ से मूलतः साहित्यकार छी। तेँ एकर कथ्य, शिल्प, ऐतिहासिक महत्व आदि पर संवाद प्रमुख रूपें आधारित रहल। बाढ़ि, बान्ह, नदी आदिक तकनीकी आयाम, ओकर सामाजिक-आर्थिक पक्ष पर विचार करब युक्तिसंगत नहि लागल। तैयो एक जागरूक नागरिक आ पाठकक हैसियतसँ उपन्यास एहि विन्दु सभकेँ जत' स्पर्श करैत अछि तकर किछु विवेचन त' भइये गेल अछि। ओहुना, साहित्योमे कोनो समस्या, स्थितिक जतेक विस्तारसँ आकलन भ' सकय से कोनो अनुचित त' नहिये अछि। मुदा, संवादमे हमरालोकनि ई नहि बिसरलहुँ अछि जे सर्वस्वांत एक

साहित्यिक कृति थिक। तेँ एकरा साहित्यिके नजरिसँ मोटामोटी देखबाक चाही।

मोहन भारद्वाजक आवास शांति निकेतन, शिवपुरी, पटनामे कयल गेल एहि संवादकेँ प्रसिद्ध कथाकार-कवि रमेश आ अजित कुमार आजाद अपन उपस्थिति आ सहभागितासँ बेसी सार्थकता प्रदान केलनि। -सं.]

अशोक-भाइ, एहि बीचमे एक उपन्यास आयल अछि जाहिमे मिथिलाक प्रमुख समस्या-बाढ़ि आ बाढ़िसँ तबाह इलाकाक दुख, पीड़ा, क्षोभ आ आक्रोश अभिव्यक्त भेल अछि। स्पष्ट अछि जे हम साकेतानन्दक उपन्यास 'सर्वस्वांत'क गप्प क' रहल छी। एहि उपन्यासकेँ विषयक दृष्टिसँ अबैमे कियैक एतेक दिन लागि गेल, जखन कि बाढ़िक समस्या बहुत पुरान अछि। उपन्यासो मैथिलीमे शताब्दीक प्रारम्भेसँ लिखा रहल अछि।

मोहन भारद्वाज- अहाँ ठीके कहलहुँ। मैथिलीमे बाढ़ि आ ओकर विभीषिका पर कथा, कविता त' आयल अछि, मुदा उपन्यास नहि। मिथिलामे बाढ़ि कहियासँ अबैत अछि से कहब कठिन। किछु विद्वानक मत छनि जे मिथिलाक भूगोल बढ़ियेक देन थिक। हिमालयसँ बहैत पानिक संग जे थाल-कादो आ बालु आयल से कालान्तरमे मिथिला नामसँ प्रसिद्ध भेल। तेँ मिथिलाक भूगोल पानि आ बढ़िक उपलब्धि थिक। मैथिलीक उपन्यासो आब बुढ़ा गेल अछि। लगभग नब्बे वर्षक एकर आयु भेलैक अछि। किन्तु एकरा सभक अछैत बाढ़ि आइ धरि मैथिली उपन्यासक विषय-वस्तु नहि बनल। हमरा जनैत एकर सामाजिक कारण अछि। वर्ण व्यवस्था आ ताहिसँ उपजल संस्कार एहि दुर्घटनाक मुख्य नियन्ता अछि। बाढ़ि कोनो एक जातिक लेल नहि अबैत छैक। ओ सभ जातिक लोककेँ समान दृष्टिसँ देखैत छैक। मुदा मैथिली उपन्यासकारक दृष्टि एतेक व्यापक नहि रहलनि अछि। ओ अपन जातीय समस्यामे ओझरायल रहला अछि। यैह कारण थिक जे मैथिलीक उपन्यास बहुत दिन धरि विवाहकेँ अपन विषय बनौने रहल। जखन प्रगतिशीलताक आग्रह बढ़लैक तखनहु हमर उपन्यासकार पैघ आ छोट जातिक आपसी सम्बन्ध फड़िछेबामे लागल रहला। सम्बन्धक फड़िछौटमे वर्णकेँ वर्गक कोलामे ल' जेबाक प्रयास किछु उपन्यासकार अवश्य केलनि,

तथापि सम्पूर्ण समाज कें एक इकाइक रूपमे देखल गेल हो, तेहेन उपन्यास एके-दूटा अछि। संक्षेपमे कही जे मैथिली उपन्यासकारंक दृष्टिकोण एकांगी रहलनि अछि। तें उपन्यासो एकांगी आयल अछि। एहि दृष्टिकोणसँ साकेतानन्दक सर्वस्वांत एकटा उल्लेखनीय डेग अछि। एहि उपन्यासक एहि तरहेँ ऐतिहासिक महत्व छैक।

अशोक– सर्वस्वांतकें पढ़ैत हमरा मैथिलीक आन उपन्यास सभ सेहो मोन पड़ैत रहल। अधिकांश उपन्यासमे सामाजिक समस्यासभ उठाओल गेल अछि। मोटा-मोटी मैथिली उपन्यास समस्या प्रधान रहल अछि। की अहू उपन्यासकें समस्या-प्रधान उपन्यास मानब?

मोहन भारद्वाज– नहि। ई उपन्यास समस्या-प्रधान नहि, घटना-प्रधान अछि। बाढ़ि आ बान्हसँ सम्बद्ध अनेक समस्याक उल्लेख एहिमे भेल अछि, मुदा ओकर प्रधानता नहि अछि। उक्त विषयसँ सम्बद्ध समस्याक उपस्थापन कि विश्लेषण अथवा तकर समाधानक प्रयास एहि उपन्यासक अभीष्ट नहि अछि। तकनीकी हिसाबें देखी त' एहि उपन्यासक लगभग सत्तरि-अस्सी पृष्ठ बाढ़िक विनाशलीला पर खर्च भेल अछि। तकराबाद जखन ओकर परिणाम पर विचार करबाक बेर होइत छैक तखन उपन्यासकें सम्पूर्ण कृतिक धन्यवाद-ज्ञापन बना क' समेटि लेल जाइत अछि। एहिठाम एकटा रूपकक माध्यमसँ हम अपन बात फड़िछाब' चाहब। मानि लेल जाय जे एकटा टूगर बच्चाक जीवनक व्यथा-कथा जानब हमर इच्छा अछि। ओहि बच्चाक माय ओकर जन्मेकालमे मरि गेल छैक। आब यदि कोनो रचनाकार ओहि बच्चाक मायक सम्भोग क्रियासँ प्रसव प्रक्रिया धरिक खिस्सा लीखि जाथि आ बच्चाक जन्म होइतहि चुप्प भ' जाथि त' की एहिसँ बच्चाक व्यथा-कथा बुझबामे आओत? हमर कहबाक आशय ई अछि जे जत' सर्वस्वांत समाप्त होइत अछि तत' शुरु कयल जाइत त' ई समस्या प्रधान उपन्यास भ' सकैत छल।

रमेश– अहाँ जे भाइ कहल अछि, मैथिलीमे त' वस्तुतः ई पहिल उपन्यास भेल बाढ़िक समस्या पर। मुदा हिन्दीमे जे उपन्यास मायानन्द मिश्रक छनि **सोने की नैया माटी के लोग**, सेहो एही विषय-वस्तु पर केन्द्रित अछि। एहि पोथीसँ बहुत पूर्व ओ छपल छल। एहि पोथीक

निष्पत्तिसँ ओकर किछु अलग निष्पत्ति छल। हुनकर उपन्यासक अन्त रूसी तर्ज पर कोआपरेटिव के गठन क' बाढ़िग्रस्त लोकक जीवनक समस्या सभक समाधानक सुझाव छल। सर्वस्वांतमे क्षतिपूर्त्तिक गप्प कयल गेल अछि। मिथिलाक आ कोशीक एहि समस्या पर कविता-निबन्ध आ अन्य-अन्य विधाक माध्यमसँ सेहो किछु-किछु काज भेल अछि। तटबन्ध आ बाढ़िक समस्या साकेतानन्दजी 2003मे अपन उपन्यासमे प्रकाशित क' अनलनि अछि। जँ ई समस्या नहि थिक त' ई समाधान कोना प्रस्तुत केलनि? हिनकर समाधानकें अहाँ कतेक सकारात्मक, वैज्ञानिक, अद्यतन आ इमानदार मानैत छी?

मोहन भारद्वाज– हम एखन मैथिली उपन्यास आ सर्वस्वांतक पृष्ठभूमिमे गप्प क' रहल छलहुँ। मायानन्द मिश्रक हिन्दी उपन्यासमे बाढ़ि आ बान्हक समस्याकें कोना उठाओल गेल अछि, ओकर समाधानक की रूपरेखा प्रस्तुत कयल गेल अछि से हमर विचारक परिधिमे नहि अछि। मायानन्द मिश्रक एहि विषयक उपन्यास हिन्दीमे प्रकाशित भेल। विभूति भूषण मुखोपाध्याय बंगलामे एकटा पोथी लिखने छथि जकर अनुवाद मणिपद्म **कोशी प्रांगणक चिट्ठी** नामसँ केलनि अछि। ओ उपन्यास नहि थिक। किन्तु, कोसी, ओकर बाढ़ि आ ओहि ठामक लोकक सम्बन्धमे बहुत नीक वर्णन ओहि कृतिमे भेल अछि। मैथिलीसँ इतर भाषामे मिथिलाक बान्ह आ बाढ़ि कियैक आयल अछि आ मैथिलीक उपन्यासकार सभ एहि दिससँ आँखि किये मुनने रहला अछि, तकर उल्लेख हम क' चुकल छी। एहिठाम एकटा बात हम फेर कह' चाहब जे कविता-कथामे खण्ड-खण्डमे गप्प करब सुलभ होइत छैक, मुदा उपन्यासमे नहि। उपन्यासक जन्म लोकवादी विधाक रूपमे भेल छैक आ मैथिली उपन्यासकारक लोकवादी दृष्टि यदि रहबो केलनि अछि त' खण्डित रूपमे। तें मैथिलीमे बाढ़ि आ बान्ह उपन्यासक विषय नहि बनि सकल।

जहाँ धरि साकेतानन्दक उपन्यासमे बाढ़ि आ बान्हक समस्या, ओकर समाधान देबाक प्रश्न अछि हम स्पष्ट कह' चाहब जे एहि कृतिक लेखनक पाछाँ उपन्यासकारक अभिप्रेत ने त' बान्ह आ बाढ़िक समस्याक विश्लेषण छनि आ ने ओकर समाधानक विचार उपस्थित करब। तें एहि प्रसंग गप्पे की हो!

अशोक– ललितक प्रसिद्ध उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' प्रसिद्ध आलोचक रमानाथ झाकेँ छुछुन लगलनि। छुछुन लागब उपन्यासक अंग-उपांगक सुपुष्ट नहि होयब थिक। कतहु ने कतहु पृथ्वीपुत्र पर यांत्रिक हेबाक सेहो आरोप लगैत रहल अछि। एहि दृष्टिसँ सर्वस्वांतक सम्बन्धमे अहाँक की धारणा अछि?

मोहन भारद्वाज– जाहि अर्थमे रमानाथ झाकेँ ललितक पृथ्वीपुत्र छुछुन लगलनि ताहि अर्थमे साकेतानन्दक सर्वस्वांत छुछुन नहि अछि। एकटा बातपर ध्यान दिऔ। ककरो देह दोहरा होइत छैक, ककरो एकहरा। जकरा देहमे दोहरा होयबाक सम्भावना होइत छैक तकरो देह बच्चेसँ दोहरा हो से जरूरी नहि छै। सुनैत छियैक जे मैथिल ब्राह्मण परिवारक बहुत गोटेक देह सासुर गेला पर भरैत छैक। साकेतानन्दक वर्त्तमान कृतिकेँ यदि पूर्वार्द्ध मानल जाय आ ओ एकर उत्तरार्द्ध लिखथि त' उपन्यास कदाचित सुपुष्ट भ' सकैत अछि। उपन्यासक एखन जे रूप अछि तकरा पढ़ला पर लगैत अछि जे साकेतानन्दक अभीष्ट बान्ह टुटला पर नवहट्टा परिसरक सर्वस्वांत कोना भेल ततबे मात्र कहब छनि। बान्ह कियैक बनल, बान्ह कियैक टूटल, बान्ह बनबाक आ टुटबाक एहि प्रक्रियासँ मुक्ति पाबि सर्वस्वांत होयबासँ कोना बचल जा सकैत अछि-ई सभ बात उपन्यासक विषय नहि अछि। एहि तरहक बातक चर्चा भेल अछि त' प्रसंगवश, विचारणीय विन्दुक रूपमे नहि। तेँ ई कहब अनुचित नहि होयत जे साकेतानन्द बान्ह आ बाढ़ि सनक अखिल भारतीय समस्याकेँ नदी मातृक प्रदेश मिथिलोक समस्या नहि बना सकलाह आ तेँ मैथिलीक उपन्यासक एकटा नीक विषयक सर्वस्वांत भ' गेल अछि। तथापि जेना हम पहिने कहलहुँ अछि, ई मैथिलीक ऐतिहासिक महत्त्वक उपन्यास अछि आ एकराबाद एहि विषय पर जमिक' लिखल-जायत तकर सम्भावना बढ़ि गेल अछि।

अजित– एत' अहाँ आलोचकीय भाषाक इस्तेमाल करैत एक संगे दू बात कहलियै से सायास अथवा अनायास। एक दिस पूरा उपन्यासकेँ सर्वस्वांत कहि क' ओकर लक्ष्य केँ खारिज करैत छियैक आ दोसर दिस एकरा ऐतिहासिक कहैत छियैक। ई दुनू बात एक संगे कोना भ' सकैत छैक?

मोहन भारद्वाज– हम कोनो बात अनायास नहि कहैत छी। जे बात कहैत छी से हमर विचार थिक। साकेतानन्द एकटा अहम विषय पर उपन्यास लिखलनि। ई मैथिली उपन्यासक इतिहासमे निश्चित रूपसँ ऐतिहासिक महत्त्वक बात अछि। ओहि उपन्यासक सीमा छैक-ओ बेटा लोथ भ' गेलनि, तेँ हुनका सन्तानहीन कहियनि ई अनुचित होयत। हम एहि उपन्यासकेँ सीमाबद्ध एहि लेल क' रहल छी• जे बेटाकेँ जनमाक' व्यक्ति पुत्रवान कहा सकैत अछि, मुदा लोथ आ अपंग बेटासँ बापक सेहन्ता पूर्त्ति नहि भ' सकैत छैक। एहिमे कतहु विरोध नहि अछि।

अशोक– सर्वस्वांतमे जे समाज अछि से मिथिलाक ग्रामीण समाज थिक। ओहिमे गाम अछि। गामक गोलैसी अछि। संस्थागत भ्रष्टाचार अछि। अपसंस्कृति अछि। एकटा एहन वर्ग अछि जे कोनो धरानी रुपैया बनाब' पर विर्त्त अछि। मुदा एहि सभक विरोधमे ठाढ़ लोक सभ सेहो अछि। उपन्यासमे आयल गामक एहि यथार्थसँ अहाँ कतेक सहमत छी? की ई यथार्थ थोपल त' नहि लगैये?

मोहन भारद्वाज– अहाँक प्रश्नक पूर्वार्द्धसँ हम सहमत छी, मुदा उत्तरार्द्धसँ नहि। उपन्यासमे गामक लोक अछि। लोकक चालि-ढालि अछि। गामक राजनीति-गोलैसी, भ्रष्टाचार आ अपसंस्कृति अछि। ई सभ अछि। मुदा तैयो ई मिथिलाक ग्रामीण समाजक उपन्यास नहि अछि। सत्य कही त' सर्वस्वांत सामाजिक उपन्यास अछिये नहि। एहिठाम हम एक टू टा बात दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट कर' चाहब। कोनो लेखनमे तथ्य की होइ छै? जाहि बातकेँ, घटनाकेँ, स्थितिकेँ रचनाकार तथ्य बनाब' चाहैत छथि सैह ओहि रचनाक तथ्य बनैत छैक। एहि उपन्यासक तथ्य की अछि? उपन्यासक प्रथम लगभग पचास पृष्ठमे गामक गोलैसी आ भ्रष्टाचार भेटैत अछि। ई गामक सामान्य स्थितिक तथ्य अछि। तकराबाद कोसीक पूर्वी तटबन्ध टुटैत छैक। जलप्लावान होइत छैक। लोक सभ भागिक' जान बचब' चाहैत अछि। कतेक लोक बान्ह पर अयबामे सफल होइत अछि। कतेक लोक भासि जाइत अछि। कतेक लोक भसिआइत लोककेँ बचेबामे सफल होइत अछि। ई काज वैह सभ करैत अछि जे पहिने आपसमे झगड़ैत रहैत छला, भ्रष्टाचारी छला। ई दुनू तथ्य उपन्यासमे आयल अछि। किन्तु मुख्य बात ई

अछि जे उपन्यासक ई दुनू तथ्य एक दोसराक पूरक नहि, विरोधी अछि। सामान्य स्थितिमे झगड़ा-फसाद आ कुकर्म आ असामान्य स्थितिमे मेलजोल आ एकता। एकर की अर्थ? मिथिलाक लोक सामान्य स्थितिमे अधलाह आ असमान्य स्थितिमे नीक होइत अछि? मिथिलाक ग्रामीण समाजक स्वायीभाव ककरा मानल जायत? असामान्य स्थिति मे मनुष्यक विवेक जागि जाइत छैक से बात कतेक बेर कहल गेल अछि। कहल त' इहो गेल अछि जे मनुष्यक स्वभावक परिचय सामान्य स्थितिक कार्यकलाप आ सोच-विचारसँ होइत छैक। यदि ई सत्य त' मिथिलाक ग्रामीण लोकक जाति, धर्म, लिंग, आ क्षुद्रतासँ ऊपर उठि क' जीवनयापन करबाक तथ्यकेँ उजागर करक लेल उपन्यासकार कोसीक पूर्वी-तटबन्धकेँ तोड़िक' बाढ़ि आनब आवश्यक कियैक मानैत छथि? हम अहाँक एहि बातसँ सहमत नहि छी जे उपन्यासमे ग्रामीण समाजमे पसरल अनाचार आ अपसंस्कृतिक विरोध भेल अछि। उपन्यासक प्रमुख आ केन्द्रीय मुद्दा अछि बान्ह टुटब। मुदा रचनाकारक अनुसार नवहट्टा परिसरक लोक एहि स्थितिसँ अभ्यस्त अछि। एहेन स्थिति ओकरा रेहल-खेहल छैक। ओहिठामक नेता मुख्यमंत्री बनिक' बान्हक मरम्मति करबैत रहलथिन आ लोक ठकाइत रहल से बात उपन्यासमे मात्र सूचना बनिक' अबैत अछि। प्रश्न अछि जे आखिर एना किएक होइत छैक? मिथिलाक लोक शंतिप्रिय होइत अछि से मानल। मुदा ओ उचितवक्ते नहि, प्रतिकार आ प्रतिरोधमे ठाढ़ो होइत अछि सेहो सत्य छैक। ई तथ्य उपन्यासमे कियैक नहि आयल अछि? असाधारण स्थितिमे असाधारण आचरण साधारण बात थिक। ग्रामीण समाजक उपन्यास ई तखन होइत जखन फेर अर्थात् बाढ़िक बाद सामान्य स्थिति अयला पर ओहिठामक लोकक सामान्य स्वभावक परिचय देल जाइत। उपन्यासक अन्तमे रिलीफक विरोध एहि लेल कयल जाइत अछि जे ओ ग्रामीण समाजमे आयल एकताकेँ भंग करबाक अमरीकी साजिश थिक। ई बात, एतेक महत्वपूर्ण आ गम्भीर विषयकेँ, चलैत-चलैत कहिक' आगाँ बढ़ि जायब उपन्यासकारक कोन मानसिकताक देन थिक? तेँ, ई सभ बात-विचार एहि उपन्यासक सन्दर्भमे हमरा अप्रासंगिक जकाँ लगैत अछि। उपन्यासकारक अभीष्ट जखन मिथिला समाजक

खूबी-खराबीकेँ राखब नहि छनि अर्थात् सामाजिक उपन्यास लिखब नहि छनि तखन उपन्यासकेँ मिथिलाक ग्रामीण समाजक दर्पण कहब थारी हेड़यला पर धैलमे हथोड़िया देब होयत।

अशोक– भाइ, हमर प्रश्न उपन्यासक शैलीसँ सम्बन्धित अछि। घटना सभक वर्णन द्वारा साकेतानन्द गामक यथार्थ अथवा बाढ़िक यथार्थ रखलनि अछि से की बिना जनने-भोगने सम्भव अछि?

मोहन भारद्वाज– शिल्प-शैलीक दृष्टिकोणसँ देखल जाय त' ई उपन्यास महत्वपूर्ण अछि। एकरा मैथिली उपन्यासक दिशा-निर्देशक सेहो कहि सकैत छी। सर्वस्वांत मैथिलीक एन्टी हीरो उपन्यास अछि। कहल जाइत अछि जे उपन्यासक जन्म महाकाव्यक प्रतिस्थानीक रूपमे भेलैक। मुदा, से मैथिलीमे नहि भ' सकलै। उपन्यासो महाकाव्ये जकाँ हीरोकेँ पकड़नहि रहल। हीरो वरशिप अर्थात् व्यक्तिपूजावला मानसिकता उपन्यासमे चलैत रहलैक। उपन्यासक कथानक एकटा नायकक परिक्रमा करैत रहल। मैथिलीमे पहिल बेर यात्री नवतुरियामे एकल नायक बला औपन्यासिक संरचनाकेँ समाप्त क' समुदायक नायकत्वक प्रतिष्ठापन केलनि। मुदा यात्रीक प्रयोग ओहिना रहि गेल। ओकर विकास नहि भ' सकल। एतेक दिनक बाद साकेतानन्द ओहि औपन्यासिक संरचनाकेँ व्यापकता प्रदान केलनि अछि। जन समुदाये एकर नायक अछि। एहि दृष्टिकोणसँ ई उपन्यास लोकवादी लगैत अछि।

किन्तु, एहि ठाम एकटा बात पर ध्यान अँटकि जाइत अछि। इच्छा आ तकर क्रियान्विति दू वस्तु थिक। रचनाकारक इच्छा छनि जे उपन्यासक चरित्र लोकवादी हो आ ताहि लेल ओ बाना सेहो बुनलनि अछि। मुदा वस्तुतः उपन्यास लोकवादी भ' नहि पबैत अछि। एहि क्रम मे हमर ध्यान सभसँ पहिने उपन्यासक समर्पण-वाक्य पर जाइत अछि। साकेतानन्द लिखने छथि : उपन्यासक हाकिम कुमार अंशुमालीकेँ सादर। एहि वाक्यक दू अर्थ भ' सकैत अछि। सम्भव अछि जे कुमार अंशुमाली नामक कोनो उपन्यासकार होथि जिनका साकेतानन्द उपन्यासक हाकिम अर्थात् महत्वपूर्ण लेखक मानैत छथि आ हुनके ई पोथी समर्पित अछि। किन्तु दोसर अर्थ जे लगैत अछि से ई जे एहि उपन्यासक हाकिम कुमार अंशुमालीकेँ ई उपन्यास

समर्पित अछि। उपन्यासमे अंशुमाली नामक कोनो हाकिम नहि छथि। यदि अंशुमान शर्माकेँ कुमार अंशुमाली मानि लेल जाय त' तखन आश्चर्य होइत अछि जे एकटा सरकारी पदाधिकारीकेँ, नवहट्टाक अंचल अधिकारीकेँ, कोन गुण पर पुस्तक सादर समर्पित कयल गेल अछि। उपन्यासकार हुनका प्रकारान्तरसँ नायकत्व दैत छथि, मुदा से कियैक। पहिल बात त' ई अछि जे ओ आजुक मिथिला कि भारतक नागरिकक त्रासदीक जे तीनटा घटक अछि-नेता, प्रशासक आ ठीकेदार-तकर अंग छथि। ओ सहृदय प्रशासक छथि, मुदा जतेक सहृदय छथि ताहिसँ बेसी निष्क्रिय। उपन्यासमे एकठाम कहल गेल अछि जे ओ हाकिम नहि, एकटा मनुक्ख रूपमे लोकक संग छथि। संग त' छथि, मुदा कुशक ब्रह्मा बनि क'। सरकारी व्यवस्थाकेँ नाँगट करबाक माध्यम हुनका बनाओल जा सकैत छल, मुदा से उपन्यासकारक अभिप्रेत नहि छनि। बाढ़िक विनाशलीलामे मरैत लोकक कोनो उपकार हुनक प्रयास ओ उद्यमसँ भेल अछि से देखबामे नहि अबैत अछि। हुनक उपस्थितिकेँ एतेक महत्वपूर्ण कियैक बूझल गेल अछि से नहि कहि। भरिसक अन्हरा गाममे कनहा राजा होइत छैक, तँ। मुदा आश्चर्य त' तखन होइत अछि जे जिनका हाकिम नहि, मनुक्ख रूपमे देखबाक आग्रह कयल गेल अछि से भूख लगला पर दही-चूड़ा एहि लेल खाइत छथि जे ओ सामान्य लोकसँ फराक छथि। हाकिम छथि। आमलोक भुखले अछि त' बेस। हाकिमक पेट भरब एहि लेल जरूरी छैक जे ओकरा आम लोककेँ भोजन करेबाक छैक। पहिने अपन पेट भरत तखन ने दोसरोक भरतैक! जाहि हाकिमक एहन सोच हो से उपन्यासकारक आदरणीय छथिन आ सेहो मनुक्खक रूपमे नहि, हाकिमक रूपमे। ओहि हाकिमक विशेषता यैह अछि जे ओ अड़तालीस घंटा चाहे-विस्कुट पर रहि गेलाह, अपन जिन्सक पैंटकेँ भिजा क' बाढ़िमे घुमबाक कष्ट उठौलनि। ठीके, ओ प्रणम्य छथि।

एहि सन्दर्भमे सभसँ बेसी अनसोहाँत लगैत अछि अंशुमान शर्माक पत्नीक क्षेपक-प्रसंग। उपन्यासमे हुनक की प्रयोजन अछि? ने त' ओ बाढ़िमे भसिआइत लोकक उपकार केलनि अछि आ ने बान्ह तोड़बेमे सहायक भेलीह अछि। इंजीनियर इनचीफ मिस्टर मित्राक योगदान बान्ह तोड़बामे छनि। मनोहर चौधरीक देन बान्ह आ बाढ़ि दुनू अछि। किन्तु

वीणाजी की केलनि? कलकत्ताक नामी डाक्टरक बेटी छली आ किसानक बेटासँ हाकिम बनल पति पर रोब चलैत छनि से जानि क' सर्वस्वांतक पाठक की करताह?

अहाँ साकेतानन्दकेँ भोक्ता रचनाकार मानलियनि अछि-एहि लेल जे ओ बाढ़िक विस्तृत वर्णन केलनि अछि। उपन्यास पढ़लापर एहन-सन लगैत अछि जे रचनाकार एकर घटना-क्रमसँ तथा किछु पात्रसँ कतहु-ने-कतहु, कोनो-ने-कोनो रूपमे जुड़ल छथि। बाढ़िमे डुबैत-बचैत लोकक विस्तृत वर्णन एकरे संकेत करैत अछि। मुदा तकर परिणाम की होइत अछि? अपन बात स्पष्ट करबाक लेल हम उपन्याससँ एकटा उदाहरण देब। उपन्यासमे एकटा पात्र अछि सौदागर। ओ बान्हसँ एतेक जुड़ल अछि जे बान्ह टुटनाइ केँ अपन कर्त्तव्यच्युति मानैत अछि। ई भावना ओकरा ततेक आक्रान्त क' लैत छैक जे अन्ततः ओ सनकी जकाँ कर' लगैत अछि। एहि प्रकारक पात्रक परिकल्पना विभूति बाबू कोशी प्रांगणक चिट्ठीमे सेहो केने छथि। लक्ष्मी सिंह नामक अर्दली कोसीक लीलासँ ततेक अभिभूत अछि जे ठाम-कुठाम कोसीक कथा कहबाक लेल उताहुल भ' जाइत अछि। एहि प्रकारक पात्र मनोरंजनक मुद्रामे यथार्थक जे उपस्थापन करैत अछि से मार्मिक त' होइत अछि, मुदा की ओकरा यथार्थ कहबैक? विचारबाक थिक जे भावातिरेकमे बहकि क' की यथार्थक उपस्थापन कयल जा सकैत अछि? ई बात जहिना सौदागरक लेल ठीक नहि अछि तहिना साकेतानन्दक लेल सेहो नहि। कहबी छैक जे तरहत्थीक रेखा पढ़बा लेल हाथकेँ आँखिसँ कने दूर राखब आवश्यक अछि। साकेतानन्द नवहट्टामे 5 सितम्बर 1984 केँ आयल बाढ़िसँ ततेक सम्मोहित छथि जे भावाभिभूत भ' क' बहकि जाइत छथि। सौदागर जकाँ हुनका झोंक अबैत रहैत छनि आ ओ नवहट्टाक जाप करैत रहैत छथि। एकर पता चलैत अछि उपन्यासमे आयल किछु सकुनतकियासँ। सम्पूर्ण उपन्यासमे नहियो किछु त' दस-बीस बेर ओ अपन गामक परिचय दैत लिखने छथि-गाम नवहट्टा परगना-कबखण्ड, जिला-सहरसा, पुरना भागलपुर। तहिना ओ कुख्यात कोसीक विख्यात पूर्वी तटबन्धकेँ तथा मुखियाजीक बीड़ीकेँ बीरी कहबकेँ सकुनतकिया बनाक' नहि जानि कतेक बेर प्रयोग केलनि अछि। एहि सभसँ वर्णन यथार्थवादी

नहि होइत अछि-ई बात भिन्न थिक जे भावावेगक पोचारा अधिक पड़लासँ यथार्थ बदरंग भ' जाय। कहबाक आवश्यकता नहि जे उपन्यासक केन्द्रीय विषय बाढ़िक डुबैत-बचैत लोकक विवरण अछि आ से एहि कृतिकेँ साहित्य लेखनसँ बेसी अखबारक आफ बीट स्टोरी बना क' राखि दैत अछि। बाढ़िक त्रासदी भोगैत लोकक वर्णन त' एहिमे अछिये नहि। तेँ ओहि प्रसंग किछु कहब अनुचित होयत।

अजित– शिल्प आ शैलीमे अहाँ सर्वस्वांतकेँ बेजोड़ कहलियैक अछि। मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे मोड़ आन' बला मानलहुँ अछि। जखन की एहि उपन्याससँ किछुये पूर्व प्रकाशित धूमकेतुक **मोड़ पर** अपन शिल्प संरचनामे बेछप अछि। पाछू तकला पर **बलचनमा** आ **मंत्रपुत्र**क नाम सेहो लेल जा सकैत अछि। तथापि जँ अहाँ एकरा शिल्प आ शैलीक दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ मानैत छी त' से एकर सफलते ने भेलैक? दोसर बात, अहाँ जाहि एन्टी हीरोक बात कयल अछि-से बात एहिमे कहाँ छैक? एन्टी हीरो माने भिलेन। से एहिमे कतौ नहि छैक। आ जँ छैक त' से परिस्थिति आ घटना छैक। अहाँ अपनो स्वीकारै छी जे एहिमे समुदाय हीरो छैक-कोनो एकटा व्यक्ति नहि। ताहिमे एन्टी हीरो वला बात कहाँ छैक? एक आर बात ई जे ई त' उपन्यासक सफलते ने भेलैक जे एकर प्रत्येक पात्रक प्रति पाठकक एकटा अन्तरंग परिचिति अथवा सहानुभूति बनैत छैक। अहाँकेँ कोनो एहन उपन्यासक नाम मोन पड़ैत अछि जकर सभ पात्रक नामो धरि लोककेँ मोन रहल होइ। तेसर बात, ई कुमार अंशुमाली नामक एकटा लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार हिन्दीमे छथि-से एखनहुँ जीबिते छथि। तेना मे कुमार अंशुमानसँ अंशुमालीक तादात्म्य स्थापित करब की अहाँक एकटा आरोपित कुतर्क नहि थिक?

मोहन भारद्वाज– हमरा लगैत अछि जे यदि अहाँ हमर उत्तरकेँ ध्यानसँ सुनने रहितहुँ त' ई सभ प्रश्न नहि उठैत। हम एतबे कहलियैक अछि जे एक व्यक्तिकेँ ओ पुरुष हो वा नारी हीरो बनेबाक जे परिपाटी मैथिली उपन्यासमे रहलैक अछि ताहिसँ ई भिन्न उपन्यास अछि। एहिमे एक व्यक्ति नहि, पूरा समुदाय अछि। हम इहो कहलियैक अछि जे उपन्यासक संरचनाक प्रसंगमे एहि तरहक परिकल्पना साकेतानन्दक इच्छा अवश्य छनि,

मुदा से ओ क' नहि सकलाह अछि। ककरो कोनो वस्तुक इच्छा होइ आ तकरा ओ नहि क' सकय तेँ की इच्छाक महत्व समाप्त भ' जेतैक? मैथिलियेमे नहि प्रायः सभ भाषामे एहन रचनाकार भेलाह अछि जे प्रगतिशील विचारधाराक रचना कर' चाहैत छथि। ई हुनक इच्छा होइत छनि। मुदा रचना जे ओ करैत छथि से प्रगतिशील धाराक नहि होइत अछि। ई हुनक असफलता होइत छनि। असफलता हुनक सीमा छनि। एहिठाम एकटा बात आरो हम स्पष्ट करय चाहब। हमर उद्देश्य एहि उपन्यासक नकारात्मक पक्ष ताकि-ताकि क' उपन्यासकार पर अन्यथा टिप्पणी करब नहि अछि। एहिमे जत'-जे-जतेक नीक हमरा लगैत अछि सेहो कहब हम अपन कर्त्तव्य बुझैत छी। तखन एकर जे सीमा छैक ताहि पर चुप्प रहबो हमरा अनुचित लगैत अछि।

जहाँ धरि एन्टीहीरो शब्दावलीक प्रयोगक बात अछि, हम ओहिठाम स्पष्ट कहलियैक अछि जे एकल नायकत्वक परिकल्पना आ समूह नायकत्वक परिकल्पना दू वस्तु थिक आ सर्वस्वांतमे समूह नायकत्वक परिकल्पना कयल गेल अछि, भने ओकर निर्वाह नहि भ' सकल हो, तेँ ओ महत्वपूर्ण अछि। नवतुरियाक बाद जाहि उपन्यास सभक अहाँ नाम लेलहुँ अछि तकर संरचनामे हमरा ई वस्तु नहि भेटैत अछि। तेँ ओहि सभ उपन्याससँ एकरा फराक बुझैत छी।

कुमार अंशुमाली आ अंशुमान शर्मामे तादात्म्यक भ्रम छैक से हमरा लागल अछि। हम साफ कहलहुँ अछि जे जाहि शब्दावलीमे उपन्यासक समर्पण वाक्य लिखल गेल अछि से दुनू प्रकारक अर्थ दैत अछि। यदि 'उपन्यासक हाकिम' नवहट्टाक अंचलाधिकारी अंशुमान शर्माकेँ मानल जाय, जकर आधार समर्पण-वाक्यमे छैक त' तखन ओ समर्पण उपन्यासकारक व्यक्तिपूजा कहाओत। एहि प्रसंगकेँ यदि छोड़ियो देल जाय तैयो अंशुमान शर्माक प्रति जे उपन्यासकारक कमजोरी छनि से निश्चित रूपसँ हुनकर व्यक्तिनिष्ठता केँ द्योतित करैत अछि। तेँ हम कहलहुँ अछि जे हुनक इच्छा लोकवादी उपन्यास बनेबाक छनि, मुदा हुनक निष्ठा प्रकट होइत अछि व्यक्तिवादक प्रति।

अशोक– अहाँ घटनाक विस्तारसँ वर्णनकेँ यथार्थक उपस्थापन लेल जरूरी मानैत रहलियैक अछि। साकेतानन्द सेहो बाढ़ि आ बान्ह आ बरखाक घटना सम्बन्धी वर्णन विस्तारसँ केलनि अछि। तखन हुनक वर्णनसँ यथार्थ कोना नहि उपस्थापित होइत अछि?

मोहन भारद्वाज– घटनाक यथार्थ उपस्थापन लेल विस्तारमे जायब आवश्यक होइत छैक ई बात जहि प्रसंगमे हम कहने छी तकर अभिप्राय दोसर अछि। यथार्थक अर्थ ई नहि होइत छैक जे भावावेशमे, झोंकमे स्थितिक वर्णन कयल जाय। स्थितिक वैह वर्णन यथार्थ हेतैक जाहिमे ओकर सांगोपांगकेँ, वाह्य ओ अन्तरकेँ, सम्यक रूपसँ राखल जेतैक। जँ से नहि रहय आ एक दिशामे भगैत चल जाइ त' ओहिसँ यथार्थक पता नहि चलैत छैक।

दोसर बात एहिठाम ई अछि जे साहित्यमे यथार्थ कियैक आ कोना आवश्यक छैक। हिन्दीक प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह लिखने छथि जे यथार्थ नून थिक। ओकर प्रयोग ओतबे कयल जाय जाहिसँ वर्णन ने त' अनोन लागय आ ने नोनछराह। एकर अतिरिक्त, प्रश्न ईहो अछि जे यथार्थ की थिक? हम अपन बातकेँ स्पष्ट करबाक लेल एकटा प्रश्ने कर' चाहब। आरक्षणक यथार्थकेँ ल' क' मंत्रेश्वर झा 'गुमटी' लिखलनि आ रमेश 'जनउ'। आरक्षणक यथार्थ कोनमे आयल छैक? घटनाक यथार्थ सेहो यथार्थ होइत छैक, मुदा घटनाक प्रभावक यथार्थ पर यदि ओ थाप मारय तखन। साकेतानन्दक एहि पोथीमे जे यथार्थ आयल अछि ओ यथास्थितिक वर्णन धरि सीमित अछि आ सेहो एकदम फिल्मी स्टाइलमे। अहाँ मोन पाड़ियौ जे बाढ़िमे दहाइत लोकक वर्णनकालमे बरखा सेहो होइत छैक। बरखा कत' होइत छैक आ कखन छूटि जाइत छैक से ध्यान देबाक वस्तु थिक। लालझाक मायक दाह संस्कार बेरमे पानि छूटि जाइत अछि आ ककरो डुबबाक वर्णन करबाक बेरमे पानि पड़' लगैत अछि। एतबे नहि, कोसी परिसरक यथार्थ अछि ओहिठामक संस्कृति। ओहिठामक मिथक। दार्शनिक मुद्रामे गप करब मिथिलाक लोकक यथार्थ अछि। मुदा, असमयमे शहनाइ बजायब यथार्थ हैत? रन्नू सरदार आ जीवन-मरणक प्रश्नक दार्शनिक विवेचन डुबैत-मरैत कालक यथार्थ नहि भ' सकैत अछि। एहि

प्रकारक अनेक उदाहरण ई प्रकट करैत अछि जे उपन्यासकार जे उपन्यासक कथा बुनलनि अछि ताहिमे अनेक ठाम उचला रहि गेलनि अछि। ओ केवल देखबेमे खराब नहि लगैत छैक, उपन्यासक कायाकेँ कमजोरो करैत छैक।

उपन्यासक यथार्थक प्रसंग एक बात आरो। बाढ़ि 1984 मे आयल, पोथी आयल 2003मे। टटका उपन्यासक रूपमे। तखन एहिमे जे बाढ़ि-वर्णनक यथार्थ अछि से स्मरणात्मक होयत अथवा संस्मरणात्मक। की अहाँकेँ नहि लगैत अछि जे पानिक बाढ़ि त' चलि गेल, मुदा भावुकताक बाढ़ि रहिये गेल! कोन बेसी विघटनकारी से कहब कठिन अछि।

रमेश– भाइ, अहाँ शिल्प आ शैली पर विस्तारसँ गप्प कयल अछि। आब एहि उपन्यासक भाषाक प्रसंग गप्प हमरा जरूरी बुझना जा रहल अछि। एक त' उपन्यासमे प्रयुक्त वर्त्तनी मिञ्झर-साँझर अछि। लोक जीवनक बर्तनी आ उपन्यासकारक अपन पारम्परिक वर्त्तनी दूनू आयल अछि। मैथिल ब्राह्मणक टोन आ मुसलमानी टोन दुनू आयल अछि। उपन्यासक टिप्पणीमे प्रयुक्त क्लिष्ट शब्दावली आ पात्रक कथोपकथनमे प्रयुक्त शब्दावलीमे संगतिक अभाव अछि। एहना स्थितिमे एहि उपन्यासक भाषा, वर्त्तनी, शब्दावली आदिक प्रति अहाँक केहन धारणा बनैत अछि? मैथिली उपन्यासक लोक-भाषाक परम्पराकेँ ई उपन्यास आगू बढ़बैत अछि वा यथास्थिति छोड़ि दैत अछि? कोसी क्षेत्रक अपन विशेष प्रकारक टोन ठाम-ठीम आबियो क' सम्पूर्ण रूपेँ नहि आयल अछि। आ मिथिला-मिहिर द्वारा स्थापित पारम्परिक वर्त्तनीक मोह उपन्यासकार त्यागि नहि सकल छथि। एहन गड्डमड्ड सन परिस्थितिकेँ पाठक कोना स्वीकार करत आ अहाँ कोन रूपमे आलोचकीय व्याख्या करब?

मोहन भारद्वाज– भाषाक प्रसंग एहि उपन्यासक स्थिति वस्तुत: दयनीय अछि। भाषाक काज की छैक? संवाद अथवा सम्बोधन। कहल गेल अछि जे साहित्य सम्बोधन होइत अछि। कोनो क्षेत्र विशेष, समाज विशेष अथवा वृहत्तर परिप्रेक्ष्यमे सम्पूर्ण मानव जातिकेँ रचनाकार सम्बोधित करैत अछि। ई उपन्यास ककरा सम्बोधित अछि? साकेतानन्द नवहट्टा परिसरक लोककेँ पाठकक रूपमे लक्ष्य बनबैत छथि अथवा पटना, दिल्ली आ विलायतक लोककेँ। यदि नवहट्टा परिसरक लोककेँ ओ सम्बोधित करैत

छथि, तखन ओहिठामक लोक द्वारा बाजल जाइत अंग्रेजी शब्दक टूटल रूपक सही रूप ब्रैकेटमे लिखबाक की प्रयोजन? बान्हक प्रसंगमे पचहत्तरि अथवा एकासी शब्दक प्रयोगसँ ओहिठामक लोककेँ तटबन्धक पचहत्तरि किलोमीटरक बोध नहि हेतैक? तखन ओकर व्याख्या ब्रैकेटमे कियैक लिखल गेल अछि? उपन्यास ओहि परिसरक बाहरक लोककेँ सम्बोधित अछि, तेँ धेमुड़ा नदी वस्तुत: धर्मदो नदी थिक से ब्रैकेटमे कहिक' हमरा बुझाओल गेल अछि। शिल्प आ भाषाक ई रूप उपन्यासकेँ सहज आ स्वाभाविक बनेबाक स्थानपर घोर कृत्रिम बना देलक अछि। यदि ई अनुवादक पोथी रहैत त' कदाचित ई पद्धति चलनसारि भ' सकैत छल जेना कोशी प्रांगणक चिट्ठीमे मणिपद्म केलनि अछि। दोसर बात, एक दिस स्थानीय वाग्धाराक आग्रह आ दोसर दिस 'तेन किम' तथा 'अतिस्वन वेग' सदृश शब्दक व्यवहार-एकरा की कहबैक? भाषाक झालमुरही, सैह ने?

आश्चर्य इहो होइत अछि जे जाहिठामक लोक एन.टी. रामाराव पर गप्प करैत अछि, अमेरिका द्वारा देल गेल रिलीफ नहि खेबाक चाही से बुझैत अछि से पोलिटिक्स आ पब्लिक शब्दक उच्चारण कर' नहि जनैत अछि। आजुक समयमे, एकैसम शताब्दीमे, गामक जनता सेहो अंग्रेजीक बहुत शब्दावलीसँ परिचित अछि आ ओकर प्रयोगो करैत अछि। उपन्यासकेँ खाँटी ग्रामीण परिवेशक झुल्ल पहिरेबाक लेल ई काज कयल गेल अछि। एहिसँ उपन्यासक सम्प्रेषणशीलतामे सुविधा नहि, बाधा होइत छैक।

उपन्यासक शिल्प आ भाषाक प्रसंग एकटा बात पर आरो ध्यान जाइत अछि। समुदायकेँ जातीय पृष्ठभूमिमे देखबाक कारणे उपन्यासकारकेँ ई आवश्यक लगलनि अछि जे हिन्दू, मुसलमान, हिन्दुओमे सभ जातिक प्रतिनिधित्व रहय। तकरा मुखर करबाक लेल सभजातिक लोक चाहक दोकान पर अथवा बाढ़िक विनाशलीलाक बेरमे एकट्ठा होइत अछि आ अपन-अपन बात रखैत अछि। गाममे विभिन्न जातिक लोक रहय आ ओ एकत्र भ' क' गप्प करय ई अस्वाभाविक नहि अछि। मुदा ई अस्वाभाविक अछि जे एकटा हिन्दू बाजल त' तकरा बाद एकटा मुसलमानक डायलाग देनाइ आवश्यक भ' जाय। उपन्यासमे जातीय अथवा धार्मिक एकता देखेबाक लेल, जकरा आजुक राजनीतिक शब्दावलीमे सामुदायिक एकता

कहै छैक तकरा प्रदर्शित करबाक लेल कृत्रिम मुद्रा अपनाओल जाय ई कठाइन लगैत अछि।

अहाँ भाषा और वर्त्तनीक प्रसंग बात उठौलहुँ अछि। मैथिल समाजमे कतेक स्तर छैक तकर प्रमाण ओहिठामक भाषा दैत अछि। अपने कहल, अहाँ कहलहुँ, तों कहलह, तों कहलैँ सनक शब्दावलीक प्रयोगसँ भाषेक स्तरीयता नहि, समाजोक स्तरीयता संकेतित होइत अछि। ई स्तरीयता जखन जातीय परिवेशमे देखार होइत अछि तखन ब्राह्मण अथवा सवर्ण लेल अपने आ अहाँ तथा अवर्णक लेल तों शब्दक प्रयोग अनिवार्य जकाँ भ' जाइत अछि। झलबा नाम भने हो, मुदा ओ ब्राह्मण छथि तेँ हुनका लेल आदरसूचक क्रियापदक प्रयोग सांस्कारिक विवशता थिक। तहिना आनो-आनो प्रसंगमे भाषाक प्रयोगसँ वर्णभेदक सूचना भेटैत अछि। साकेतानन्द अपन उपन्यासमे वर्णभेद के ल' क' चललाह अछि। ओहिसँ उपर उठबाक कोनो इच्छा आ प्रयास कतहु दृष्टिगत नहि होइत अछि।

अशोक– भाइ, एकटा बात जे एहि उपन्याससँ उभरैत अछि से गामक युवकलोकनिक साहस तथा पीड़ितक सहायता करबाक भावना थिक जखन कि सामान्यत: ओहि युवक सभकेँ अबंड कहल जाइत अछि। हम विशेष रूपेँ लम्बालाठी, कल्पुआ आ सिद्दीकक प्रसंग ल' रहल छी। ओ सभ जेना झलबा झा आ हुनकर पुतहुक जान बचबैत अछि, से पढ़ि क' लगैत अछि जे समाज जकरा आवारा, अबंड कहैत अछि से कतेक संवेदनशील होइये। की संवेदनशीलता एहने लोकसभमे बचल छै?

बहुतो भाषाक उपन्यास-कथा सभमे आवारा, अवंड चरित्रकेँ अत्यन्त संवेदनशील देखाक' ओकरा क्रान्तिकारी धरि बनाओल गेल अछि। ओसभ एहन सामाजिक काजक' बैसैत अछि जे आन नहि क' पबैये। की एहि चरित्र सभकेँ सर्वहाराक क्रान्तिकारितासँ जोड़ि क' देखल जा सकैये?

मोहन भारद्वाज– अहाँक ई प्रश्न दू विन्दु पर केन्द्रित अछि-संवेदनशीलता आ क्रान्तिकारिता। एहि प्रश्नक अन्तर्ध्वनि ई अछि जे समाज दू वर्गमे बँटल अछि-अभिजात अथवा कुलीन वर्ग तथा सर्वहारा अथवा जन-मजूर सभक आम लोकक वर्ग। वित्तहीन आ साधनहीन लोक सामान्यत: पराश्रयी होयबाक लेल बाध्य रहैत अछि। तेँ आश्रयदाताक

नजरिमे ओ अथवा ओकर पूरा परिवार आ समुदाय हेय होइत अछि। ओकर धिया-पूताक हड़ाशंखनी आ अबंड नाम पड़ैत छैक। अहाँ कहैत छी जे उपन्यासमे जे एहन अबंड पात्र अछि अर्थात् लम्बालाठी, कल्पुआ आ सिद्दीक से बेसी संवेदनशील अछि। ओकरामे मनुष्यता बाँचल छैक। एहिठाम पहिल बात हम वैह कहब जे कहि चुकल छी। बाढ़िक समयमे डुबैत-भसैत लोककेँ बचायब सामान्य आचरण नहि छियैक।

एहि प्रसंगमे कल्पुआ आ सिद्दीकबा वस्तुत: संवेदनशील अछि वा नहि से विचारणीय नहि अछि। रचनाकार ओकरा सभकेँ संवेदनशील पात्रक रूपमे पेश करबाक प्रयास केलनि अछि। तेँ कनेक काल लेल ओकरा संवेदनशील मानि लैत छी। तखन विचारबाक मुख्य बात ई भ' जाइत अछि जे की एहन संवेदनशील पात्रक प्रति रचनाकार संवेदनशील छथि? दोसर शब्दमे पूछल जा सकैत अछि जे की उपन्यासकारक सहृदयता समाजक आम लोकक प्रति छनि? हमरा जनैत उपन्यास से नहि कहैत अछि। पहिल बात त' ई जे प्रस्तुत उपन्यास स्वानुभूतिमूलक अछि, सहानुभूतिपरक नहि। साहित्यमे बेसी महत्वपूर्ण सहृदयता होइत छैक। तेँ एहि कृतिकेँ हम उपन्याससँ बेसी अखबारक आफ वीट स्टोरी कहलहुँ अछि।

दोसर बात, एहि उपन्यासमे समाजक तथाकथित शिष्ट-विशिष्ट व्यक्तिक प्रति रचनाकारक पक्षपात एकदम्मे देखार अछि। उपन्यासक शिल्प आ भाषा तथा घटनाक्रमक ट्रीटमेंट एहि तथ्यकेँ सोझाँ आनिये दैत अछि जे उपन्यास अभिजातवर्गीय खरिहानक वस्तु अछि। विस्तारभय सँ हम बेसी उदाहरण नहि द' मात्र एकटा बात कहब। बान्ह टुटलापर बाढ़ि आयल। लोक मरल। लाल झाक माय मरलथिन त' हुनका कोना जरायल जाय ताहि पर लेखक पोथीक पाँच-छौ पृष्ठ खर्च केलनि अछि। अपन पात्रक फौजकेँ लकड़ीक ब्योंत करबाक लेल झोंकि देलनि अछि, मुदा जखन गनेशी मरलाह त' ककरो पतो नहि चललै। बीस-बाइस घंटाक बाद हुनक मृत्युक सूचनामात्र भेटैत अछि। ई अन्तर कियैक छैक? एहि लेल जे लाल झा एखनहुँ बारह बीघा खेतक मालिक छथि। एहि लेल जे लाल झाक माय सम्भ्रान्त आ प्रतिष्ठित महिला छथिन। ई विशेषण हम नहि लगा रहल छी, उपन्यासकारे ओहि बूढ़िक परिचय एहि विशेषणक संग देलनि अछि। पटना वीमेन्स

कॉलेजमे पढ़ल डाक्टर पुत्री वीणा आ हुनकर आदरणीय पति अंशुमान शर्माक प्रति अतिरिक्त कमजोरीक बात त' कहबे केलहुँ अछि। एहेन अनेक प्रसंग अछि जे वास्तविकताकेँ सोझाँ आनि दैत अछि।

एहिठाम एकटा बात आरो कहब। उपन्यासकार बाढ़ि पीड़ितक स्थिति आ समस्या धरि नहि जा क' पहिनहि बस्ता बान्हि लेलनि अछि से अकारण नहि। वस्तुत: ओ खतरनाक मोहल्ला अछि।

जहाँ धरि शोषित-दलित लोकक अभिजनवर्गक लोकसँ बेसी संवेदनशील होयबाक तथा ओहि संवेदनशीलताक परिपाक क्रान्तिकारितामे होयबाक प्रश्न अछि त' सैद्धान्तिक रूपमे अहाँक एहि मान्यतासँ हम सहमत छी। ई होइत छैक आ भेलैक अछि। किन्तु एहि उपन्यासक प्रसंगमे ने त' तथाकथित अबंड आ बहकल लोकक संवेदनशील स्वभावक वर्णन भेल अछि आ ने ओकर क्रान्तिकारिताक। राजा सभक घुरदौड़ क्रान्तिकारिता नहि होइत छल। नेता सभक मादे अथवा ग्रामीण आ शहरी राजनीति पर चंडाल चौकड़ीमे गप्प करब क्रान्तिकारिता नहि होइत छैक।

अशोक– भाइ, एहि उपन्यासमे जे चरित्र सभ आयल अछि झलबा झा, निसार, मुखिया, लाल आदि जे पहिने आपसमे लड़ैत-झगड़ैत एक संग रहैत छल। एक दोसरा केँ नोकसानो करैत छल से विपत्ति पड़ला पर एक भ' गेल। विपत्तिमे एक होयब त' चिंरन्तन सत्य थिक। मुदा जाहि हिसाबेँ ई सभ बाढ़िकेँ मनुक्खक किरदानी मानैत अछि, ओहिमे व्यवस्थाक, सरकारक असफलता, निर्ममता देखैत अछि आ फलस्वरूप क्षोभ, आक्रोश उभरैत छैक आ खैरातक बदला मुआबजा मंगैत अछि से की मिथिलाक लोकक तथाकथित खैरातजीवी मानसिकतासँ फराक नहि लगैत अछि अहाँके, एखन धरि त' मिथिलाक बाढ़ि पीड़ित लोककेँ खैरातजीवी कहि उपहास कयल जाइत रहल अछि।

मोहन भारद्वाज– मिथिलाक लोक खैरातजीवी होइत अछि ई धारणा गलत अछि। मिथिलाक लोक गरीब होइत अछि। दाही-रौदीक विपदामे जीवनयापनक समस्या गंभीर होइत छैक से सत्य। पुरहितिया ब्राह्मणमे दान लेबाक प्रवृत्ति रहैत छैक ताहूमे सन्देह नहि। एहि प्रवृत्तिक जन्म कोन सामाजिक परिवेशमे होइत छैक से कहब बहुत विस्तारमे जायब होयत।

तखन एते धरि निश्चित जे मिथिलामे एहि प्रवृत्तिक विकासमे राजदरभंगाक महनीय अवदान छैक। तथापि मोन पाड़बाक ई थिक जे एहि सभबातक अछैत ग्रियर्सन मिथिलाक लोकक विशेषताक सूचीमे ओकर आत्माभिमानकेँ मुख्य स्थान देलनि अछि। तात्पर्य ई जे गरीबक उपहास करबाक सामन्ती संस्कारक देन थिक मिथिलाक लोककेँ खैरातजीवी कहब। कोशी प्रांगणक चिट्ठीमे विभूतिबाबू कोसीक बाढ़िमे डुबैत एकटा पंडितक खैरात नहि लेबाक जे वर्णन केलनि अछि से काल्पनिक नहि अछि। तेँ मिथिलाक लोकक सम्बन्धमे एहि निन्दन-प्रस्तावक हम विरोध करैत छी।

जत' धरि सर्वस्वांतमे खैरात लेबाक-नहि लेबाक आ मुआबजा मंगबाक प्रश्न अछि, उपन्यासकार कनफ्यूज्ड छथि अथवा बहुत चलाक छथि। खैरात ली वा नहि, उपन्यास कहैत अछि-ली। ककर देल खैरात ली? उपन्यास कहैत अछि साधु-सन्यासीक देल। तेँ रामकृष्ण मिशनक खैरात लेल जाइत अछि। बहस बढ़ैत अछि आ तखन औक्सफेम तथा श्रमभारतीक खैरात नहि लेबाक निर्णय होइत अछि। एहि निर्णयक कारण ई अछि जे ओहि संस्था सभकेँ विदेशी सहायता भेटैत छैक। रामकृष्ण मिशनक गहूम आ अमरिकी गहूममे अन्तरक बात कहल जाइत अछि। फेर तुरत्ते इहो कहल जाइत अछि कि जे लेबाक हैत से सरकारेसँ लेब। अर्थात् कोनो संस्थाक खैरात नहि लेब। कोर्टमे केस करब। लड़ब, मुआबजा लेब।

उपन्यासक एकटा छोट-छीन अध्यायमे एहन गम्भीर आ विचारोत्तेजक बात सभकेँ जाहि चलताउ ढंगसँ राखल गेल अछि से आश्चर्यजनक आ दुखद अछि। कप्पार पिटबाक मोन त' तखन होइत छैक जखन एहन ज्वलंत आ महत्वपूर्ण विषयवला अध्यायक अन्त हँसी-ठट्ठामे होइत अछि। ई कतेक भंयकर बात अछि तकर अनुमान पाठक क' सकैत छथि।

एही अध्यायमे इहो कहल गेल अछि जे हरियर कंच धान, गाछी विरछी, कुहकैत कोइलीक स्वर, लालक माय, कनियाक ननकिरबी, निसारक बूढ़ा आ गनेसी-एहि सभक क्षतिपूर्त्ति नहि भ' सकैत अछि। मतलब ई जे मुआबजाक विरोध सेहो कयल गेल अछि। सभ विकल्पक विरोध-समर्थन केवल रामकृष्ण मिशनक खैरातक; से केवल एहि लेल जे ओ खैरात नहि, रामकृष्ण स्वामीक प्रसाद छी। एहि तरहेँ रचनाकार नाक-कान छुबैत पहुँचि जाइत छथि धर्मक पण्डा लग। हुनक गन्तव्य स्पष्ट भ' जाइत अछि।

अशोक- भाइ, हमरा लगैत अछि जे उपन्यासक लेखक साकेतानन्द इलाकाक पूर्व मंत्री चौधरीजीक माध्यमसँ जे धारणा प्रकट केलनि अछि जे लोकक स्मरणशक्ति कमजोर होइत छैक, ओ सभ किछु बिसरि जायत आ रिलीफ भेटलापर सभ केलहा माफ क' देत से केहेन लगैत अछि अहाँके? की ई एक एहन धारणा नहि थिक जे व्यवस्थाक पक्षधरलोकनिकेँ शक्ति दैत रहलनि अछि? की व्यवस्थाक एहने सम्पोषकलोकनिक सोच-विचारसँ देशक मुख्यधाराक निर्माण होइत अछि?

मोहन भारद्वाज- साकेतानन्दक सर्वस्वांत उपन्यासक अन्त मनोहर चौधरीक एहि धारणा पर होइत अछि जे कोसिकन्हाक लोकमे बिसरबाक अद्‌भुत क्षमता छैक। कनेक दान कि खैरात भेटि गेला पर केहनो अपराध केँ ओ बिसरि जाइत अछि। ई तथ्य उपन्यासमे पहिनहु आयल अछि। कतेक ठाम। एकर आवृत्ति करैत उपन्यासकार एही धारणात्मक तथ्य पर उपन्यासक अन्त करैत छथि। प्रकारान्तरसँ ओ कहैत छथि जे मिथिलाक लोक निष्क्रिय, असमर्थ आ हुनके शब्दमे कही त' सर्द होइत अछि। हमरा जनैत इहो बात सही नहि अछि। मिथिलाक लोक गरीब, असहाय, आ शन्तिप्रिय होइतो संघर्षशील नहि होइत अछि से कहब उचित नहि होयत। अन्यायक आ अनुचितक एकसँ एक प्रतिरोध आ प्रतिकारक घटना अथवा उदाहरण मिथिलांचलमे प्रसिद्ध अछि। किन्तु एक आँखिसँ देखयबाला साहित्यकार बन्धु समाजक एहि कोटिक लोककेँ देखबे नहि केलनि अछि। मिथिलाक ब्राह्मणलोकनिकेँ पेटपोस्सा प्रवृत्तिक कहल गेल अछि, मुदा ओहू जातिमे एकसँ एक संघर्षशील चेतनाक लोक भेल छथि। राज्यकेँ अथवा राजपाटकेँ ठोकर मारिक' जीबाक बाट देखौनिहार मैथिलजनक कमी नहि अछि। प्रयोजन अछि एहन मेहनतिया लोककेँ देखबाक। झारखण्डक विरसा मुण्डा अमर भ' गेला, मुदा पूर्णियाक सैनी मुसहरक कियो नाम लेब' बला नहि छै। मनोहर चौधरी अथवा हुनका माध्यमसँ साकेतानन्द मिथिलाक लोककेँ अकर्मण्य, नपुंसक आ लतखोर कहैत छथि त' एकरा हुनक व्यक्तिगत धारणा कहि क' नहि टारल जा सकैत अछि। वस्तुतः ई मिथिला आ ओहि जनपदक अपमान थिक। ई अपमान मिथिलाकेँ सभ दिन कतिया क' रखबाक जाहि षड्यंत्रक परिणाम थिक ताहिमे की साकेतानन्द शामिल

छथि? कोनो समाजमे नकारात्मक आ सकारात्मक बात होइतहि छैक। केवल नकारात्मक पक्षकेँ देखब प्रगतिशीलता त' एकदम्मे नहि, यथास्थितिक समर्थनक डेग थिक।

एहि मानसिकता, एहि जातीय स्वभावकेँ ल' क' देशक मुख्यधाराक संग चलबाक बात सेहो कयल गेल अछि। एकर की अर्थ? मुख्यधारा माने की? स्पष्ट अछि जे मुख्यधाराक अर्थ विकासधारा नहि थिक। वर्त्तमान राजनीतिमे मुख्यधारा कहि क' हिन्दूधाराक परिचय देल जा रहलैक अछि। की साकेतानन्दक संकेत ओम्हरे छनि?

अजित– उपन्यासक कथा पूर्वी तटबन्धक कतबहिमे बसल गाम सभक अछि। ई ओहि पारक कथा अछि जे बाढ़िसँ अभिशप्त अछि जखन कि एहि पारक खेरहा नदारद अछि। एहि पारक लोक बान्हक मादे की सोचैत अछि तकर कोनो उदाहरण नहि अछि एहिमे। ई त' एकतरफा विचार भेलैक ने?

खैरात आ मुआवजामे अन्तर होइतो कोनो ततेक अन्तर नहि होइत छैक। भीष्म साहनीक एकटा व्यंग्य नाटक छनि-मुआवजा। ओहिमे देखाओल गेलैक अछि जे अशेष नुकसान अछैतो लोक अल्प मुआवजा राशिक लेल जान गमौने रहैत अछि। की ठीक तहिना सर्वस्वांतक अन्त नहि लगैये?

एखन सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमे, मैथिली साहित्यमे, एत' धरि जे रमेशक पोथी सभक नाम पोजिटिभ सेन्समे राखल जा रहलैक अछि तखन सर्वस्वांतक शीर्षक निगेटिव नहि छैक? सर्वस्वांत माने भेल सभ किछु समाप्त माने 'निगेटिव'। एहि निगेटिव सोचक माने की?

मोहन भारद्वाज– अहाँक प्रश्न बहुत उपयुक्त अछि। कोसीक बान्ह आ बाढ़िसँ जुड़ल स्थिति आ समस्या अनेक अछि। बान्हसँ विस्थापित भेल लोकक समस्या, बान्हक पश्चिमी आ पूर्वी तटबन्धक समस्या, बान्हक दुनू कातक गामक समस्या। साकेतानन्द एहि सभ स्थितिमे सँ मात्र एकटाक चयन केलनि अछि से थिक पूर्वी तटबन्धक बाहर बसल गाम नवहट्टाक 5 सितम्बर 1984केँ बान्ह टुटलाक कारणे सर्वस्वांत होयब। जाहि बिन्दु पर उपन्यासमे किछु कहले नहि गेल अछि अर्थात् जे उपन्यासक विषयवस्तु अछिये नहि ताहि प्रसंग किछु कहब उपन्याससँ बाहरक गप्प कहि क'

अनुचित बूझल जायत। एहिमे सन्देह नहि जे बाढ़िक संग पुनर्वासक समस्या पर गप्प नहि करब भयंकर आश्चर्यक विषय थिक। मुदा जेना हम कहि चुकल छी जे उपन्यासकार अपन गामक बाढ़िमे भसिया जेबाक घटनाकेँ अपन दृष्टिये अमर करबाक मानसिकतासँ ई उपन्यास लिखलनि अछि। ई उपन्यास पढ़लेसँ स्पष्ट होइत अछि। मैथिलीमे हमर गाम कहिक' कथा-कविता अबिते रहल अछि। ओही क्रममे एहि कृतिकेँ राखल जाय।

खैरात आ मुआबजा पर साकेतानन्द कतेक कनफ्यूज्ड छथि से हम कहि चुकल छी। ई कोनो आश्चर्यनजक बात नहि थिक जे भीष्म साहनी मुआबजा लेबाक निर्णय पर व्यंग्य करैत छथि आ साकेतानन्द एहि आचरणक माध्यमसँ बान्ह आ बाढ़िक समस्याक समाधाने नहि देखैत छथि, देशक मुख्यधारा मे मिलब सेहो मानैत छथि। वस्तुत: खैरात आ मुआबजामे ओतबे अन्तर अछि जतेक दान आ दक्षिणामे। एक्के गोत्रक ई दुनू राक्षस मनुष्यता विरोधी अछि। जहर अछि। ई बात भिन्न थिक जे कखनहु जहरोक उपयोग दबाइ रूपमे कयल जाय। ओकरा पयबाक इच्छा सहज नहि कहल जा सकैत अछि।

भीष्म साहनी आ साकेतानन्दक दृष्टिकोणमे तुलना करबाक धृष्टता हम नहि करब।

हमरा आश्चर्य अछि अहाँक एहि प्रश्न पर। उपन्यासकारक सम्पूर्ण दृष्टिये जखन नकारात्मक छनि तखन नाम नकारात्मक भेलनि त' कोन पैघ बात। एकटा बात एहिठाम मोन पड़ैत अछि। भूण्डलीकरणक प्रवक्तालोकनि अपन कुतर्ककेँ धकियबैत एहिठाम धरि पहुँचा देलनि अछि जे संसारमे विचारधाराक अन्त भ' रहल अछि अथवा भ' गेल अछि। साकेतानन्द यदि ओही लाइनमे ठाढ़ भ' अपन उपन्यासक नाम सर्वस्वांत रखैत छथि त' से उचिते। किन्तु आब एकर आवश्यकता बेसी गम्भीरतासँ अनुभव कयल जेबाक चाही जे एहि सभ विषय वस्तुकेँ ल' क' सकारात्मक तथा चेतनासम्पन्न उपन्यास लिखल जाय।

अशोक– भाइ, अहाँके नहि लगैत अछि जे बान्ह आ बाढ़िक मामिलामे ठीकेदार, अभियन्ता आ नेताक त्रिगुट सैह मुख्यधारामे अछि। ओकरा जनताक पीड़ासँ कोनो मतलब नहि छैक। की ई बात एहि

उपन्यासमे उभरि क' नहि आयल अछि? एहि सन्दर्भमे हम पूर्व मंत्री चौधरीक बान्ह टुटबाक मामिलामे राज्य सरकारक इंजीनियर-इन-चीफ पर भरोस करबाक विशेष रूपेँ उल्लेख कर' चाहब जखन कि नेताकेँ जनताक बातपर भरोस करबाक चाहैत छल।

मोहन भारद्वाज– अहाँक एहि प्रश्नक जे स्वरूप अछि से बान्ह आ बाढ़िपर देश-विदेशमे एखन जे विमर्श भ' रहल अछि तकर देन थिक। सम्पूर्ण विश्वमे पानिक प्राकृतिक बहाव के रोकि क' भूगोलमे परिवर्त्तन आनल जा रहल अछि। एक दिस नदीक बाढ़िकेँ बान्हक माध्यमसँ रोकबाक योजना आ दोसर दिस ओकर विरोध। दूनू काज अखिल भारतीय अथवा विश्व स्तरपर भ' रहल अछि। तकनीकी दृष्टिकोणसँ की सही आ की गलत से कहबाक स्थितिमे हम नहि छी। प्रकृतिक संग विज्ञानक लड़ाइ बहुत दिनसँ चलि रहल अछि। एहि मुद्दाकेँ ताहि रूपमे देखब उचित थिक। सैद्धान्तिक स्तरपर बान्ह बनेबाक योजना सही थिक वा नहि, यदि योजना सही अछि त' ओकर कार्यान्वयनमे अथवा परवर्ती कार्यक्रम मे त्रुटिक कारणे योजने केँ गलत कहब उचित नहि होयत। अहाँ जे प्रश्न केलहुँ अछि ताहिसँ ध्वनित ई होइत अछि जे बान्हक योजना आ तकर परवर्त्ती कार्यक्रमक कार्यान्वियनमे गडबडी होइत अछि आ से नेता, इंजीनियर अथवा प्रशासक आ ठीकेदारक त्रिगुट करैत अछि। भारतक एखन जे राजनीतिक स्थिति अछि ताहिमे जे आरोप-प्रत्यारोप चलि रहल अछि सेहो एही मान्यता दिस बेसी झुकल अछि। एहि उपन्यासमे बान्ह बनेबाक गलतीकेँ खुलिक' स्वीकारल गेल अछि। संगहि गलतीकेँ उघैत रहबाक विवशताक सेहो उल्लेख भेल अछि। मुख्य प्रश्न यैह अछि। यदि बान्ह बनायब गलती छल त' ओकर विकल्प ताकल जाय आ तकरा कार्यान्वित कयल जाय। महाराष्ट्रमे कोल्हापुर जिलाक उचांगी बान्हक ऊँचाइकेँ जनान्दोलनक दबाबमे सरकार कमक' देलक अछि। एतबे नहि, एकटा बान्हक स्थान पर छोट-छोट बान्ह बनेबाक प्रस्ताव पर सेहो गम्भीरतासँ विचार भ' रहल अछि। एहि प्रकारक कोनो विकल्पक अथवा जनान्दोलनक कोनो संकेत एहि उपन्यासमे

नहि भेटैत अछि। त्रिगुटमे जे महत्वपूर्ण घटक छथि से मनोहर चौधरी बनिक' बान्ह बनेबाक गलतीकेँ स्वीकारैत छथि। मुदा ततबे धरि। ओ तकरा बादो ओहि बान्हसँ होइत दुर्दशाक निवारणक मादे सोचब आवश्यक नहि बुझैत छथि। एही बिन्दु पर उपन्यासक अन्त करब रचनाकारक एहि निष्कर्षसँ सहमतिक सूचक थिक। ई स्थिति यथास्थितिवादी वा पलायनवादी सोचक परिणाम थिक।

जहाँ धरि बान्हक निर्माण अथवा बान्ह तोड़िक' बाढ़िकेँ गाम धरि पहुँचबाक घटनाक बात अछि आ ताहि सम्बन्धमे इंजीनियर इनचीफ मिस्टर मित्राक अभिमत अछि से सभटा राजनीतिक त्रिगुटीय गठजोड़क देन थिक। हम पहिने कहि चुकल छी जे अनेक आवश्यक प्रसंग दिस उपन्यासकार अपन एहि कृतिमे प्रसंगवश ध्यान ल' जाइत छथि, किन्तु से घाव पर नोने छिटबाक काज करैत अछि।

अशोक–भाइ, एहि उपन्यासक माध्यमसँ फेर ई तथ्य राखल गेल अछि जे नेपालमे बराजसँ पानि छोड़बाक कारणे बाढ़ि आयल। बिहार सरकारो ई बात कहैत रहल अछि। लोकोक यैह धारणा अछि। की एकर निदान नहि कयल जा सकैत अछि। संगहि एहि तरहक व्यवस्था नहि कयल जा सकैत अछि जे लोककेँ पहिने ई सूचना द' देल जाय जे बराजसँ पानि छोड़ल गेल अछि। बाढ़ि आबि सकैये। अपन व्यवस्था क' लिय'।

मोहन भारद्वाज– आइ कोसीक बाढ़िक प्रसंग ई कहल जाइत अछि जे नेपालमे बराजसँ पानि छोड़लाक कारणे बाढ़ि अबैत अछि आ तखने नवहट्टा सनक गामक दुर्घटना होइत अछि। विचारबाक ई थिक जे की पहिने बाढ़ि नहि अबैत छल। बाढ़ि अर्थात् पानि पृथ्वीक आवश्यक तत्व अछि आ प्राणी मात्र लेल अनिवार्य अछि। समस्या पानि नहि अछि, पानिक अधिकता अछि। पानिक अधिकतो नहि, ओकर उचित उपयोग अछि। ई पृथ्वी प्राकृतिक आ राजनीतिक दुनू स्तर पर विभाजित अछि। प्राकृतिक भूगोलक नक्शा आ राजनीतिक भूगोलक नक्शामे तारतम्य नहि अछि। पानिक अधिकताक उपयोगक समस्याक पाछाँ मूल कारण यैह अछि। गंगा नदी बिहार आ यू.

पी. धरि सीमित नहि अछि। नेपाल, भूटान आ बंगलादेश सेहो ओहिसँ जुड़ल अछि। कहबाक आशय ई जे पानिक उपयोगक समुचित व्यवस्था लेल जे राजनीतिक प्रबन्धन आवश्यक अछि से विभिन्न कारणसँ नहि भ' रहल अछि। यदि आइ कोसी पर बराज भीमनगरमे नहि भारतक भूमि पर पूर्णतः रहैत आ ओकर नियंत्रण सेहो भारतक अधीन रहितय त' स्थिति दोसर रहैत। आइ बराज सँ पानि छुटैत अछि त' तकर सूचना थोड़ बहुत लोककेँ देल जाइत छैक। एकरा आरो व्यापक बनेबाक आवश्यकता छैक। मुदा हम सभ नदी मातृक प्रदेशक लोक छी। हमरा सभक पशु-पक्षी बाढ़िक सूचना दैत अछि से ज्ञान हमर किए लुप्त भ' गेल अछि? प्रश्न ई अछि जे हम सभ पारम्परिक ज्ञान बिसरि रहल छी आ आधुनिक विज्ञानक अवगति भ' नहि रहल अछि। तैं दण्ड भोगब स्वाभाविक अछि। मानल जे अहू स्थितिक लेल दोषी सरकारे अछि। मुदा सरकार पर दबाव देब आ ओकर संग बारगेनिंग करब हमर जनपदीय शक्ति पर निर्भर करैत अछि जकरा राजनीतिक नेतालोकनि खण्ड-पखण्ड क' राखि देने छथि।

अक्टूबर
घर-बाहर, दिसम्बर 2003

卐

संवाद जे नहि भ' सकल

[सन्धान-1 मे कथाकार राजमोहन झा संग संवाद रहय। ओही क्रम मे सन्धान-2 मे प्रभास कुमार चौधरीसँ संवादक योजना छल। कथाकार-उपन्यासकार प्रभास कुमार चौधरीसँ संवाद लेल हुनका एक प्रश्नावली पठौने रहियनि। दिसम्बर 1997 मे गछने रहथि जे जनवरी 1998 मे अवश्य ओकर उत्तर पठा देब। पठा नहि सकल रहथि। प्रतीक्षामे रही जे एहि बेर पटना औता त' अवश्य लेने आंता। मुदा पटना आयल हुनक मृत शरीर। उत्तर नहि आबि सकल। उत्तर नहि द' सकला। एहि अनुत्तरित प्रश्न के हम आब अपना लग राखि क' की करब? प्रभासजी त' उत्तर नहि द' सकला। तैं एहि प्रश्न सभकेँ मैथिलीक पाठक लोकनिकेँ सुनझा रहल छी।]

(1) भाइ, अहाँक उपन्यास, कथा सभ पढ़ि लेलाक बाद कोनो मैथिली पाठककेँ अपन मातृभाषा पर गौरव भ' सकैत छै। पूराक पूरा उपन्यास एक बैसकमे पढबा लेल बाध्य भ' कय अहाँक लेखनीक चुम्बकीय गुण के सेहो जानल जा सकैये। आमसँ ल' कय प्रबुद्ध पाठक धरि के तृप्तिक हेतु अहाँक अनेक कथा/उपन्यास उपलब्ध अछि। पाँच-पाँचटा मोटगर उपन्यास, सयटासँ बेसी कथाक रचना, युवा लेखन संस्थाक आजीवन सचिवक उत्तरदायित्व, अनामा, कथा-दिशा, प्रवासी पत्रिकाक सम्पादन, अपन अनुज रचनाकारकेँ सतत प्रोत्साहन देबाक लेल उद्यत अग्रज-एहि सभ रूपक कार्य मे कोना तालमेल बैसबै छी अहाँ? खास क' कय मिथिलाक एकटा जमीन्दार परिवारक राजसी लोक आ जीवन बीमा निगमक उच्च अधिकारीसँ ई सभ कोना सम्भव भेलैक? कोन उद्दाम भूख, कोन अतृप्ति, अहाँसँ ई सभ करौलक आ एखनहुँ करा रहल अछि?

(2) अहाँक कथा-संग्रह **प्रभासक कथा** जाहि पर अहाँके साहित्य अकादमीसँ पुरस्कार प्राप्त भेल अछि ओहिमे अहाँ किछु आशीष/ शुभकामना/ सम्मति छपने छी। पहिले सम्मति अछि मिथिला मिहिर, कथा अंक 1962 क 'प्रभास कुमार चौधरी माने विरोधाभासक साक्षात उदाहरण। एक दिस राजसी मनोवृत्ति दोसर दिस स्वावलम्बिताक हेतु घनघोर श्रम! पटना विश्वविद्यालयक रंगीन वातावरणमे रहितो फूसि फटकसँ निर्लिप्त। प्रतिभाक एहन धनी जे अल्प समयमे स्वनामधन्य! स्वाध्यायी, स्वयं-सेवक।' ई सम्मति अहाँके अपना केहेन लगैत अछि? एहि सम्बन्धमे कोनो टिप्पणी कर' चाहब?

(3) भाइ, अहाँक व्यक्तित्वमे ई विरोधाभास लेखनमे कोन रूपें सहायक भेल अछि? कोना सधलहुँ एकरा अहाँ जाहिसँ एतेक रास नीक आ श्रेष्ठ कथा, उपन्यास अहाँ मैथिलीमे द' सकलहुँ?

(4) भाइ, **नवघर उठय पुरान घर खसय** अहाँक पहिल कथा संग्रह थिक। ओहि संग्रहक पहिल कथा अछि 'आयल पानि गेल पानि...।' ओहि कथाक नायिका अछि एकटा ट्रेन्ड दाइ गंगा। सभ लोक ओकरा भ्रष्टा बूझैत छै। ओकरा सम्बन्धमे स्वादि-स्वादि गप्प करैत अछि। कथाक अन्तमे गंगा कहैत अछि, 'हम जत' जाइ छी तेरह वर्षसँ तिरपन वर्षक बएसक लोक के भ्रष्टे पबैत छी। हमरा एहन सन लगैत अछि जे संसार आइ स्त्रीगण के माय ओ बहीनिक दर्जा नहि देब' चाहैत अछि। ओ चाहैत अछि जे स्त्रीगण ओकर उपभोगक बस्तु बनल रहए।' लगभग पैंतीस-चालीस वर्ष पूर्व लिखल अहाँक कथाक नायिक गंगा जँ आइ पुनः ओहि गाममे आबय त' की अहाँके लगैये जे ओकरा कोनो परिवर्त्तन लगतैक? एहि अन्तरालमे कोनो नोकरिहारा स्त्रीगणक प्रति लोकक मानसिकतामे कोनो परिवर्त्तन अयलैक अछि? यदि हँ त' केहेन? कोना? यदि नहि त' कियैक नहि?

(5) मिथिलाक जे कस्वानुमा गाम सभ अछि ओहिमे कोन तरहक परिवर्त्तन अहाँके दृष्टिगोचर होइत अछि? सामाजिक-सांस्कृतिक आ आर्थिक रूपसँ कि गाम आगू बढ़ल अछि? खास क' कय देशक स्वतंत्रताक बाद? अहाँ तँ हालहिमे विदेश भ्रमण क' कय वापस अएलहुँ अछि। सम्पूर्ण देश

मे सेहो विभिन्न स्थान पर जयबाक अवसर भेटल अछि अहाँके। मिथिलाक गाम ओ आन ठामक गाममे कोनो अन्तर लगैत अछि अहाँके? मिथिलाक गाम के शेष भागक गामसँ कोना फराक करबैक?

(6) एक क्षेत्रक रूपमे मिथिला देशक अन्य भागसँ सामाजिक आ सांस्कृतिक दृष्टिसँ कोना फराक अछि? मिथिलाक वर्त्तमान के अहाँ कोना परिभाषित करबैक?

(7) भाइ, अहाँक विभिन्न कथामे मिथिलाक ब्राह्मण-सामंतीलोक, निम्नवर्गीय जन-बोनिहार-श्रमिक आ शहरमे रहनिहार मैथिल खासक' कय ब्राह्मण पात्र-चरित्र भेटैत अछि। ई पात्र सभ गुजरात, उड़ीसा, बंगाल, महाराष्ट्रक कोनो गाम, शहरमे रहनिहार ओहि क्षेत्रक लोकसँ कोन रूपें फराक आ विशिष्ट लगैत अछि अहाँके? कहबाक अर्थ जे कोन रूपमे मैथिल लगैत अछि अहाँक पात्र सभ?

(8) भाइ, अपन उपन्यास '**अभिशप्त**' मे अहाँ किछु तथाकथित मैथिल सेवी, समर्थक नेता पर टिप्पणी कयलहुँ अछि? हुनकालोकनिक मानस उघार भेल अछि अहाँक कलमसँ। ओना एहि क्रममे उपन्यासक नायक प्रकाश जे एकटा लेखक छथि हुनको मानसिकता, द्वैध उघार भ' जाइये। मैथिलीसेवी नेता आ मैथिली लेखकक बीच सामंजस्यक अभाव बहुत दिनसँ चलैत आबि रहल छैक। एक दोसरा के बुझबाक, सम्मान करबाक जेना भावने नहि रहि गेलैक अछि। एम्हर ई बात आर तीव्र भ' रहलय। एक दोसरा पर दोषारोपण करबाक, उत्तरदायित्व फेकबाक, एक दोसराक काजक निन्दा करबाक प्रवृत्ति बढ़ि रहलय। की एकर कारण मैथिलीक घर ढनमनायब थिक? एकर मूलमे लक्ष्य विभ्रम, यथार्थक अज्ञानता अथवा प्राप्त सुविधाक उपयोग / उपभोग लेल कटाउझ त' ने थिक? अहाँ त' सामन्ती स्वभाव बुझबाक मर्मज्ञ छी। की सामंजस्य ओ एकतामे सैह स्वभाव त' ने बाधक भ' रहल अछि? की मानैत छी अहाँ? की लगैत अछि अहाँके?

(9) प्रभास भाइ, अहाँ हमरालोकनिक प्रमुख हस्ताक्षर छी। पछिला कतेक बरखसँ मैथिली, कथा-उपन्यास आ ओकर प्रकृति, प्रवृत्ति के एक

कलाकारक रूपमे देखि रहल छी। अहींक 'अभिशप्त' उपन्यासमे नायक प्रकाश अंजलि सिन्हासँ गप्प करैत कहैत छथि, 'नीक कथा कहब आ लिखब जेना भूतक गप्प भ' गेल हो। एकटा पैघ महत्त्वपूर्ण वक्तव्यक संग एकटा फिसड्डी रचना। वक्तव्य सर्वत्र भेटि रहल अछि रचना कतहु नहि। जेना वक्तव्य आ नारावाजी साहित्य बनि गेल हो।' चारूकात जे लिखल जा रहल छल तेकरा पढ़ला पर प्रकाशक ई. वक्तव्य रहय। की प्रकाशक वक्तव्य के अहाँ अपन वक्तव्य मानब? यदि हँ, त' प्रकाशक तहिया देल वक्तव्य आ आजुक वक्तव्यमे मैथिली कथाक सन्दर्भमे कोनो फर्क पड़तैक? की आइ लिखल जा रहल मैथिली कथामे अहाँके तहियासँ कोनो परिवर्त्तनक संकेत भेटैत अछि? यदि हँ त' कोना? कने स्पष्ट कहियौक?

(10) भाइ, गामक कथा खूब कहलियैक अछि अहाँ। गामक लोकक कथा सेहो। गाम पर बहुत रास टिप्पणी अछि। गाममे सम्बन्ध कोना टूटि रहल छैक। कियो सुख-दुखक संगी नहि छैक। मौज-मस्तीक पार्टनर छैक। 'अभिशप्त' मे प्रकाशक पिता कहैत छथि जे कोनो टूटल चीजक मरम्मति सम्भव नहि छैक। कारण सम्बन्ध टूटि गेल छै। भाइ, की प्रकाशक पिताक ई टिप्पणी 'कान्ह पर राखल जुआ आर भरिगर' भ' जेबाक कारणे छनि, की लोकमे आयल परिवर्त्तनक कारण? की अहाँ एहि बातसँ सहमत छी जे टूटल चीजक मरम्मति सम्भव नहि छैक?

(11) अहाँक विभिन्न कथा मे 'सम्बन्ध' बहुत प्रमुखता सँ उभरिक' अबैत अछि। पिता-पुत्रक सम्बन्ध, भाइ-भाइक सम्बन्ध, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, दोस, अपनासँ फराक समाज ओ समाजक लोकसँ सम्बन्धक विभिन्न रंग अहाँक कथा पढ़ि देखल जा सकैत अछि। जायज आ नजायज सम्बन्ध सेहो अहाँक लेखनक एजेण्डामे खूबे रहल अछि। किये? की सम्बन्ध अहाँके परेशान करैत अछि? सम्बन्धमे आस्था ओ अनास्था पर अहाँक की टिप्पणी होयत? बदलैत सम्बन्धक जड़िमे कोन तत्त्व अहाँके प्रमुख लगैत अछि?

(12) समाजमे बड़का ओ तथाकथित छोटका लोकक बीच सम्बन्ध मे आयल परिवर्त्तनक की प्रमुख कारण अहाँ मानैत छी? संगहिं सम्बन्ध सुधारबाक लेल की सभ जरूरी लगैत अछि अहाँके?

(13) भाइ, की अहाँक रचनाकार के लगैत अछि जे विभिन्न सम्बन्ध पर आर लिखबाक आवश्यकता छैक? कोनो विशेष योजना अछि? यदि हँ त' कियैक? यदि नहि त' किये नहि?

(14) भाइ, अहाँक कथा आ उपन्यासक विभिन्न नायकलोकनि जे साधारणतया सवर्ण वर्गसँ अबैत छथि कोनो दुख, संताप, क्षोभ, ओझराहटि मे कोनो मलहटोली, खतबे वा मुसहरटोली दिस चल जाइत छथि। किये? कोनो विशेष प्रयोजनसँ अथवा अनायासे? की टूटल सम्बन्धक मरम्मति लेल अथवा शक्ति ग्रहण करबाक लेल? की स्नेह-सुख पयबाक लेल? कोनो बुढ़िया वा मोदिआइन, झिल्ली-मुरहीवाली स्नेहिल स्त्रीक सानिध्य हुनका कियैक नीक लगैत छनि?

(15) प्रभास भाइ, अहाँक उपन्यास **युगपुरुष**, **राजापोखरि मे कतेक मछरी**, **नवारम्भ**, **हमरा लग रहब** आ अनेक कथामे नायकक बाल आ किशोर अवस्थाक वर्णन बहुत आवेशसँ कयल गेल अछि। गामक बोन-झाँखुर स्कूल, बुढ़िया सभ, छौडा-छौडी संगी, ढहल-ढनमनायल घर, स्नेह करैवाली दीदी, काकी कतेक रास चम्पा, नीरू, आ बिढ़नी। भाइ, एकटा बात पूछै छी, लगैत छै जेना सभ नायक-पात्रमे सँ बालक प्रभास टुकुर-टुकुर तकैत हो। अपन नेनपन कियैक एतेक पसिन्न अछि अहाँके? की नेनपनक किछु आरो बात रहि गेल अछि जेकरा कहबाक खगता अहाँ अनुभव करैत होइ?

(16) भाइ, अहाँक विभिन्न उपन्यास, कथामे किशोर आ बाल-अवस्था मे कतेक रास 'चम्पा' हेरा जाइत अछि। नायकक संग ओहि सखी सभसँ छूटि जाइत छैक। जकर टीस ओ कचोट नायक बहुत दिन तक भोगैत रहैये। ई टीस 'बिढ़नीक डंक' जकाँ 'नेपाली बोको' के दुख दैत रहैत छैक। अपन सखी सभसँ एतेक स्नेह केनिहार नायक के जखन कहियो पैघ भेला पर ओ सखीलोकनि ओहिना अनमधाने भेटि जाइत छथिन त' ओ पबैत अछि जे कियो सुखी नहि छथि। कोनो ने कोनो कारणे ओ स्त्री सभ वियाहक बाद कष्टे मे छथि। की नायकक संग वियाहसँ ओ नेनपनक सखी सुखी भ' जइतथि? जखन कि नायकलोकनि त' हुनका छोड़ैत रहलथिन अपन कैरियरक पाछू? कहियो हुनकर हाथ पकड़बाक हिम्मति नहि केलथिन।

(17) भाइ, अहाँक उपन्यास युगपुरुषमे नायक अंतमे कहैत अछि अपनासँ, 'मुदा हम? हम की करब? एहिना गाम आ पटनाक बीच डोलैत रहब पेण्डुलम जकाँ? कहियो स्थिर नहि भ' सकब। आनन्द, रमण, रतना सभ त' आगू बढ़ल जा रहल अछि। हमहीं ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छी?' ओ तकरबाद लाइन पर सँ पाथर उठा-उठाक' बताह जकाँ बिजलीक खम्भा पर मार' लगैत अछि। भाइ, की अहाँ अनुभव करैत छी जे युगपुरुष क 'हम' एकदम भीरु आ भावुक लोक अछि। खम्भा पर पाथर मारब ओकर खौंझक द्योतक थिक?

(18) भाइ, 'युगपुरुष' चरित्रहीन, बदमास, चालाक, धुरफन्दी रतना थिक की ओकर संगी-भावुक, भीरु, नीक लोक 'हम'? केकरा अहाँ युगपुरुष मानबैक? रतना यदि युगपुरुष थिक त' किये?

(19) भाइ, मैथिली कथा/उपन्यास संयुक्त परिवार व्यवस्था के विषय बनाक' बहुत कम लिखल गेल अछि। ओहि पर कम टिप्पणी आयल अछि। अहाँके आलोचकलोकनि ढहैत सामंती व्यवस्थाक कथाकार कहैत छथि। की संयुक्त परिवारक संरचना पर सामंती स्वभाव आ मानसिकता फड़ल-फुलायल? सामंती व्यवस्था ढहल त' संयुक्त परिवार व्यवस्थो ढहि गेल। की लगैयै अहाँके?

(20) भाइ, हमरा लगैयै अहाँक लेखक अपन विभिन्न कथा/उपन्यास मे ढहैत आ टूटैत संयुक्त परिवार व्यवस्थाक दर्द के अनुभव करैयै। ओकरा लगैत छै जे किछु छूटि रहल अछि। टूटि रहल अछि। संयुक्त परिवारक सभ सदस्य के डेबल जेबाक बेचैनी अनुभव करैयै। मुदा से आर्थिक असमर्थताक कारणे सम्भव नहि भ' पबैत छै। मुदा चाहैत अछि जे होइ। एहिसँ उत्पन्न तनाव अनेक कथामे दृष्टिगोचर होइत अछि। की हमर एहि बातसँ अहाँ सहमत छी?

(21) प्रभास भाइ, हमरा इहो लगैयै जे अहाँक विभिन्न नायक सभ जे संयुक्त परिवार व्यवस्था टूटबाक करणे क्षोभ आ विभ्रमक स्थितिमे

अछि, सन्धिस्थल पर ठाढ़ अंतिम लोक थिक। ओ संयुक्त परिवारक टूटल-भांगल अवशेष पर ठाढ़ अछि। जेकरा पुरना छोड़लो नहि जाइत छैक आ नवका नीको लगैत छैक। हमर एहि मन्तव्य पर अहाँ कोनो टिप्पणी कर' चाहब?

(22) भाइ, अहाँक एक बड़ नीक कथा अछि 'अरगनी'। जकर अंतिम पाँती अछि, 'ओहिना पड़ल-पड़ल खिड़कीसँ आङनमे ठाढ़ 'अरगनी' के देखैत छी जाहि पर आइ बाँसक नव टुकड़ा राखि देल गेल छैक आ ओहि पर बहुत रास कपड़ा सुखा रहल छैक' भाइ, पीढ़ी दर पीढ़ी चलैत कर्त्ता-पुरुषक उत्तराधिकार की अहाँके अकच्छ करैत अछि? मध्यवर्गीय परिवारक जेठ बेटा होयब केहेन, लगैत अछि अहाँके?

(23) प्रभाम भाइ, अहाँक 'लिफाफ बन्द: चिट्ठी खूजल' आ 'पिता' कथाक पिता आ 'सम्बादहीन' कथाक पापामे पीढ़ीक अन्तर मौजूद अछि। समयक अन्तर स्वाभाविक अछि। एकटा रचनाकारक रूपमे दूनू पीढ़ीक पितामे की अन्तर पबैत छी अहाँ? एकटा पिता आ व्यक्तिक रूप मे दुनू पिताके कोना फुटकाओल जा सकैयै?

(24) भाइ, अहाँक 'भयाक्रान्त' कथामे पत्नी पति के कहैत छथि, 'असलमे अहाँ सन लोक के वियाहे नहि करक चाही। सभटा झंझटसँ चैन।' की अहाँके लगैत अछि जे पतिक कर्तव्य बहुत जटिल भेल जा रहल छैक? अथवा लोक व्यक्तिपरक होइत-होइत केवल अपनामे सिमटि के जीब' चाहैयै? निखालिस 'अपन' सुख भोग' चाहैयै। पुरुषक एहि क्षरण पर कोनो टिप्पणी? जेना अहाँ ओही कथामे कहैत छी जे 'एहने क्षणमे पुरूषक मोनमे बुधियारी जन्म लैत छैक'।

(25) भाइ, लगैयै हमरो मोनमे बुधियारीक जन्म भ' रहल अछि। कनियें जोरसँ पुछैत छी, की अहाँके बंगाली स्त्री नीक लगैत अछि? नीक लगबाक की कारण सभ भ' सकैत अछि?

(26) बंगाली उपन्यास केहेन लगैत अछि अहाँके? की अहाँके लगैये जे शरदचन्द्र, विमल मित्र लोकनि बंगाली स्त्रीक महानता, प्रौढ़ता, देखेबाक लेल हुनकालोकनि के स्नेहमयी, ममतामयी, बनेबाक लेल कोनो इन्द्रजाल रचैत छथि? यथार्थसँ किछु ऊपरो भ' जाइत छथि। अहाँके ई बात एहि दुआरे पुछैत छी जे अहाँ अपन 'हमरा लग रहब?' उपन्यासमे शीला सन चरित्रक रचना कयल अछि। जे बहुत उदात्त अछि।

(27) एही प्रसंग आ सन्दर्भमे एकटा आर जिज्ञासा। मैथिली उपन्यासकार बंगला सन 'इन्द्रजाल' कियैक नहि रचि पबैत छथि? की स्त्रीक प्रति अपन दृष्टिकोणक कारणे? वर्णवादी आ पुरुष वर्चस्वक मानसिकता त' ने हावी छनि? की लगैये अहाँके?

(28) भाइ, बात के कने दोसर दिस ल' चली। अहाँक कथा आ उपन्यास सभमे दलित आ पिछड़ल लोक सभक इज्जति आ प्रतिष्ठाक प्रश्न मुख्य रूपसँ उभरिक' समक्ष अबैत अछि। बाबू, भैया लोकनि अपन कुल, धन आ सत्ताक निशामे लचार पिछड़ल लोक के 'लतखुर्दनि' क' कय राखि दैत छथिन। बेटी-पुतहु कें 'घोकि' दैत छथिन। की अखनो स्वतंत्रताक पचास वर्षक वादो अहाँ वेह स्थिति पबैत छी अथवा स्थितिमे कोनो परिवर्त्तन भेलैक अछि। यदि परिवर्तन भेलैक अछि त' की अहाँ ओहिसँ संतुष्ट छी?

(29) अहाँक कथा सभ मे लचार लोकक दैहिक शोषणक गप्प बहुत भेटैत अछि। कतेक कथा त' ओही पर आधारित अछि। सवर्ण समाजक मजबूर ओ गरीब लोक के अहाँ नपुंशक आ स्त्रीके पतिता पबैत छी। दलित आ पिछड़ल लोकक त' प्रश्ने नहि अछि। की अहाँके लगैत अछि जे ई पुरुषक नपुंसकता आ स्त्रीक पतितपना चाहे सवर्ण हो अथवा दलित अर्थक दुश्चक्रक कारणे अछि? अर्थे मूल समस्या छैक? यदि आर्थिक आधार सुदृढ़ भ' जाइक त' दैहिक शोषण आ पतितपना, नपुंसकता समाप्त भ' जेतैक?

(30) भाइ, अहाँक कथा 'मलाहक टोल' क फुलेसरी नहि बिसरल जाइवला चरित्र अछि। कदाचित् अहूँ ओहि पात्र संग संवेदनात्मक स्तर पर बेस गहींरसँ जुड़ल छी। तैं ओ चरित्र पुन: इन्द्रधनुषमे सेहो आयल अछि। भाइ, एकटा बात पुछै छी। फुलेसरी कहिया धरि चेथरी भेल नुआ के फाड़ि-फाड़िक' ओहि मलाहक टोलक ओहि ठुट्ठ गाछ तर नाचि नाचिक' गबैत रहतैक 'हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता'? की सभ दिन धरतीक दरारि फाटले रहतैक? की इन्नर देवता आबिक' कहियो धरतीक कोखि जुड़ौतैक नहि? धरतीक बेटामे ओ सामर्थ कहिया औतैक भाइ? एक रचनाकार रूपमे की लगैए अहाँके?

(31) प्रभास भाइ, एकटा जिज्ञासा! की रचना सभक माध्यमे अहाँ अपन आत्मकथा लीखि गेल छी अथवा फराकसँ आत्मकथा लिखबाक खगता अनुभव करैत छी? यदि करैत छी त' कियै?

(32) अन्तमे भाइ, कत्तौ अहाँ अपन घर बनेबाक सूरसार क' रहल छी की ने? कोनो शहर मे?

(सन्धान-3, जनवरी 1999)

卐

मैथिलीमे नारा पर साहित्य नहि लिखल गेल
मायानन्द मिश्र

आधुनिकता एकटा सकारात्मक आ धनात्मक मूल्य अछि
राजमोहन झा

मिथिलाक सामाजिक विकासक क्रम छिन्नमस्ता भ' चुकल अछि
धूमकेतु

मैथिलीमे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि
सुभाषचन्द्र यादव

कथाकार अपन लेखनमे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि
कुलानन्द मिश्र

मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकेँ पढ़िक' कयल जेबाक चाही
मोहन भारद्वाज